जो पुरुष विषय सुखादि के ध्यान में रहता है उसे उस विषय सुखादि की अभिलाषा उत्पन्न होती है और उस अभिलाषा से काम और काम से क्रोध उत्पन्न होता है ६२ क्रोध से युक्त युक्त में अविवेक ता और अविवेकता से स्मृति भ्रम अर्थात् शास्त्र औ

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते सङ्गात्संजायते
कामः कामात्क्रोधोऽभि जायते ६२ क्रोधाद्भवति संमोहः सं
मोहात्स्मृति विभ्रमः स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्र
णश्यति ६३ रागद्वेषविमुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन्
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति ६४ ॥ ० ॥

र गुरु वाक्य में भूला और स्मृतिभ्रंश से बुद्धि नष्ट होती है और नष्ट बुद्धि से आप नष्ट होजाता है ६३ जो पुरुष राग द्वेष रहित हो और अपने आधीन इंद्रियों से विषय को अनुभव करता है और मन जिस का अपने वश्य है वह पुरुष शांति को प्राप्त होता है

प्रसादभयेपीछेउस पुरुष के संपूर्ण दुःखोंकी हानि होती है क्यौं कि जिस्काचित्तप्रसन्न
भया शीघ्र उस्की बुद्धिप्रतिष्ठित होती है ६५ जिस पुरुष की इंद्रियाँ वश में नहीं उ
स्को शास्त्र और गुरु उपदेश की वुद्धिअर्थात् आत्म विषयक ज्ञाननहीं औरउस नि

प्रसादेसर्वदुःखानांहानिरस्योपजायते प्रसन्नचेतसोह्या
शुबुद्धिःपर्यवतिष्ठते ६५ नास्तिवुद्धिरयुक्तस्यनचा
युक्तस्यभावना नचाभावयतःशांन्तिरशान्तस्यकुतः
सुखम् ६६ इन्द्रियाणांहिचरतांयन्मनोऽनुविधीयते
तदस्यहरतिप्रज्ञांवायुर्नावमिवाम्भसि ६७ ॥ ७ ॥

स्वश इंद्रिय सेध्यानभी नहीं होसक्ता औरजोपुरुष ध्यान नहीं करसक्ताउसेचित्तकी
शांतिन हीं औरजिस्काचित्तशांत नहींउसेसुखअर्थात्मोक्षआनंदभीनहीं ६६ क्यौंकिवि
षयासक्तइंद्रियोंकेसाथजोमनभीजाताहैसोईपुरुषकीप्रज्ञाहरनकरलेता है जैसेजलमें
नौ वायुनावकोखैंचलेजातीहै ६७

हेमहाबाहू अर्जुनतिससेजिसपुरुषकी इंद्रियाँअपनेअपनेविषयों सेआकर्षित हो
तीहै उसपुरुषकोप्रज्ञाप्रतिष्ठित कहलाती है ६८ अज्ञानरूपअंधकारसेजिन की वु
द्धीआच्छादितहै उनकीरात्रीमें जितेंद्रिययोगीजागते हैं औरजिसविषयादिरूपनिशामें

तस्माद्यस्यमहावाहोनिगृहीतानिसर्वशः इन्द्रियाणीन्द्रि
यार्थेभ्यस्तस्यप्रज्ञाप्रतिष्ठिता ६८ यानिशासर्वभूतानां
तस्यांजागर्तिसंयमी यस्यांजाग्रतिभूतानिसानिशापश्य
तोमुनेः ६९ आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठंसमुद्रमापःप्रविश
न्तियद्वत् तद्वत्कामायंप्रविशन्तिसर्वेसशान्तिमाप्नोतिनकाम
कामी ७०

संपूर्णभूतजागतेहैंसोआत्मतत्वदर्शीमुनियोंकीरात्रीहै ६९ जैसेसबओरसेभरेहुएसमुद्रमें
जलआनकेप्रवेशकरतेहैंपरवहअपनीप्रतिष्ठासेनहीं चलायमानहोतावैसेहीजिसपुरु
षमेंसंपूर्नविषयप्रविष्टहोतेहैं औरमनमेंकुछविकारनहींहोतासोपुरुषमोक्षकोप्राप्तहोगा
औरविषयोंकीइच्छावालापुरुषनहीं ७०

टी· जो पुरुष संपूर्णकामौं कोत्यागकर निस्पृह होव्यवहार करताहै और ममता और अहं
१९ कार से रहित सो पुरुष शांतिकोप्राप्त होता है ७१ हेपार्थअर्जुनयह ब्रह्मज्ञानकी
निष्ठाहै इसनिष्ठाको जोमरणकालमें भी प्राप्तहोगा उसेसंसारीमोहन होगा औरजो

विहायकामान्यःसर्वान्पुमांश्चरतिनिःस्पृहः निर्ममो
निरहङ्कारःसशान्तिमधिगच्छति ७१ एषाब्राह्मीस्थितिः
पार्थनैनांप्राप्यविमुह्यति स्थित्वास्यामन्तकालेऽपिब्रह्म-
निर्वाणमृच्छति ७२ इतिश्रीमन्महाभारतेशतसाहस्र्यां सं
हितायांवैयासिक्यांभीष्मपर्वणिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु
ब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेसांख्ययोगोनाम
द्वितीयोऽध्यायः ॥ ॥

पुरुषपहिलेसे मरणसमय तक इसका अभ्यासकरैगा सो मोक्षपदको प्राप्त होगा य
हक्याकहनाहै ७२ सांख्ययोगनिरूपण दूसरा अध्याय समाप्त हुवा २॥ ७ ॥ १९

अर्जुनप्रश्नकरतेहैं किएजनार्दन श्रीकृष्ण यदि कर्म से बुद्धि श्रेष्ठ है तो हे केशव मु
झको कौं कर्ममें प्रवृत्त करते हो १ कर्म और बुद्धि मिश्रित वाक्य से मेरी बुद्धि कोमोह
ते हो इसलिये दोनोंमें से एक को निश्चय करके कहो कि जिस से मै कल्याण कोप्रा

अर्जुनउवाच ज्यायसीचेत्कर्मणस्तेमताबुद्धिर्जनार्दन तत्किं
कर्मणिघोरेमांनियोजयसिकेशव १ व्यामिश्रेणेववाक्येनबु-
द्धिंमोहयसीवमे तदेकंवदनिश्चित्ययेनश्रेयोऽहमाप्नुयाम् २
श्रीभगवानुवाच लोकेऽस्मिन्द्विविधानिष्ठापुराप्रोक्तामयानघ
ज्ञानयोगेनसांख्यानांकर्मयोगेनयोगिनाम् ३ ॥ ३ ॥

प्तहों २ भगवान् उत्तर देते हैं हे अनघ अर्थात् कल्मष रहित अर्जुन इन अधि
कारी जनोंके हेतु पूर्व अध्याय में मैने दो प्रकार की निष्ठा कही सांख्य वाले को
ज्ञान योग और योग मत वाले को कर्मयोग वर्नन किया ३ ॥ ४ ॥

विनाकर्म के आरंभ पुरुष ज्ञान को नही प्राप्त होता वैसेही विनाकर्मसन्यासग्रहण
कियेसे भी मोक्ष को नहीं प्राप्त होता ४ कोई पुरुष किसी अवस्था में विना कर्मकि
ये क्षण भर भी नहीं ठहर सक्ता क्यौं कि संपूर्ण जन प्रकृति जन्य स्वाभाविक राग

नकर्मणामनारम्भान्नैष्कर्म्म्यंपुरुषोश्नुते नचसंन्यसना-
द्देवसिद्धिंसमधिगच्छति ४ नहिकश्चित्क्षणमपिजातु-
तिष्ठत्यकर्म्मकृत् कार्य्यतेह्यवशःकर्म्मसर्व्वःप्रकृतिजैर्गु
णैः ५ कर्मेन्द्रियाणिसंयम्ययआस्तेमनसास्मरन् इन्द्रि
यार्थान्विमूढात्मामिथ्याचारःसउच्यते ६॥ ॥

दिगुणों से पर वश हो कर्म में प्रवृत्त किये जाते हैं ५ जो पुरुष कर्मेन्द्रियों
को रोक मन से विषयों का स्मरण करता रहता है सो मूढात्मा और कप
॥ टाचार कहलाता है ६ ॥

हे अर्जुन जो पुरुष ज्ञानेंद्रियोंको मन के साथ रोककर कर्मेन्द्रियोंसे कर्मफलकी आ
शा छोडकरकर्मयोगआरंभकरताहैसोज्ञानवान् है ७ तुमनित्यवर्णाश्रमकर्मकरोक्यौंकि
अकर्मसे कर्मश्रेष्ठहै यदितुमनकरोगेतो शरीरांतमें गतीभी सिद्धनहोगी ८ ईश्वरनिमित्त

यस्त्विन्द्रियाणिमनसानियम्यारभतेर्जुन कर्मेन्द्रियैःकर्मयोगमसक्तःसवि
शिष्यते ७ नियतंकुरुकर्मत्वंकर्मज्यायोह्यकर्मणः शरीरयात्रापिचतेनप्र
सिद्ध्येदकर्मणः ८ यज्ञार्थात्कर्मणोन्यत्रलोकोयंकर्मबन्धनः तदर्थंक-
र्मकौन्तेयमुक्तसङ्गःसमाचर ९ सहयज्ञाःप्रजाःसृष्ट्वापुरोवाचप्रजा
पतिः अनेनप्रसविष्यध्वमेषवोस्त्विष्टकामधुक् १० ॥ ॥

कर्मसे अतिरिक्तकर्मयहलोककेलिये बन्धन है इसलिये हेअर्जुनमुक्तसंगहोअर्था
त् विषयइच्छारहितहोकरकर्मकरो ९ स्वर्गआदिमेंप्रजापतिब्रह्मानेयज्ञकरनेवालेब्राह्म
णादिप्रजाकोउत्पन्नकरकेकहतेभयेकिइसयज्ञसेतुमलोगउत्पत्तिकरोयहीयज्ञतुमलोगोंकेसंपू
र्णइच्छाकादेनेवालाहै१०॥

विनाकर्म के आरंभ पुरुष ज्ञान को नहीं प्राप्त होता वैसेही विनाकर्मसन्यासग्रहण कियेसे भी मोक्ष को नहीं प्राप्त होता ४ कोई पुरुष किसी अवस्था में बिना कर्मकिये क्षण भर भी नहीं ठहर सक्ता क्यौं कि संपूर्ण जन प्रकृति जन्य स्वाभाविक राग

नकर्मणामनारम्भान्नैष्कर्म्यंपुरुषोश्नुते नचसंन्यसना-
देवसिद्धिंसमधिगच्छति ४ नहिकश्चित्क्षणमपिजातु-
तिष्ठत्यकर्म्मकृत् कार्य्यतेह्यवशःकर्म्मसर्वःप्रकृतिजैर्गु
णैः ५ कर्मेन्द्रियाणिसंयम्ययआस्तेमनसास्मरन् इन्द्रि
यार्थान्विमूढात्मामिथ्याचारःसउच्यते ६॥ ॥

द्रिगुणों से पर वश हो कर्म में प्रवृत्त किये जाते हैं ५ जो पुरुष कर्मेन्द्रियों को रोक मन से विषयों का स्मरण करता रहता है सो मूढात्मा और कपटाचार कहलाता है ६ ॥

हे अर्जुन जो पुरुष ज्ञानेंद्रियोंको मन के साथ रोककर कर्मेन्द्रियोंसे कर्मफलकी आशा छोडकरकर्मयोगआरंभ करताहैसोज्ञानवान् है ७ तुमनित्यवर्णाश्रमकर्मकरोक्यौंकि अकर्मसे कर्मश्रेष्ठहै यदितुमनकरोगेतो शरीरांतमैं गतीभी सिद्धनहोगी ८ ईश्वरनिमित्त

यस्त्विन्द्रियाणिमनसानियम्यारभतेर्जुन कर्मेन्द्रियैःकर्मयोगमसक्तःसवि
शिष्यते ७ नियतंकुरुकर्मत्वंकर्मज्यायोह्यकर्मणः शरीरयात्रापिचतेनप्र
सिद्ध्येदकर्मणः ८ यज्ञार्थात्कर्मणोन्यत्रलोकोयंकर्मबन्धनः तदर्थंक-
र्मकौन्तेयमुक्तसङ्गःसमाचर ९ सहयज्ञाःप्रजाःसृष्ट्वापुरोवाचप्रजा
पतिः अनेनप्रसविष्यध्वमेषवोस्त्विष्टकामधुक् १० ॥ ॥

कर्मसे अतिरिक्तकर्मयहलोकके लिये बन्धन है इसलिये हेअर्जुनमुक्त संगहो अर्थात् विषयइच्छारहितहोकरकर्मकरो ९ स्वर्गआदिमेप्रजापतिब्रह्मानेयज्ञकरनेवालेब्राह्मणादिप्रजाकोउत्पन्नकरकेकहतेभयेकिइसयज्ञसेतुमलोगउत्पत्तिकरोयहीयज्ञतुमलोगोंकेसंपूर्णइष्टकादेनेवालाहै१०॥

इसयज्ञकरके देवतौंकी हविर्भोगादिसे पूजाकरो और देवतालोग वृष्टिआदिसे तुमारीपा
लनाकरेंगे इस परस्पर भावनासे तुमलोग उत्तम मंगलको प्राप्तहोगे ११ यज्ञकरके पूजि
त देवतालोग तुम लोगोंको संपूर्न भोगादि देंगे उन देवतौं से जो अन्न मिला है उसे

देवान्भावयतानेनतेदेवाभावयन्तुवः परस्परम्भावय
न्तःश्रेयःपरमवाप्स्यथ ११ इष्टान्भोगान्हिवोदेवादास्य
न्तेयज्ञभाविताः तैर्दत्तानप्रदायैभ्योयोभुंक्तेस्तेनएवसः॥
१२ यज्ञशिष्टाशिनःसन्तोमुच्यन्तेसर्वकिल्विषैः भुंजतेते
त्वघंपापायेपचन्त्यात्मकारणात् १३ ॥ ७ ७ ॥

पंच यज्ञादिसे दूसरेको न देकर जो भोजन करेगा सो चोर है १२ वैश्वदेवादि यज्ञ से
बचाहुवा शेषजो लोग भोजन करते हैं वे संपूर्ण पाप से मुक्त होते हैं और जो दुराचा
र अपने पेट के हेतु पाक करते हैं सो पापही भोग करेंगे १३ ॥ ७ ॥ २१

अन्नसे संपूर्नभूत उत्पन्न होतेहैं और अन्न वृष्टि से और वृष्टि यज्ञ से होती है औरय
ज्ञ कर्म से होता है १४ कर्म वेद से उत्पन्न भया और वेद अक्षर रूप पर ब्रह्म से इस
लिये उस सर्वगत ब्रह्म को सर्वदा यज्ञ में प्रतिष्ठित जानो १५ हेपार्थ अर्जुन पूर्वोक्त

अन्नाद्भवन्तिभूतानिपर्जन्यादन्नसम्भवः यज्ञाद्भवतिपर्ज
न्योयज्ञःकर्मसमुद्भवः १४ कर्मब्रह्मोद्भवंविद्धिब्रह्माक्षर
समुद्भवम् तस्मात्सर्वगतंब्रह्मनित्यंयज्ञेप्रतिष्ठितम् १५
एवंप्रवर्त्तितंचक्रंनानुवर्त्तयतीहयः अघायुरिन्द्रियारामो
मोघम्पार्थसजीवति १६ ॥ ७ ॥ ७ ॥

चक्रइसप्रकारसे मैने प्रवृत्त कियाहै जो पुरुष इस लोक में उसके अनुसार नहीं च
लता सो पाप जीवी और विषयासक्त है और जीवन उस्का व्यर्थ है १६ ॥ ७ ॥

जो पुरुष आत्माही से प्रीत रखता आत्माही मे अर्थात् ब्रह्मानंद से तृप्त भी रहता औ
र आत्माहीमें भोगादि से अपेक्षारहितहोसंतुष्ट होताहै उस पुरुष के लिये कुछ कार्य अ
वशेषनहीं १७ ऐसे पुरुषको न कुछ पुण्य करने से अर्थहै नपापसे और उस्को संपूर्णभूतों

यस्त्वात्मरतिरेवस्यादात्मतृप्तश्चमानवः आत्मन्येवचस
न्तुष्टस्तस्यकार्यंनविद्यते १७ नैवतस्यकृतेनार्थोनाकृते
नेहकश्चन नचास्यसर्वभूतेषुकश्चिदर्थव्यपाश्रयः १८
तस्मादसक्तःसततंकार्यंकर्मसमाचर असक्तोह्याचरन्क
र्मपरमाप्नोतिपूरुषः १९ ॥ ७ ॥ ७ ॥

से किसी अर्थ का वियोग भी नहीं १८ इस लिये फल की इच्छा से रहित हो सर्वदा
तुम योग्य कर्म में प्रवृत्त हो क्यौं कि भागादि से इच्छा रहित होकर जो पुरुष
कर्म करता है सो मोक्ष को प्राप्त होता है १९ ॥ ७ ॥ ७ ॥ २२

जनकादिक ज्ञानीलोग कर्महो करनेसे मोक्षको प्राप्तभये और तुम अच्छी भाँति से देखक
र लोकसंग्रहके हेतु भी कर्म करनेके योग्य हो २० क्यौं कि उत्तम लोग जो जो कर्माच
रण करते हैं इतर लोग भी उसीका आचरण करते हैं और उत्तम लोग जिस्का प्रमाण

कर्मणैवहिसंसिद्धिमास्थिताजनकादयः लोकसंग्रहमे
वापिसंपश्यन्कर्त्तुमर्हसि २० यद्यदाचरतिश्रेष्ठस्तत्तदेवे
तरोजनः सयत्प्रमाणंकुरुतेलोकस्तदनुवर्त्तते २१ नमेपा
र्थास्तिकर्त्तव्यंत्रिषुलोकेषुकिञ्चन नानवाप्तमवाप्तव्यंव
र्त्तएवचकर्म्मणि २२

मानते हैं संसारी लोग भी उसी के अनुसार चलते हैं २१ हे पार्थ अर्जुन मुझको
तीनो लोक में किंचित् कुछ कर्त्तव्य नहीं है और न कोई अप्राप्त वस्तु कर्मसे
प्राप्त करने के योग्य है तिस पर भी मै कर्म मे प्रवृत्त हो हौं २२ ॥ ७ ॥

यदि हम कदाचित् आलस्य रहित होकर कर्म में प्रवृत्त नहीं तो हे पार्थ अर्जुन सं
पूर्ने मनुष्य हमारे ही मार्ग के अनुसार हो कर्म त्याग करेंगे २३ यह लोग कर्म
लोप होने से नष्ट हो जायँगे यदि हम कर्म न करैं और वर्न संकर के कर्त्ता हमी

यदिह्यहंनवर्त्तेयंजातुकर्म्मण्यतन्द्रितः ममवर्त्मानुव
र्त्तन्तेमनुष्याःपार्थसर्वशः २३ उत्सीदेयुरिमेलोकान
कुर्य्याङ्कर्मचेदहम् सङ्करस्यचकर्त्तास्यामुपहन्यामि
माःप्रजाः २४ सक्ताःकर्मण्यविद्वांसोयथाकुर्वन्तिभा
रत कुर्याद्विद्वांस्तथासक्तश्चिकीर्षुर्लोकसंग्रहम् २५

हों तो इससे इन प्रजावों को नष्ट करैंगे २४ हे पार्थ अर्जुन जैसे मूर्ख लोग कर्म
करने की इच्छा से प्रवृत्त होकर कर्म करते हैं वैसेही पंडित लोग उसे अप्रस
क्त हो कर लोक संग्रह के हेतु कर्म करैं २५ ॥ ७ ॥ ७ ॥ २३

कर्मासक्त मूर्खों की बुद्धि का भेद न जनाना चाहिये विवेकी लोगों को उचित है कि आ
प कर्म करके उन से संपूर्न कर्म करावे २६ प्रकृति के गुण इंद्रियादि करके सम्पूर्ण
क्रियमाण कर्मों को मूढलोग जिनकी बुद्धि अहंकार से मोहित है वे जानते हैं कि ह

नबुद्धिभेदंजनयेदज्ञानांकर्मसङ्गिनाम् जोषयेत्सर्वकर्मा
णिविद्वान्युक्तःसमाचरन् २६ प्रकृतेःक्रियमाणानिगुः
णैःकर्माणिसर्वशः अहङ्कारविमूढात्माकर्त्ताहमितिम
न्यते २७ तत्त्ववित्तुमहाबाहोगुणकर्मविभागयोः गुणा
गुणेषुवर्त्तन्तइतिमत्वानसज्जते २८ ॥ ७ ॥

म करने वाले हैं २७ हे महाबाहू अर्जुन विवेकी पुरुष अपने को इंद्रियादि और कर्मों से
अलग जान कर अपने में अहंकार नहीं आरोप करता क्यों कि वह जानता है कि इं
द्रियाँ अपने अपने विषय में आप ही सर्वदा प्रवृत्त हैं २८ ॥ ७ ॥

प्रकृति के सत्वादि तीनों गुणों से मूर्ख लोग मोहित हो इंद्रिय और देहेंद्रिय के व्या
पार में अभिमान में प्रवृत्त हैं इस लिये विवेकियों को उचित है कि बुद्धि भेद में
उन्हे न प्रवृत्त करैं २९ संपूर्न कर्मों का मुझी में ईश्वराधीन बुद्धि से समर्पण क

प्रकृतेर्गुणसंमूढाः सज्जन्तेगुणकर्मसु तानकृत्स्नविदो
मन्दान्कृत्स्नविन्नविचालयेत् २९ मयिसर्वाणिकर्माणि
सन्न्यस्याध्यात्मचेतसा निराशीर्निर्ममोभूत्वायुद्धस्वविः
गतज्वरः ३० येमेमतमिदंनित्यमनुतिष्ठन्तिमानवाः श्र
द्धावन्तोनसूयन्तोमुच्यन्तेतेपिकर्मभिः ३१ ॥ ७ ॥

र के कर्म फल से आशा और समता रहित हो शोक को छोड युद्ध करो ३० जो
मनुष्य मेरे इस मत के अनुसार श्रद्धा पूर्वक और निंदा रहित होकर चलते हैं
वे लोग ज्ञानी की नाँई कर्म बन्ध से मुक्त होते हैं ३१ ॥ ७ ॥ २४

जोलोग इसमेरेमतकी निंदाकरते हैं और इसकेअनुसारनहीं चलते उन्हे जानोकिवेसं
पूर्न ज्ञानसे रहित और मृतककेतुल्य और विवेक रहित हैं ३२ ज्ञानी लोग भी अपने
पुरातन कर्माधीन स्वभावहीके अनुसार चलते हैं और सबप्राणी भी उसीस्वभाव के

येत्वेतदभ्यसूयन्तोनानुतिष्ठन्तिमेमतम् सर्वज्ञानविमूढां
स्तान्विद्धिनष्टानचेतसः ३२ सदृशंचेष्टतेस्वस्याःप्रकृते
र्ज्ञानवानपि प्रकृतिंयान्तिभूतानिनिग्रहःकिंकरिष्यति
३३ इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थेरागद्वेषौव्यवस्थितौ तयोर्न
वशमागच्छेत्तौह्यस्यपरिपन्थिनौ ३४ ॥ ७ ॥

अनुसार चले जाते हैं क्यौं कि पकृति सब से बलवती है वहाँ इंद्रिय रोकनेसे क्या
होगा ३३ प्रति इंद्रियों में उनके उनके विषय अनुकूलता से राग और प्रतिकूल=
तासे द्वेष दोनो अवश्य रहते हैं इसलिये इन दोनों के वश न होना चाहिये क्यौंकि ये निश्चित पु

अपनाधर्म यद्यपिन्यून भी होतो परधर्मसेश्शुभहैकिजिस्का अच्छीभाँतिसेआचरनकियागयाहै क्योंकिअपनेधर्ममें मरनाभी भलाहै भयानकपरधर्मसे ३५ अर्जुनप्रश्नकरतेहैं हेवार्ष्णेय यदुपति जो पुरुष कामादिसे अनिच्छित है उसे किसने नि

श्रेयान्स्वधर्मोविगुणःपरधर्मात्स्वनुष्ठितात् स्वधर्मेनिधनंश्रेयः परधर्मोभयावहः ३५ अर्जुनउवाच अथकेनप्रयुक्तोऽयंपापंचरतिपूरुषः अनिच्छन्नपिवार्ष्णेयबलादिवनियोजितः ३६ श्री भगवानुवाच कामएषःक्रोधएषरजोगुणसमुद्भवः महाशनोमहापाप्माविद्ध्येनमिहवैरिणम् ३७ ॥ ३ ॥

युक्तपुरुषकी नाईं पापमें प्रवृत्त कियाहै ३६ श्रीकृष्णचंद्र उत्तर देतेहैं जिस्को तुम पूछते हौ सो काम और क्रोध हैं और राजस गुण करके उत्पन्न होते महाभक्षक औरपापी हैं इस मोक्ष मार्ग में इन्हे शत्रु कर जानो ३७ ॥ ३ ॥

जैसे धुवाँसे आग और मल से दर्पण और उल्व अर्थात् गर्भ वेष्टन चर्म से गर्भ घेरा है वैसेही काम और क्रोध से संपूर्न जगत घेराहुवा है ३८ हेअर्जुन इस नित्य बैरी काम ने ज्ञानियों का ज्ञानघेररखाहैऔरयहसर्वदाआगकीनाईंअतृप्तहै ३९ संपूर्नइंद्रियाँ

धूमेनाव्रियतेवह्निर्यथादर्शोमलेनच यथोल्वेनावृतोगर्भस्तथातेनेदमावृतम् ३८ आवृतंज्ञानमेतेनज्ञानिनोनित्यवैरिणा कामरूपेणकौन्तेयदुःपूरेणानलेनच ३९ इन्द्रियाणिमनोबुद्धिरस्याऽधिष्ठानमुच्यते एतैर्विमोहयत्येषज्ञानमावृत्यदेहिनम् ४० तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्यभरतर्षभ पाप्मानंप्रजहिह्येनंज्ञानविज्ञाननाशनम् ४१॥ ॥

मनबुद्धिआदिइसकामके स्थानकहलातेहैं वहइनइंद्रियोंसेज्ञान सेघेरकरदेहीअर्थात्आत्माकोमोहलेताहै ४० हेअर्जुन इसलियेतुममोहप्राप्तहोनेसेपहलेसंपूर्नइंद्रियोंको रोककरइसपापीकामकोजीतोक्योंकियहशास्त्रऔरगुरूपदेशज्ञानऔरविज्ञानअर्थात् तत्वज्ञानइन्होंकानाशकहै ४१॥

गी॰टी॰ कहते हैं कि दोनों इंद्रियां देहादि से श्रेष्ठ और इंद्रियों से श्रेष्ठ मन और मन से श्रे
२६ ष्ठ निश्चयात्मक बुद्धि है और जो बुद्धि से भी पर है वही परमेश्वर है ४२ हे मह
बाहू अर्जुन बुद्धि का साक्षी ईश्वर को जानकर संशयात्मक मन को निश्चया

इन्द्रियाणिपराण्याहुरिन्द्रियेभ्यःपरंमनः मनसस्तुपराबु
द्धिर्योबुद्धेःपरतस्तुसः ४२ एवंबुद्धेःपरंबुध्वासंस्तभ्यात्मान
मात्मना जहिशत्रुंमहाबाहोकामरूपंदुरासदम् ४३ इ
तिश्रीमन्महाभारतेशतसाहस्र्यां संहितायांवैयासि
क्यांभीष्मपर्वणिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्या
यांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेकर्मयोगोनामतृतीयोऽ अ॰ ३ ॥

त्मक बुद्धि से रोक कर अजीत काम रूपी शत्रु को पराजय करो ४३ कर्म योग
प्रति पादक तीसरा अध्याय समाप्त हुवा ३ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॥ २६

भगवान् कहते हैं कि यह अविनाशी योग पहिले हमने सूर्ज से कहा और सूर्ज ने मनू से फिर
मनू ने अपने पुत्र इक्ष्वाकु राजा से निरूपण किया १ हे परंतप अर्जुन इसी प्रकार से यह पर
परा योग चला आता है राज ऋषी और राजा लोग जानते रहे सो योग बहुत काल से लुप्त प्रा

श्रीभगवानुवाच इमंविवस्वतेयोगंप्रोक्तवानहमव्ययम् विवस्वान्मनवेप्राह
मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत् १ एवंपरम्पराप्राप्तमिमंराजर्षयोविदुः सकालेनेहमह
तायोगोनष्टःपरंतप २ सएवायंमयातेऽद्ययोगःप्रोक्तःपुरातनः भक्तोसिमे
सखाचेतिरहस्यंह्येतदुत्तमम् ३ अर्जुनउवाच अपरंभवतोजन्मपरंजन्मवि
वस्वतः कथमेतद्विजानीयांत्वमादौप्रोक्तवानिति ४ ॥ ॐ ॥

य हो रहा है २ जो हमने तुमसे कहा सो वही पुरातन योग है अति गोपनीय और उत्तम है तुम मेरे
भक्त और सखा भी हो इसलिये तुमसे निरूपण किया ३ अर्जुन प्रश्न करते हैं कि तुम्हारा जन्म
पीछे है और सूर्य का जन्म तुमसे पहिले तो तुमने पहिले सूर्य से यह योग क्यों कर कहा यह मु ढेलावो ४ ॥

भगवान् उत्तरदेतेहैं कि हे अर्जुन मेरेऔर तुह्मारे बहुतसे जन्म व्यतीतभयेहैं सोमैंजान
ताहूं और तुम नहींजानते ५ हम उत्पत्तिरहित अविनाशी और संपूर्न भूतोंके ईश्वरहैंतथा
पि हम अपनी शुद्धसात्विकप्रकृतिको स्वीकारकरके अपनीमायासे उत्पन्नहोतेहैं ६ हे अ

श्रीभगवानुवाच बहूनिमेव्यतीतानिजन्मानितवचार्जुन तान्यहंवे
दसर्वाणिनत्वंवेत्थपरंतप ५ अजोऽपिसन्नव्ययात्माभूतानामीश्वरोऽ
पिसन् प्रकृतिंस्वामधिष्ठायसंभवाम्यात्ममायया ६ यदायदाहिधर्म
स्यग्लानिर्भवतिभारत अभ्युत्थानमधर्मस्यतदात्मानंसृजाम्यहम्
७ परित्राणायसाधूनांविनाशायचदुष्कृताम् धर्मसंस्थापनार्था
यसम्भवामियुगेयुगे ८

र्जुन जबजब धर्मकीहानि और अधर्मकी वृद्धि होती है तबतब मैं औतार लेताहूं ७ संपूर्ण
साधुवोंके रक्षणके हेतु और दुष्टोंके नाश करने और धर्मस्थापन करनेकेलिये सबयुगोंमें मैं ज

हे अर्जुन इसप्रकारसे जो मेरा उत्कृष्ट जन्म और कर्म यथार्थ करके जानता है सो देहत्या
ग कर जन्म नहीं पाता और मुझमे प्राप्त होताहै ९ बहुतसे लोग राग भय और क्रोध
से रहित होकर मुझमे चित्त लगाकर मेरे शरण आयकर और ज्ञानरूप तपकरके प

जन्मकर्मचमेदिव्यमेवंयोवेत्तितत्त्वतः त्यक्त्वादेहंपुनर्जे
न्मनैतिमामेतिसोऽर्जुन ९ वीतरागभयक्रोधामन्मयामा
मुपाश्रिताः बहवोज्ञानतपसापूतामद्भावमागताः १०
येयथामांप्रपद्यन्तेतांस्तथैवभजाम्यहम् ममवर्त्माऽनु
वर्त्तन्तेमनुष्याःपार्थसर्वशः ११ ॥ ॥

वित्र होमेरेही भावकी प्राप्तभयेहैं १० हे अर्जुन जोलोग जैसे अर्थात् सकाम या नि
ष्काम मेरे शरणागत होतेहैं उनको उसीके अनुसार फल देकर उनकी रक्षा कर्ता
हूं क्योंकि सब मनुष्य मेरे ही मार्गके अनुसार चलते हैं ११ ॥ ॥

जो इस लोक मे फलकी इच्छा से देवतों की आराधना करते हैं उन्हे कर्मफलकी
सिद्धि मर्त्य लोकमें शीघ्रहोती है १२ चारो वर्न की सृष्टि उनके सात्विकादिगुणऔ
र कर्म भेद से मैनेकिई है इस हेतु से सृष्टिका मै कर्ता हूँ और मै अविनाशीफ

कांक्षन्तःकर्मणांसिद्धिंयजन्तइहदेवताः क्षिप्रंहिमानुषे
लोकेसिद्धिर्भवतिकर्मजा १२ चातुर्वर्ण्यंमयासृष्टंगुणक
र्मविभागशः तस्यकर्त्तारमपिमांविद्ध्यकर्त्तारमव्ययम् ॥
१३ नमांकर्माणिलिम्पन्तिनमेकर्मफलेस्पृहा इतिमांः
योऽभिजानातिकर्मभिर्नसबध्यते १४ ॥ ७ ॥

ल के अपेक्षा से रहित हूँ इससे मुझे अकर्त्ता भी जानो १३ संपूर्न कर्ममुझको
आसक्त नहीं कर सक्के क्यौं कि मुझे कर्म फल की इच्छा नहीं ऐसा जो पुरु
ष मुझको जानता है सो कर्मौं करके बद्ध नहीं होता १४ ॥ ७ ॥

पुरातनजनकादिमुमुक्षु अर्थात् मोक्षकी इच्छावालेपुरुषोंनें ऐसा जानकर सत्वशुद्धीके हे
तु कर्म किया है और युगांतर में भी प्राचीन लोगों ने कर्म किये हैं इस लिये तुम भीक
र्म में प्रवृत्त हो १५ कौनकर्म करने के योग्य है और कौन नहीं इसमें विवेकी लोगः

एवंज्ञात्वाकृतंकर्मपूर्वैरपिमुमुक्षुभिः कुरुकर्मैवतस्मात्त्वं
पूर्वैःपूर्वतरंकृतम् १५ किंकर्मकिमकर्मेतिकवयोप्यत्रमो
हिताः तत्तेकर्मप्रवक्ष्यामियज्ज्ञात्वामोक्ष्यसेऽशुभात् १६ क
र्मणोह्यपिबोद्धव्यंबोद्धव्यंचविकर्मणः अकर्मणश्चबोद्ध
व्यंगहनाकर्मणोगतिः १७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

भी मोहको प्राप्त होते हैं सो मै तुम से कहता हूँ जिस्के जाननेसे अशुभ अर्थात् संसा
र से मुक्त होजावेंगे १६ शास्त्र विहित कर्म और निषिद्ध कर्म और त्याग योग्य कर्मों
को भी जान्ना चाहिये क्यौं कि कर्म गती कष्ट से भी जानने के योग्य नहीं १७॥ ॥

जोपुरुषविहितकर्मोंमें से जानता है कि यह कर्म करनेके योग्य नहीं और अन्यकर्मोंमेंसे जानता है कि यह करनेके योग्य है क्यौं कि उसे लौकिक रागादि फलकी अपेक्षा नहीं सो पुरुष संपूर्ने कर्मकरनेवाले मनुष्यों में से पंडित है इस लिये कि सब कर्म करता है

कर्मण्यकर्मयःपश्येदकर्मणिचकर्मयः सबुद्धिमान्मनुष्ये
षुसयुक्तःकृत्स्नकर्मकृत् १८ यस्यसर्वेसमारम्भाः कामसं
कल्पवर्ज्जिताः ज्ञानाग्निदग्धकर्माणंतमाहुःपण्डितंबुधाः
१९ त्यक्त्वाकर्मफलासंगंनित्यतृप्तोनिराश्रयः कर्मण्यभि
प्रवृत्तोऽपिनैवकिंचित्करोतिसः २० ॥ छ ॥

१८ जिस पुरुष के संपूर्न कर्म काम और संकल्प से रहित हैं और जिसने ज्ञानरूपी अग्नि में सब कर्मों को दग्धकर दिये उसे विवेकी लोग पंडित कहते हैं १९ जो पुरुष कर्मफल की इच्छाछोडनित्यानंदसेतृप्त और निराश्रय रहता है यद्यपि कर्मों में प्रवृत्त होतथापि कुछ

जोपुरुष कामनादिसे रहित हो चित्त और शरीर को स्वाधीन कर सर्व परिग्रह को त्याग करता है सो केवल शरीर रक्षण हेतु कर्म करनेसे क्लेशको नहीं प्राप्त होता २१ जो पुरुष विना जाँचे हुये लोभसे संतुष्ट रहता और शीतोष्मादि दुःखौंको समान जानता और संपूर्ने भू

निराशीर्यतचित्तात्मात्यक्तसर्वपरिग्रहः शारीरंकेवलंकर्म
कुर्वन्नाप्नोतिकिल्बिषम् २१ यदृच्छालाभसन्तुष्टोद्वन्द्वाती
तोविमत्सरः समःसिद्धावसिद्धौचकृत्वाऽपिननिबध्यते ॥
२२ गतसङ्गस्यमुक्तस्यज्ञानावस्थितचेतसः यज्ञायाचरतः
कर्मसमग्रंप्रविलीयते २३ ॥ छ ॥ छ ॥

तों से निर्वैर रहता और हर्षविषादको समदेखता है सो कर्मसे बंधको नहीं प्राप्त होता २२ जो पुरुष संग अर्थात रागादि से रहित और मुक्त है और ज्ञानमें उसका चित्त स्थिर रहता और ईश्वराराधनकेहेतु कर्मकरता है सो वासनासहित संपूर्न कर्मोंसे मुक्त होजाता

जोपुरुषहोमकेपात्रश्रौरद्रव्यघृतादिश्रग्निहवनकर्त्ताश्रौरक्रियासंपूर्नवस्तुकोब्रह्महीः
जानताहै उस्कोब्रह्मसेश्रतिरिक्तश्रन्यवस्तु प्राप्तकरनेके योग्यनहीं २४ कर्मयोग करने
वालेदेवतादिक के हेतु हवनादि उपासना करतेहैं श्रौर ज्ञान योग करने वाले ज्ञान

ब्रह्मार्पणंब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौब्रह्मणाहुतम् ब्रह्मैवतेनगन्तव्यं
ब्रह्मकर्मसमाधिना २४ दैवमेवापरेयज्ञंयोगिनःपर्युपासते
ब्रह्माग्नावपरेयज्ञंयज्ञेनैवोपजुह्वति २५ श्रोत्रादीनिन्द्रिया
ण्यन्येसंयमाग्निषुजुह्वति शब्दादीन्विषयानन्यइन्द्रियाः
ग्निषुजुह्वति २६ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

की श्रग्नि में हवनादि कर्म ब्रह्मार्पणबुद्धिसे लय करते हैं २५ श्रौरनैष्टिक ब्रह्मचारी
पुरुष श्रोत्रादि ज्ञानेंद्रियों को संयम रूपी श्रग्नि में लय करते हैं श्रौर ग्रहस्ताश्र
मी शब्दादि विषयों को इंद्रियादि श्रग्नि में लय करते हैं २६ ॥ ७ ॥ ३०

ध्यानावस्थितलोगसंपूर्नइंद्रियोंकेव्यवहारकोश्रपनेश्रपनेग्राहकइंद्रियोंमेंश्रर्पणकर
केमनसंयमश्रर्थात्मनकीएकाग्रतारूपीश्रग्निमेंजोज्ञानसेप्रकाशितहैउसमेंलयकर्तेहैं
२७ कोईतोद्रव्यसेयज्ञकर्ताहैकोईतपसेकोईयोगाभ्याससेयज्ञश्रर्थात्श्राराधन क

सर्वाणीन्द्रियकर्माणिप्राणकर्माणिचापरे श्रात्मसंयमयोः
गाग्नौजुह्वतिज्ञानदीपिते २७ द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञायोगय
ज्ञास्तथाऽपरे स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्चयतयःशंसितव्रताः२८
श्रपानेजुह्वतिप्राणंप्राणे पानन्तथापरे प्राणापानगतीरुः
ध्वाप्राणायामपरायणाः २९ ॥ ७ ॥ ७ ॥

र्ताहैकोईवेदाध्ययनश्रौरमननरूपीयज्ञसेश्रौरकोईज्ञानयज्ञसेपरंतुयतीलोगश्रप
नेस्वभावसेनिश्चितहोउपासनाकरतेहैं २८ कोईश्रपानमेंप्राणकोपूरकमार्गसेलय
कर्ताहैकोईप्राणमेंश्रपानकोरेचकमार्गसेयोंहीकोईप्राणश्रौरश्रपानकीगतिकुंभसे

रोकके प्राणायामशीलहोतेहैं २९

कोईआहारघटानेसेइंद्रियोंकेव्यापारकोउनकेउनकेइंद्रियोंमेंहोमकर्ताहैंऐसेयेसब
यज्ञजाननेवालेयज्ञकरक्लेशरहितहोतेहैं ३० हेअर्जुनयज्ञसमासकरकेअवशिष्टका
लमेंजोअमृतसंज्ञितअन्नकोभक्षणकरताहैसोसनातनब्रह्मकोप्राप्तहोताहैऔरजो

अपरेनियताहाराःप्राणान्प्राणेषुजुह्वति सर्वेप्येतेयज्ञवि-
दोयज्ञक्षपितकल्मषाः ३० यज्ञशिष्टाऽमृतभुजोयान्तिब्र
ह्मसनातनम् नायंलोकोऽस्त्ययज्ञस्यकुतोऽन्यःकुरुसत्त
म ३१ एवंबहुविधायज्ञावितताब्रह्मणोमुखे कर्मजान्वि
द्धितान्सर्वानेवंज्ञात्वाविमोक्ष्यसे ३२ ॥ ७ ॥

यज्ञनहींकरताउसेमर्त्यलोकहीनहींप्राप्तहोतापरलोककबमिलेगा ३१ वेदमेंविस्ता
रसेअनेकप्रकारकेयज्ञइसप्रकारसेकहेहैंवेसंपूर्नयज्ञमनवाचाऔरकर्मसेजनितजा
नोक्यौंकिपरमेश्वरकेवलज्ञानमात्रगोचरहैऔरयज्ञचित्तशुद्धिद्वाराज्ञानउपयोगीय

हेअर्जुनद्रव्यमययज्ञ से ज्ञान यज्ञ श्रेष्ठ है क्यौं कि सम्पूर्न कर्म फल सहित ज्ञान ही में
समाप्त होते हैं ३३ दंडवत प्रश्न और सेवा करके उस ज्ञान को प्राप्त होतो वे ज्ञानी लो
ग तुम को उपदेश करेंगे क्यौंकि वे सर्वदा तत्वही के विचार में रहते हैं ३४ हे पांडव

श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञःपरंतप सर्वङ्कर्माखिलम्पार्थज्ञानेपरिसमा-
प्यते ३३ तद्विद्धिप्रणिपातेनपरिप्रश्नेनसेवया उपदेक्ष्यन्तितेज्ञानंज्ञानि
नस्तत्वदर्शिनः ३४ यज्ज्ञात्वानपुनर्मोहमेवंयास्यसिपाण्डव येनभूतान्य
शेषेणद्रक्ष्यस्यात्मन्यथोमयि ३५ अपिचेदसिपापेभ्यःसर्वेभ्यःपापकृत्त
मः सर्वंज्ञानप्लवेनैववृजिनंसन्तरिष्यसि ३६ ॥ ॥ ७ ॥ ७ ॥

अर्जुन जिस ज्ञान कौं यौं जान कर बंध निमित्त मोह को फिर न प्राप्त होगे और इ
स ज्ञान से संपूर्न भूतौं को मुझ परमात्मा में देखोगे ३५ यदितुम सब पापोंसे अधिक
पाप करनेवाले हो तोभी संपूर्न पापरूपी समुद्र को ज्ञानरूपीनौकासेतरजावोगे ३६

हे अर्जुन जैसी जलती हुई अग्नि लकडियों को भस्म करडालती है वैसे ही ज्ञान रू
पी अग्नि सम्पूर्न बंध हेतु कर्मों को भस्म करदेतीहै ३७ ज्ञानके सदृशदूसरीवस्तु इ
स लोकमें तप योगादि नही क्योंकि किसीकाल में योगाभ्यास से आत्मामें अनायास क

यथैधांसिसमिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन ज्ञानाग्निःस
र्वकर्माणिभस्मसात्कुरुतेतथा ३७ नहिज्ञानेनसदृशंप
वित्रमिहविद्यते तत्स्वयंयोगसंसिद्धःकालेनात्मनिविंद
ति ३८ श्रद्धावान्लभतेज्ञानंतत्परःसंयतेन्द्रियः ज्ञानंल
ब्ध्वापरांशान्तिमचिरेणाधिगच्छति ३९ ॥ ० ॥

र के आपही प्राप्त होंगे ३८ गुरू उपदिष्ट वाक्य में श्रद्धावान् विचार शील और इंद्रिय व
शपुरुष ज्ञान कोप्राप्त होताहै और ज्ञान प्राप्त होने से परममोक्षको प्राप्त होताहै ३९॥ ३२

जोपुरुषगुरुवाक्यको नही जानता औरअश्रद्धावान् औरसंशयात्मक बुद्धिवालाहैसोना
शकोप्राप्तहोताहै औरउसेइहलोकऔरपरलोकमेंसुखभीनहीमिलता ४० हेधनंजय
अर्जुन जोपुरुषयोगाभ्याससे संपूर्नकर्मोंकोईश्वरहीमें अर्पण करताहै औरज्ञानसेजि

अज्ञश्चाश्रद्दधानश्चसंशयात्माविनश्यति नायंलोकोऽस्तिन
परोनसुखंसंशयात्मनः ४० योगसंन्यस्तकर्माणंज्ञानसंछिन्न
संशयम् आत्मवन्तंनकर्माणिनिबध्नन्तिधनञ्जय ४१ त
स्मादज्ञानसम्भूतंहृत्स्थंज्ञानासिनात्मनः छित्त्वैनंसंशयंयो
गमातिष्ठोत्तिष्ठभारत ४२ ॥ ० ॥ ० ॥

सनेसंशयकोनाशकियासो विवेकीपुरुष अपनेकर्मफलोंसे बन्धनमेंनहींपडसक्ता॥
४१ हेअर्जुनइसलियेअपने आत्माके संशयकोजोअज्ञानसे उत्पन्नभया और हृदय में
स्थितहैउसे ज्ञानरूपी तरवारसे छेदनकर योगको प्राप्तहो युद्धकेलिये उठो ४२॥॥

कर्मसंन्यासयोगचौथाऽध्यायसमाप्तहुवा ४॥ ॥अर्जुनप्रश्नकरतेहैँहेकृष्ण कर्मसंन्यासऔर कर्मयोग अर्थात् कर्मकेत्यागऔर ग्रहण दोनोकोप्रशंसाकरतेहो सो इनदोनोमैंसेजो मंगल और योग्यहो वो मुझसेकहो १ भगवान्उत्तरदेतेहैंकर्मसंन्यास औरकर्मयोगदो

इतिश्रीमन्महाभारतेशतसाहस्रसंहितायांवैयासिक्यांभीष्मपर्वणिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेकर्मसंन्यासयोगोनामचतुर्थोऽध्यायः ४॥ ॥अर्जुनउ॰ सन्न्यासंकर्मणांकृष्णपुनर्योगञ्चशंससि यच्छ्रेयएतयोरेकंतन्मेब्रूहिसुनिश्चितम् १ श्रीभगवानुवाच सन्न्यासःकर्मयोगश्चनिःश्रेयसकरावुभौ तयोस्तुकर्मसन्न्यासात्कर्मयोगोविशिष्यते २ ज्ञेयस्सुनित्यसंन्यासीयोनद्वे

नोमोक्षदेनेकेयोग्यहैं परंतुइनदोनोंमैंकर्मसंन्याससेकर्मयोगश्रेष्ठहै २ हेमहाबाहूअर्जुन जोपुरुषरागऔर द्वेषदोनोंकोसमानजानकररहताहैउसेनित्यसंन्यासीजानोक्योंकिनिर्द्वंद्वहो

कर्मसंन्यासऔरकर्मयोगमैं मूर्खलोग भेद कहतेहैं और पंडितनहीं परइनदोनोमें से एक का भी जो अनुष्ठान करेगा सो दोनों का फल अच्छी भाँति से पावेगा ४ कैवल्य रूप स्थान जो कर्म संन्यासीलोग पाते हैं वही कर्म योग वाले भी पाते हैं और कर्मसं

सांख्ययोगौपृथग्बालाःप्रवदन्तिनपण्डिताः एकमप्यास्थितःसम्यगुभयोर्विन्दतेफलम् ४ यत्सांख्यैःप्राप्यतेस्थानंतद्योगैरपिगम्यते एकंसांख्यञ्चयोगञ्चयःपश्यतिसपश्यति ५ सन्न्यासस्तुमहाबाहोदुःखमाप्तुमयोगतः योगयुक्तोमुनिर्ब्रह्मनचिरेणाधिगच्छति ६

न्यास और कर्मयोग को जो येक देखता है उसीका देखना ठीक है ५ हे अर्जुनविना कर्म योग के संन्यास दुख प्राप्ति के हेतु है जो योगयुक्त मौनी होकर संन्यासआश्रयण करेगा सो अल्प काल में ब्रह्म को प्राप्त होगा ६ ॥ ७ ७ ॥

जोपुरुष योगाभ्यासयुक्तहो शुद्ध बुद्धि और मन से इंद्रियों को वश करके ईश्वरको स
र्वभूत व्यापी जानकर कर्म कर्त्ता है सो कर्म फल से बद्ध नहीं होता ७ योगयुक्तवि
वेकी पुरुष यद्यपि इंद्रियोंका व्यापार करता है तथापि अपनेको कर्त्तानहीं जानता

योगयुक्तोविशुद्धात्माविजितात्माजितेन्द्रियः सर्वभूता
त्मभूतात्माकुर्वन्नपिनलिप्यते ७ नैवकिञ्चित्करोमी
तियुक्तोमन्येततत्त्ववित् पश्यन्शृण्वन्स्पृशञ्जिघ्रन्नः ८
श्नन्गच्छन्स्वपन्श्वसन् ८ प्रलपन्विसृजन्गृण्हन्नु ९
न्मिषन्निमिषन्नपि इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेषुवर्त्तन्तइतिधा

क्यौंकि देखने सुन्ने छूने सूंघने चखने चलने और स्वप्न और सांस लेनेसे अपने
में कर्त्तत्वाभिनिवेश नहीं मानता ८ उच्चार त्यागग्रहण और कूर्माख्य प्राणवायू
का संकोच विकाश आदि सम्पूर्न इंद्रियाँ अपना अपना व्यापार करती हैं ९ ॥ ३५

संपूर्न कर्मों को परमेश्वरही में अर्पण करके कर्म फल की आशा से रहित हो जो
पुरुष कर्म कर्त्ता है सोपाप से नहीं लिप्तहोता जैसे जलमें कमलका पत्तारहताहैतो
भी उससेलिप्तनहींहोता १० शरीरमनबुद्धिऔर इंद्रियादिसे तत्तत्कर्मफलकी अपे

ब्रह्मण्याधायकर्माणिसङ्गंत्यक्त्वाकरोतियः लिप्यतेनस
पापेनपद्मपत्रमिवाम्भसा १० कायेनमनसाबुद्ध्याकेवलै
रिन्द्रियैरपि योगिनःकर्मकुर्वन्तिसङ्गंत्यक्त्वात्मशुद्धये ॥
११ युक्तःकर्मफलंत्यक्त्वाशान्तिमाप्नोतिनैष्ठिकीम् अयु
क्तःकामकारेणफलेसक्तोनिबध्यते १२ ॥ ७ ॥

क्षाछोडकरयोगीलोग चित्तशुद्धीकेहेतु कर्मकरते हैं ११ परमेश्वर आराधनमें त
त्परहो कर्मफल की अपेक्षा छोड़कर कर्म करने से युक्त पुरुष शांति को प्राप्तहो
ते हैं और अयुक्त पुरुष कामसे फलासक्त होकर बद्ध रहते हैं १२ ॥ ७ ॥

सबकर्ममन से त्यागकर जितचित्त पुरुष सुखसे रहताहै औरनेत्र आदि नवद्वारपुर
में देही न आप कुछ करता औरन कराताहै १३ सर्व व्यापी ईश्वर जगत्का कर्त्तत्व औ
रकर्म आप नहीं सृष्टकरता परंतु अनादि अविद्यासे कामवशहोस्वाभाविकप्रवृत्तहोता

सर्वकर्माणिमनसासन्न्यस्यास्तेसुखंवशी नवद्वारेपुरेदेहीनैवकुर्वन्नकारय
न् १३ नकर्त्तृत्वंनकर्माणिलोकस्यसृजतिप्रभुः नकर्म्मफलसंयोगंस्वभावस्तु
प्रवर्त्तते १४ नादत्तेकस्यचित्पापंनचैवसुकृतंविभुः अज्ञानेनावृतंज्ञा
नंतेनमुह्यन्तिजन्तवः १५ ज्ञानेनतुतदज्ञानंयेषांनाशितमात्मनः तेषा
मादित्यवज्ज्ञानंप्रकाशयतितत्परम् १६ ॥ ७ ॥ ७ ॥

है और ईश्वरनहीं नियोगकरता १४ परमेश्वरनकिसीकोपापदेताहैनपुण्यपरंतु अ
ज्ञानसे ज्ञानघेराहै इसलिये जीव आपही मोहकोप्राप्तहोताहै १५ जिस्का अज्ञान ज्ञा
नकेप्रकाशसेनष्टभयाउस्काज्ञानपरमेश्वरकाप्रकाशकहै जैसेसूर्य अंधकारदूरकरके

जिस्कीबुद्धि मन और तात्पर्य परमेश्वरही में है उस्का स्थान परमेश्वरहीहै औरवह
ज्ञानसे निर्मलहो पुनरावृत्ति से रहितहोकर ब्रह्मकोप्राप्त होताहै १७ परमेश्वरकोस
र्व व्यापी जानने वाला विवेकी विद्या और विनय से युक्त ब्राह्मण चमार औ कुत्ता

तद्बुद्धयस्तदात्मानस्तन्निष्ठास्तत्परायणाः गच्छन्त्यपुनरावृ
त्तिंज्ञाननिर्धूतकल्मषाः १७ विद्याविनयसम्पन्नेब्राह्मणेगवि
हस्तिनि शुनिचैवश्वपाकेचपण्डिताःसमदर्शिनः १८
इहैवतैर्जितःसर्गोयेषांसाम्येस्थितंमनः निर्दोषंहिसमं
ब्रह्मतस्माद्ब्रह्मणितेस्थिताः १९ ॥ ७ ॥ ७ ॥

गऊ और हाथी में भेद नहीं जानता सबको समान देखता है १८ वो लोग जिनका
मन स्वाधीन है इसी लोक में संसार जीत लेते हैं क्यौं कि जिनके दृष्टि में ब्रह्म
निर्दोष और समान है अवश्य ब्रह्म भाव को प्राप्त हैं १९ ॥ ७ ॥

जोपुरुष प्रियवस्तुके प्राप्तहोनेसेहर्षऔर अप्रियकेप्राप्तहोनेसे विषादनहींकर्त्ताउसकी
बुद्धिनिश्चलऔरमोहरहितहै इसलिये वो ब्रह्मभावको प्राप्तहै २० बाह्यविषया
दिकमैं अ सक्तचित्तवालापुरुषजोसुखअपनेमैंअनुभवकर्त्ताहैउसअक्षयसुखकोस

नप्रहृष्येत्प्रियंप्राप्यनोद्विजेत्प्राप्यचाप्रियम् स्थिरबुद्धिरसंमूढोब्रह्मवि
द्ब्रह्मणिस्थितः २० बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्माविन्दत्यात्मनियत्सुखम् सब्र
ह्मयोगयुक्तात्मासुखमक्षयमश्नुते २१ येहिसंस्पर्शजाभोगादुःखयोन
यएवते आद्यन्तवन्तःकौन्तेयनतेषुरमतेबुधः २२ शक्नोतीहैवयःसो
ढुंप्राक्शरीरविमोक्षणात् कामक्रोधोद्भवंवेगंसयुक्तःससुखीनरः २३

माधिस्थपुरुषप्राप्तहोतेहैं २१ हेअर्जुनजोभोगइंद्रियोंकीवृत्तिसेउत्पन्नहोतेहैंसोदुखके
कारणऔरउत्पत्तिऔरविनाशवानहैंइसलियेविवेकीपुरुषउनमैंनहीं रमता २२ जोपु
रुषशरीरपतनसेपहिलेइसलोकमैंकामक्रोधसेउत्पन्नभयेमनकेवेगकोसहनकरस

काहैसोयोगयुक्तऔरसुखीहै २३

जोपुरुष अंतःकरणमैं सर्वदा सुखी रहता और अंतर मैं क्रीडा करताहै ऐसेहीअ
पने मनमैं सदा प्रकाशित रहताहै सो समाधि युक्त पुरुष ब्रह्म भाव को प्राप्तहो
मोक्ष पाता है २४ जो ऋषी निर्वाण ब्रह्मको प्राप्त हुये हैं उनका कल्मष औरभे

योऽन्तःसुखोऽन्तरारामस्तथान्तर्ज्योतिरेवयः सयोगीब्रह्म
निर्वाणंब्रह्मभूतोधिगच्छति २४ लभन्तेब्रह्मनिर्वाणमृ
षयःक्षीणकल्मषाः छिन्नद्वैधायतात्मानःसर्वभूतहितेर
ताः २५ कामक्रोधवियुक्तानांयतीनांयतचेतसाम् ॥ अ
भितोब्रह्मनिर्वाणंवर्त्तन्तेविदितात्मनाम् २६ ॥ ७ ॥

दबुद्धि दूर हुई औरमन वश मैं है और सम्पूर्ण प्राणीके हितका आचरण कर
तेहैं २५ काम क्रोध से रहित नियमित चित्तवाले जो परमेश्वरको यथार्थरू
पसे जानते हैं सो संन्यासी सर्वत्र निर्वाणही ब्रह्मको प्राप्त होते हैं २६ ॥ ७ ॥

बाह्यस्पर्शोंको वाहर कर दृष्टि को भ्रूलताके बीच रख प्राण अपान दोनोंको कुंभक से
नासाके अंतर करके २७ नियमितमन बुद्धिऔर इंद्रियवालेपुरुषमौनीहोकर इच्छा
भयऔर क्रोधसे रहितहैं उन्हेंसदामुक्त जानो २८ यज्ञऔरतपकाअनुभवकरनेवा

स्पर्शान्कृत्वाबहिर्बाह्यांश्चक्षुश्चैवान्तरेभ्रुवोः प्राणापानौसमौकृत्वाना
साभ्यन्तरचारिणौ २७ यतेन्द्रियमनोबुद्धिर्मुनिर्मोक्षपरायणः विगते
च्छाभयक्रोधोयःसदामुक्तएवसः २८ भोक्तारंयज्ञतपसांसर्वलोकम
हेश्वरम् सुहृदंसर्वभूतानांज्ञात्वामांशान्तिमृच्छति २९ इतिश्रीमन्महा
भारतेशतसाहस्रसंहितायांवैयासिक्यांभीष्मपर्वणिश्रीमद्भगवद्गीतासू
पनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेसंन्यासयोगो· ५॥ ॥

ला और संपूर्नलोकका ईश्वर और सबका हितकारी जोमुझ कोजानताहै सो शांतिकोप्रा
प्त होताहै २९ संन्यासयोग निरूपण पाँचवा अध्यायसमाप्तहुवा ५॥ ॥ ७ ॥

भगवान् कहतेहैं जो पुरुष कर्मफलकी अपेक्षात्यागकर विहित कर्मका आचरण क
र्ताहै सो संन्यासी और योगी है यदि इष्टापूर्त्तादि कर्म अर्थात् अग्निसाध्य औरअनग्नि
साध्य कर्मोंकात्यागीहो १ हेपांडव अर्जुनजिसको विवेकी लोग संन्यास कहतेहैं उसी कोयो

श्रीभगवानुवाच अनाश्रितःकर्मफलंकार्यंकर्मकरोतियःस
संन्यासीचयोगीचननिरग्निर्नचाक्रियः १ यंसंन्यासमितिप्रा
हुर्योगंतंविद्धिपाण्डव नह्यसंन्यस्तसंकल्पोयोगीभवतिकः
श्चन २ आरुरुक्षोर्मुनेर्योगंकर्मकारणमुच्यते योगारूढः
स्यतस्यैवशमःकारणमुच्यते ३ ॥ ७ ॥ ७ ॥

गजानो क्यों कि विनामनके संकल्प त्यागे कोई योगी नहीं होता २ ज्ञानयोगमें
आरूढ होनेवाले पुरुष को अंतःकरण शुद्धिद्वारा कर्म कारण कहलाता है और
समाधिस्थ पुरुष को इंद्रिय का निग्रह कारण होता है ३ ॥ ७ ॥

जब भोगऔरभोगसाधन कर्ममें पुरुषकी प्रीतिनहीं होती तब योगारूढ सर्बसंकल्पसंन्यासीकहलाताहै ४ विवेकज्ञानसे अपनेआत्माको आपहीसंसारसे उद्धारकरै औरआत्माको अधोगतिमेंनडाले क्यौंकि आत्माही अपना उपकारकबंधुऔर श

यदाहिनेन्द्रियार्थेषुनकर्मस्वनुषज्जते सर्वसंकल्पसंन्यासीयोगारूढस्तदोच्यते ४ उद्धरेदात्मनात्मानंनात्मानमवसादयेत् आत्मैवह्यात्मनोबन्धुरात्मैवरिपुरात्मनः ५ बन्धुरात्मात्मनस्तस्ययेनात्मैवात्मनाजितः अनात्मनस्तुशत्रुत्वेवर्त्तेतात्मैवशत्रुवत् ६ जितात्मनःप्रशान्तस्य परमात्मासमाहितः शीतोष्णसुखदुःखेषुतथामानापमानयोः ७ ॥

त्रुहै ५ जिसनेविवेकज्ञानसेमनकोवशकिया उस्काउपकारकबंधुआत्माहीहै अविवेकीका अपकारकशत्रूभी आत्माहीहै ६ स्वाधीनमन औरप्रशांतिबुद्धिवाला अर्थात् रागद्वेषरहितपुरुषजोशीतोष्ण औरमान अपमानकोसमानजानताहैपरमात्माउस के

ज्ञानऔर विज्ञानसेजिस्का मन निराकांक्षित विकार से रहित और जित इंद्रिय है सो योगी यदि लोहा पत्थर और सोनेको समान जानै तो युक्त कहलाता है ८ जो पुरुष इष्ट मित्र और शत्रु से उदासीन द्वेषी और बंधु का मध्यस्थ हैसाधु

ज्ञानविज्ञानतृप्तात्माकूटस्थोविजितेन्द्रियः युक्तइत्युच्यते योगीसमलोष्टाश्मकाञ्चनः ८ सुहृन्मित्रार्युदासीनमध्यस्थद्वेष्यबन्धुषु साधुष्वपिचपापेषुसमबुद्धिर्विशिष्यते ९ योगीयुञ्जीतसततमात्मानंरहसिस्थितः एकाकीयतचित्तात्मानिराशीरपरिग्रहः १० ॥ ७ ॥ ७ ॥

और पापीको समान देखता है सो सम बुद्धि कहलाता है ९ योगारूढ पुरुष आकांक्षा और प्रतिग्रह छोड़ शरीर औ चित्त दोनों को स्वाधीन कर एकांत में अकेला हो सदा मगन को निमग्न करै १० ॥ ७ ॥ ७ ॥

योगारूढ पुरुष पवित्रभूमि परअचलनबहुतऊंचेऔरनबहुतनीचेतिसपरकुशाउस
परव्याघ्रचर्मउसपरवस्त्रकाआसनबिछावै ११ ऐसे आसनपरबैठमनएकाग्रकर
किचित्तऔरइंद्रियोंकाव्यापारशांतकरमनकी स्थिरताकेहेतुयोगाभ्यासकरे १२ श

शुचौदेशेप्रतिष्ठाप्यस्थिरमासनमात्मनः नात्युच्छ्रितंनातिनीचंचैलाजिन
कुशोत्तरम् ११ तत्रैकाग्रंमनःकृत्वायतचित्तेन्द्रियक्रियः उपविश्यासने
युंज्याद्योगमात्मविशुद्धये १२ समंकायशिरोग्रीवंधारयन्नचलंस्थिरः
संप्रेक्ष्यनासिकाग्रंस्वंदिशश्चानवलोकयन् १३ प्रशान्तात्माविगतभी
र्ब्रह्मचारिव्रतेस्थितः मनःसंयम्यमच्चित्तोयुक्तआसीतमत्परः १४ ॥ ॥

रीरमस्तकऔरकंठकोसमानऔरअचलधारनकरकेअपनेनासिकाग्रकोदेखता भ
या दिशाअवलोकनसे रहितहो आसनपरबैठै १३ प्रशांतआत्माऔरभयरहितहोक
रब्रह्मचर्यव्रतमैंस्थिरहोमेरीवोरचित्तलगामुझीकोपुरुषार्थसमझमनकोयोगमैंनियुक्त

करताहै १४ ३९

योगारूढ पुरुष सर्वदा इसीप्रकारसे मनको नियुक्तकर्त्ता भया शांतमन होकर मेरे
स्वरूपमोक्षरूप शांतिकोप्राप्तहोताहै १५ हे अर्जुन अतिभक्षण और नहीभो
जन करनेवाला या बहुत सोनेऔरजागनेवाला पुरुष योगके हेतु योग्यनहीं १६

युञ्जन्नेवंसदात्मानंयोगीनियतमानसः शान्तिंनिर्वाणपरमांमत्संस्था
मधिगच्छति १५ नात्यश्नतस्तुयोगोऽस्तिनचैकान्तमनश्नतः नचा॰
तिस्वप्नशीलस्यजाग्रतोनैवचार्जुन १६ युक्ताहारविहारस्ययुक्तचेष्ट
स्यकर्मसु युक्तस्वप्नावबोधस्ययोगोभवतिदुःखहा १७ यदाविनिय॰
तंचित्तमात्मन्येवावतिष्ठते निस्पृहःसर्वकामेभ्योयुक्तइत्युच्यतेतदा॥ १८

जो पुरुष युक्तआहारविहारऔरकर्ममैं प्रयत्नऔरनिद्राजागरनसमानकर्ताहैसो संसा
रूपदुखदूरकरनेवाले योगकोप्राप्तहोताहै १७ जब योगी अपनेमैं चित्त नियतहो
करसंपूर्नकामों से निस्पृह रहेगा तब युक्त कहलावेगा १८ ॥ ॥

जैसेनिर्वायु देशमें दीपचंचलनहीं होता वैसेही जबपुरुष युक्तचित्तहोकर उत्तम यो
गाभ्यास करतारहेगातब यह दृष्टांत उस युक्तयोगीके विषय में ठीक होगा १९ जि
सयोगअवस्था में योगाभ्यास से चित्त निरोध होकर रमताहै और मन से अपने

यथादीपोनिवातस्थोनेङ्गतेसोपमास्मृता योगिनोयतः
चित्तस्ययुञ्जतोयोगमात्मनः १९ यत्रोपरमतेचित्तंनिरु
द्धंयोगसेवया यत्रचैवात्मनात्मानंपश्यन्नात्मनितुष्यति
२० सुखमात्यन्तिकंयत्तद्बुद्धिग्राह्यमतीन्द्रियम् वेत्तिय
त्रनचैवायंस्थितश्चलतितत्वतः २१ ॥ २१ ॥

आत्मा को अपनेमें देखकर संतुष्ट होताहै २० जब आरूढ अवस्था में आत्मत
त्व से निश्चल और स्थिर होता है तब योगी को बहुसुख मिलता है जो निरति
शय है और इंद्रियों से ग्रहण करनेके योग्य नहीं केवल ज्ञानग्राह्यहै २१ ॥ ५०

जिसनिरतिशयसुख के प्राप्तहोनेसे दूसराकोई अधिक लाभनहीं मानता और उस्के
अनुभवसे बहुतदुःखकरकेभीनहींचलितहोता २२ जिस्केजाननेसेदुखकावियोग
होताहैसोयोगनिश्चलचित्त सेनिश्चयकरकेअभ्यासकरनेकेयोग्यहै २३ संकल्पउ

यंलब्ध्वाचापरंलाभंमन्यतेनाधिकंततः यस्मिन्स्थितोनदुःखेनगुरुणा
पिविचाल्यते २२ तंविद्याद्दुःखसंयोगवियोगंयोगसंज्ञितम् सनिश्चये
नयोक्तव्योयोगोनिर्विण्णचेतसा २३ संकल्पप्रभवान्कामांस्त्यक्त्वास
र्वानशेषतः मनसैवेन्द्रियग्रामंविनियम्यसमन्ततः २४ शनैःशनैरुपर
मेद्बुध्याधृतिगृहीतया आत्मसंस्थंमनःकृत्वानकिञ्चिदपिचिन्तयेत् २५

त्पन्न सबकामोंको निश्शेष करके त्यागकरै और चारोंवोरसेइंद्रियग्रामको मन से
रोक करयोगाभ्यास में चित्तलगावै २४ धीरेधीरेशांत हो धारणावशीकृतबुद्धिसे
आत्मामें मनकोस्थिरकर बाह्यविषयों से विमुक्त हो योगाभ्यास करै २५ ॥ ॥

जिसजिसविषयसे अनुरक्त हो मनचलताहै उसेउसे रोककर अपनेआत्माहीकेव
शकरै क्योंकि मनचंचलहै स्थिरनहीं २६ शांतमनवाले और ब्रह्मस्वरूपमें प्राप्त
हुएयोगीको उत्तम सुखप्राप्त होताहै यदि वह रजोगुण और कल्मष से रहितहो

यतोयतोनिश्चरतिमनश्चंचलमस्थिरम् ततस्ततोनियम्यैतदात्मन्ये
ववशंनयेत् २६ प्रशान्तमनसंह्येनंयोगिनंसुखमुत्तमम् उपैतिशान्त
रजसंब्रह्मभूतमकल्मषम् २७ युञ्जन्नेवंसदात्मानंयोगीविगतक
ल्मषः सुखेनब्रह्मसंस्पर्शमत्यन्तंसुखमश्नुते २८ सर्वभूतस्थमात्मा
नंसर्वभूतानिचात्मनि ईक्षतेयोगयुक्तात्मासर्वत्रसमदर्शनः २९ ॥

२७ ऐसाकल्मषरहितयोगी सर्वदामनको नियोग करताहुवा ब्रह्मसंबंधसे अना
यास जीवन्मुक्तताको प्राप्तहोताहै २८ योगसेनियुक्तमनकर और सर्वत्रसमद
र्शीयोगी आत्माको सबभूतों में और सबभूतों को आत्मामें स्थित देखताहै २९ ॥

जोपुरुषमुझकोसर्वत्रऔरमुझमेंसंपूर्णजगतदेखताहै उससेमैं औरवहमुझसे दूरनहीं
३० जोपुरुषसर्वव्यापीऔरएकहीजानताहुवासबभूतों में मुझको स्थितजानता है
सोकिसीप्रकारसेरहैपरंतु ज्ञानीहोकरमुझमेंप्राप्तहोताहै ३१ हेअर्जुनजोपुरुषअ

योमांपश्यतिसर्वत्रसर्वंचमयिपश्यति तस्याहंनप्रणश्यामिसचमेन
प्रणश्यति ३० सर्वभूतस्थितंयोमांभजत्येकत्वमास्थितः सर्वथावर्त्तमा
नोऽपिसयोगीमयिवर्त्तते ३१ आत्मौपम्येनसर्वत्रसमंपश्यतियोऽर्जुन
सुखंवायदिवादुःखंसयोगीपरमोमतः ३२ अर्जुनउ॰ योऽयंयोगस्त्व
याप्रोक्तःसाम्येनमधुसूदन एतस्याहंनपश्यामिचञ्चलत्वात्स्थितिंस्थि

पनेआत्माकेसमानसबप्राणियों के दुखसुखकोसमझताहै सोयोगियों मेंपरमउत्त
महै ३२ अर्जुनप्रश्नकरतेहैं कि हेमधुसूदनयहयोगजोतुमनेमनकेस्थिरताकेहेतु
कहाउसकीबहुतकालतकस्थितीनहीं देखताहूं क्योंकिमनचंचलऔरअस्थिरस्वभा

हेकृष्णमनचंचलहैश्रोरदेहइंद्रियोंकीपीडाकरकेविचारसेजीतनेकेयोग्यनहींश्रो
रविषयवासनाकेश्रनुरागसेदुर्भेदइसलियेइसकानिग्रहश्रतिकठिनजानपड़ताहै
जैसेश्राकाशमेंवायूसर्वत्रव्याप्तहैपरंतुकोईउसेरोकनहींसक्ता ३४ हेमहाबाहू

चञ्चलंहिमनःकृष्णप्रमाथिबलवद्दृढम् तस्याहंनिग्रहंम
न्येवायोरिवसुदुष्करम् ३४ श्रीभगवानुवाच श्रसंशयंमहा
बाहोमनोदुर्निग्रहंचलम् श्रभ्यासेनतुकौन्तेयवैराग्येणः
चगृह्यते ३५ श्रसंयतात्मनायोगोदुष्प्रापइतिमेमतिः॥ व
श्यात्मनातुयततागक्योवाप्तुमुपायतः ३६॥ ७ ॥

श्रर्जुनयहतुह्माराकहनासच्चहैकिमनचंचलश्रोरनिग्रहकेयोग्यनहींपरंतुपरमे
श्वराकारश्रंतःकरणकीवृत्तिश्रोरविषयोंकेवैराग्यसेनिग्रहहोताहै ३५ श्रस्थिरमन
वालापुरुषयोगकोप्राप्तहोनेकेयोग्यनहींयहमुझकोनिश्चयहैपरंतुजिस्कामनवशहै

४२ श्रोरप्रयत्नभीकत्तीहैसोउपायद्वारायोगप्राप्तकर्नेकेयोग्यहै ३६

श्रर्जुनप्रश्नकर्तेहैं हेकृष्णजोपुरुषश्रद्धावानहोकरयोगमेंप्रवृत्तहैपरंतुप्रयत्ननकरनेसेयोगसे
मनचलितहोकरयोगसिद्धिकोनप्राप्तहुवातोउस्कीक्यागतीहोगी ३७ हेमहाबाहूकृष्णक
र्मेंश्रोरमोक्षरहितपुरुषनिराश्रयहोकरब्रह्मप्राप्तिमार्गकेउपायमेंमोहाक्रांतहोनेसेवा

श्रर्जुनउवाच श्रयतिःश्रद्धयोपेतोयोगाच्चलितमानसः श्रप्राप्ययोगसं
सिद्धिंकाङ्कतिंकृष्णगच्छति ३७ कच्चिन्नोभयविभ्रष्टश्छिन्नाभ्रमिव
नश्यति श्रप्रतिष्ठोमहाबाहोविमूढोब्रह्मणःपथि ३८ एतन्मेसंशयंकृ
ष्णछेत्तुमर्हस्यशेषतः त्वदन्यःसंशयस्यास्यछेत्तानह्युपपद्यते ३९ श्रीभ
गवानु॰ पार्थनैवेहनामुत्रविनाशस्तस्यविद्यते नहिकल्याणकृत्कश्चिद्दुर्ग तिंतातगच्छति ४०

युक्तमेघकीनाईक्यानष्टहोगा ३८ हेकृष्णमेरेइससंशयकोतुह्मीदूरकरनेकेयोग्यहो
तुमसेश्रतिरिक्तइससंपूर्नसंशयकानिवर्तककोईनहीं ३९ हेतातश्रर्जुनयोगभ्रष्टपुरु
षकोइसकर्मभूमीमेंपातकनहीं श्रोर परलोकमेंभीनरकप्राप्तिनहींक्योंकिकोईशुभक

मेंचालेपुरुषदुर्गतिकोनहींजाते ४०

अल्पकालवाले योगभ्रष्टपुरुषजिसलोकमें अश्वमेधादियज्ञ करनेवालेप्राप्त होतेहैं
वहांबहुतकाल तक निवास करके सदाचारशील धनियों केघरमेंउत्पन्नहोतेहैं ४१
चिरकाल अभ्यासी योगभ्रष्ट पुरुष केवल ज्ञानियों के कुल में उत्पन्न होतेहैं और

प्राप्यपुण्यकृतान्लोकानुषित्वाशाश्वतीःसमाः शुचीनांश्रीः
मतांगेहेयोगभ्रष्टोभिजायते ४१ अथवायोगिनामेवकुलेभ
वतिधीमताम् एतद्धिदुर्लभतरंलोकेजन्मयदीदृशम् ४२
तत्रतंबुद्धिसंयोगंलभतेपौर्वदैहिकम् यततेचततोभूयः
संसिद्धौकुरुनन्दन ४३

इसलोकमें इस प्रकार से सत्कुलमेंजन्मपाना दुर्लभ है ४२ हेकुरुनंदनउसीकुल
में बुद्धिकरके फिर उसी योग को प्राप्त होतेहैं और पूर्व देह संबंध योग केप्राप्त
होनेसे फिर अधिक फल प्राप्त करनेका प्रयत्न करते हैं ४३ ॥ ६ ॥ ४२

उसपूर्वअभ्यास सेकिसी प्रतिबंधक योग से इच्छा रहित होवे तोभी विषयों से मन ह
टाकर योग में स्थिर करतेहैं और योग इच्छित पुरुष वेदउक्तकर्मफल से अधिक
मोक्ष पद को प्राप्त होके मुक्त होता है ४४ योगी पुरुष कल्मषसेशुद्धहोकर अ

पूर्वाभ्यासेनतेनैवह्रियतेह्यवशोऽपिसः जिज्ञासुरपियोगस्य
शब्दब्रह्मातिवर्त्तते ४४ प्रयत्नाद्यतमानस्तुयोगीसंशुद्धकि
ल्बिषः अनेकजन्मसंसिद्धिस्ततोयातिपरांगतिम् ४५ तप
स्विभ्योधिकोयोगीज्ञानिभ्योपिमतोऽधिकः कर्मिभ्यश्चाधि
कोयोगीतस्माद्योगीभवार्जुन ४६ ॥ ७ ॥ ७ ॥

धिक यत्नकरताहुवाअनेकजन्म के योगाभ्याससे सिद्ध और ज्ञानीहोकर उत्तम मो
क्षगतिको प्राप्त होताहै ४५ चांद्रायणादि करनेवाले तपस्वियों से शास्त्रजान्नेवालों
से और इष्टापूर्तादि कर्म करने वालोंसेयोगीअधिकहैइसलियेतुमभीयोगीहो ४६

जोपुरुषमेरीवोर चित्तलगाकरश्रद्धावान्होमुझकोभजताहै सो मेरी बुद्धि मेंयोगि
यों सेश्रेष्ठहै ४७ आत्मसंयमयोगनामकछठवाअध्यायसमाप्तहुवा ६॥ ॥भगवा-

योगिनामपिसर्वेषांमद्गतेनान्तरात्मना श्रद्धावान्भजतेयोमांसमे
युक्ततमोमतः ४७ इतिश्रीमन्महाभारतेशतसाहस्रसंहितायांवै
याशिक्यांभीष्मपर्वणिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेआत्मसंयमयोगोनामषष्ठोऽध्या
यः ६॥ ॥ श्रीभगवानुवाच मय्यासक्तमनाःपार्थयोगंयुञ्जन्
मदाश्रयः असंशयंसमग्रंमांयथाज्ञास्यसितच्छृणु १ ॥ ७ ॥

न कहतेहैं हेपार्थजिस्कामनमुझमेंलगाहैऔरमुझीकोआश्रयसमझताहै सोपुरुषयो
गाभ्यासकरताहुवानिस्संदेह संपूर्नऐश्वर्यसहित जैसामुझे जानेगा सोसुनो १ ॥

विज्ञानकहैअनुभव सहित यह संपूर्न शास्त्रज्ञान हमतुमसेकहेंगे किजिस्केजान्नेके
अनंतर इस शुभ मार्ग मेंफिर कुछ जान्नेके योग्य बाकी नही रहता २ सहस्रमनुष्यों
में से येक अपने पुण्यकी अधिकतासेउत्तमज्ञानकेहेतुयत्नकरताहै औरउनसैकडौंय

ज्ञानन्तेहंसविज्ञानमिदंवक्ष्याम्यशेषतः यज्ज्ञात्वानेहभूयोन्यत्ज्ञातव्यम
वशिष्यते २ मनुष्याणांसहस्रेषुकश्चिद्यततिसिद्धये यततामपिसिद्धानां
कश्चिन्मांवेत्तितत्वतः ३ भूमिरापोनलोवायुःखंमनोबुद्धिरेवच अह
ङ्कारइतीयंमेभिन्नाप्रकृतिरष्टधा ४ अपरेयमितस्त्वन्यांप्रकृतिंविद्धिमे
पराम् जीवभूतांमहाबाहोययेदंधार्यतेजगत् ५॥ ७ ॥

त्नकरनेवालोंमेंसेकोईमुझकोयथार्थकरकेजानताहै ३ पृथिवीजलअग्निवायुआकाश
मनबुद्धिऔरअहंकार इनआठभेदोंसेमेरीप्रकृतिभिन्नहै ४ हेमहाबाहूइस्केपरे अप
रा प्रकृतिसोजानो जोचेतनजीवस्वरूप है किजिस्से संपूर्नजगतधारन होता है ५॥ ॥

स्थावर जंगम रूप संपूर्न भूत इन दो जड और चेतन प्रकृति यों से उत्पन्न जानो और ये प्रकृ
तियाँ हमीसे उत्पन्न भई हैं इसलिये संपूर्न जगत की सृष्टी और प्रलय के कारण हमी
हैं ६ हे धनंजय अर्जुन मुझसे और कोई श्रेष्ठ नहीं जैसे सूत्रमें सब मणियाँ परोई जाती हैं

एतद्योनीनिभूतानिसर्वाणीत्युपधारय अहंकृत्स्नस्यजगतःप्रभवःप्रलय
स्तथा ६ मत्तःपरतरंनास्तिकिञ्चिदस्तिधनञ्जय मयिसर्वमिदंप्रोतंसू
त्रेमणिगणाइव ७ रसोहमप्सुकौन्तेयप्रभास्मिशशिसूर्ययोः प्रणव
स्सर्ववेदेषुशब्दःखेपौरुषंनृषु ८ पुण्योगन्धःपृथिव्याञ्चतेजश्चा
स्मिविभावसौ जीवनंसर्वभूतेषुतपश्चास्मितपस्विषु ९ ॥ ० ॥

वैसेही संपूर्न जगत मुझमें परोया है ७ हे अर्जुन जल का रस सूर्य चंद्रो की प्र
भा वेदों का प्रणव और मनुष्यों का पुरुषार्थ मही हूँ ८ और भी पृथ्वी का सु
गंध अग्नि का तेज सब भूतों का जीवन और तपस्वियोंका तप मही हूँ ९ ॥ ४५

हे पार्थ चराचर आत्मक भूतोंका आदि कारण मुझीको जानो और विवेकियोंकी बुद्धि और तेज
स्वियोंका तेज मही हूँ १० हे अर्जुन बलवानोंका बल काम रागादि से रहित मही हूँ और भूतों
में धर्म से अविरुद्ध काम भी मही हूँ ११ सात्विक शम दम आदि और राजस हर्ष विषा

बीजंमांसर्वभूतानांविद्धिपार्थसनातनम् बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मितेज
स्तेजस्विनामहम् १० बलंबलवताञ्चाहंकामरागविवर्जितम् धर्मा
विरुद्धोभूतेषुकामोस्मिभरतर्षभ ११ येचैवसात्विकाभावाराजसास्ता
मसाश्चये मत्तएवेतितान्विद्धिनत्वहन्तेषुतेमयि १२ त्रिभिर्गुणमयैर्भा
वैरेभिःसर्वमिदंजगत् मोहितंनाभिजानातिमामेभ्यःपरमव्ययम् १३

दादि और तामस शोक मोहादि सब भाव मुझीसे उत्पन्न जानो और मै उनमें नहीं परंतु
वे मुझमें हैं १२ इन तीनो गुण स्वरूप भावों से यह सब जगत मोह को प्राप्त हुवा है इसलि
ये लोग मुझको इस्से पर नही जानते परन्तु मै सर्व विकार से रहित हूँ १३ ॥ ० ॥

यहमेरीत्रिगुणात्मकमायाअतिअद्भुतऔरदुस्तरहैजोलोगमेरेशरणागतहोतेहैंवहीइससेत
रजातेहैं १४ पापशीलमोहाक्रांतअधमनरमुझेनहींभजतेक्योंकिमायासेउनकाज्ञाननष्टभया
इससेवेअसुरभावकोप्राप्तभयेहैं १५ हेअर्जुनचारप्रकारकेमनुष्यपूर्वपुण्यसेमुझकोभजते हैं

दैवीह्येषागुणमयीममामायादुरत्यया मामेवयेप्रपद्यन्तेमायामेतान्तरंति
ते १४ नमांदुष्कृतिनोमूढाःप्रपद्यन्तेनराधमाः माययापहृतज्ञानाआ
सुरंभावमाश्रिताः १५ चतुर्विधाभजन्तेमांजनाःसुकृतिनोर्जुन आ
र्तोजिज्ञासुरर्थार्थीज्ञानीचभरतर्षभ १६ तेषांज्ञानीनित्ययुक्तएकभ
क्तिर्विशिष्यते प्रियोहिज्ञानिनोत्यर्थमहंसचममप्रियः १७ ॥ ॥

अर्थात्जोरोगादिसेपीडितहैंयाजोपरमेश्वरकोजाननेकीइच्छारखतेहैंयाजोधनअर्थीहैंऔ
रजोतत्वजाननेवालेहैं १६ इनचारप्रकारकेमनुष्योंमेंसे ज्ञानीयेकभक्तिकरके सर्वदामुझमें
चित्तलगानेसे श्रेष्ठ है ज्ञानी को मैं अत्यंत प्रिय हूं और ज्ञानी मुझको १७ ॥ ॥ ४६

औरसबभीश्रेष्ठहैं परन्तु ज्ञानी मेरा आत्माही है यहनिश्चित है क्यों कि वह मुझी में
चित्त लगाकर मुझी को उत्तम गति जानकर आश्रयण करता है १८ बहुत जन्म
के अनन्तर ज्ञानी यह जानता है कि संपूर्ण जगत वासुदेव ही का स्वरूप है इ

उदाराःसर्वएवैतेज्ञानीत्वात्मैवमेमतम् आस्थितःसहियु
क्तात्मामामेवानुत्तमांगतिम् १८ बहूनांजन्मनामन्तेज्ञानवा
न्मांप्रपद्यते वासुदेवःसर्वमितिसमहात्मासुदुर्लभः १९
कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाःप्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः तंतंनियममा
स्थायप्रकृत्यानियताःस्वया २० ॥ ॥ ॥

स लिये ऐसा महात्मा होना दुर्लभ है १९ जिनका ज्ञान कामादि से हरण भया
वे किसी न किसी नियम के आश्रयण हो अपने पूर्व जन्म की वासना के अ
धीन हो उन उन देवता को भजते हैं २० ॥ ॥ ॥

जोजोभक्तजिसजिसमूर्त्तिकीपूजाकोश्रद्धासे इच्छाकरतेहैं उनउनभक्तोंकोवैसेहीदृढ
श्रद्धामैंउत्पन्नकरताहूं २१ वोभक्तउसीश्रद्धासेयुक्त हो उन देवता के मूर्त्तों की पूजा
की इच्छा करते हैं फिर इसके अनंतर मेरे कहेहुवे कामोंकोप्राप्तहोतेहैं क्यौंकिसबदे

यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति तस्यतस्याचः
लां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम् २१ स तया श्रद्धया युक्तस्त
स्याराधनमीहते लभते च ततः कामान्मयैव विहितान्
हितान् २२ अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम्॥
देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि २३॥ ॥

वतौंकास्वरूपमहीहूं इसलियेवेसबमेरेस्वाधीनहैं २२ जिनकीबुद्धिअल्पहैउनकाफ
लभीविनाशीहै औरदेवआराधनकरनेवालेविनाशीहोकर उनदेवतोंकोप्राप्तहोतेहैं
परंतुजोमुझेयथार्थकरकेपूजताहैसोनाशरहितपरमानंदरूपमुझकोप्राप्तहोताहै २३॥ ४७

अविवेकीपुरुषमुझअव्यक्तको देहधारी मानतेहैं क्यौंकि मेरा स्वरूप जो प्रपंच से अ
तिरिक्त श्रेष्ठ और अविनाशी है उसे नहीं जानते २४ मै योगमाया से घेरा हूं इसलि
ये संपूर्ण जीवौंपर प्रगट नही हौं तिसीसे लोग मोह को प्राप्त होकर आद्यंत रहित मु

अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः परं भावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्त
मम् २४ नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः मूढोयं नाभिजानाति लो
को मामजमव्ययम् २५ वेदाहं समतीतानि वर्त्तमानानि चार्जुन भविष्याणि
च भूतानि मां तु वेद न कश्चन २६ इच्छाद्वेषसमुत्थेन द्वन्द्वमोहेन भारत
सर्वभूतानि सम्मोहं सर्गे यान्ति परन्तप २७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

झको नहीं जानते २५ हे अर्जुन मै भूत भविष्य और वर्तमान तीनौंकालके भूतौंकोजा
नता हूं परंतु मुझको कोई नहीं जानता २६ हे भारत अर्जुन रागद्वेषसे उत्पन्न सुखदुःख
भेदमूलक मोह से संपूर्ण भूत उत्पत्ती मे मोह को प्राप्त होते हैं २७॥ ७ ॥

जिनजीवोंका पुण्यकर्मकेआचरणसेपापनष्टभया वेसुखदुखभेदमूलकमोहसेछूटक
करदृढव्रतहो मेराभजनकरतेहैं २८ जोलोगजरामरणदूरहोनेकेहेतु मेरेआश्रयहो
करप्रयत्न करतेहैं वैसंपूर्ण शुद्धआत्मस्वरूपब्रह्मऔर उस्के साधननिमित्तकर्मको

येषांत्वन्तगतंपापंजनानांपुण्यकर्मणाम् तेद्वन्द्वमोहनि
र्मुक्ताभजन्तेमांदृढव्रताः २८ जरामरणमोक्षायमामाश्रि
त्ययतन्तिये तेब्रह्मतद्विदुःकृत्स्नमध्यात्मंकर्मचाखिलम्
२९ साधिभूताधिदैवंमांसाधियज्ञञ्चयेविदुः प्रयाणकाले
पिचमांतेविदुर्युक्तचेतसः ३० ॥ ७ ॥ ७ ॥

भी जानतेहैं २९ जोलोग अधिभूत अधिदैवत अधियज्ञ सहित मुझको जानतेहैं वै
मरणकाल में भी विवेक युक्त होकर मेरे स्वरूप को जानते हैं ३० ॥ ७ ॥ ४८

ज्ञानविज्ञानयोग निरूपण सातवा अध्यायसमाप्तहुवा ७॥ ॥ अर्जुनपूछतेहैं हेपुरु
षोत्तम ब्रह्मक्याहै और अध्यात्म अधिभूत अधिदैवत कर्म क्याकहलाताहै १ हे

3

इतिश्रीमन्महाभारतेशतसहस्रसंहितायांवैयासिक्यांभीष्मपर्व
णिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृ
ष्णार्जुनसंवादेज्ञानविज्ञानयोगोनामसप्तमोऽध्यायः ७॥ ॥
अर्जुनउवाच किंतद्ब्रह्मकिमध्यात्मकिंकर्मपुरुषोत्तम अधि
भूतञ्चकिंप्रोक्तमधिदैवंकिमुच्यते १ अधियज्ञःकथंकोऽत्रदे
हेस्मिन्मधुसूदन प्रयाणकालेचकथंज्ञेयोसिनियतात्मभिः २ ॥

मधुसूदन इस देह में यज्ञ फल दायक और यज्ञ प्रयोजक कौन है और कैसे र
हता है और अंत काल में नियत चित्तवाले पुरुष तुमको कैसा जानते हैं २॥ ॥

भगवान् कहतेहैं ब्रह्म अचल और उत्कृष्टहै और आपही अपने अंशसे जीवरूपहोना उ
सकास्वभावहै औरउसस्वभावका भोक्तृत्वहोकर देहमें रहना अध्यात्मकहलाताहै और
जरायुज आदिभूतोंकी उत्पत्ति औरउद्भवका करनेवालाहै विसर्गअर्थात् देवतोंकेनिमित्त

श्रीभगवानुवाच अक्षरंब्रह्मपरमंस्वभावोऽध्यात्म
मुच्यते भूतभावोद्भवकरोविसर्गःकर्मसंज्ञितः ३
अधिभूतंक्षरोभावःपुरुषश्चाधिदैवतम् अधिय=
ज्ञोहमेवात्रदेहेदेहभृतांवर ४ ॥ ॥ ९ ॥ ॥

द्रव्यत्याग यज्ञ वहीकर्म कहलाताहै ३ हेप्राणियोमेंश्रेष्ठ अर्जुन विनाशी देहादिका अधि
कारी अधिभूतहै अपना अंश भूत संपूर्ण देवतोंका अधिपतिपुरुष अधिदैव कह
लाताहै इस देह में मही अंतस्थित अधियज्ञ हूँ ४ ॥ ५ ॥ ९ ॥ ४९

मरणअवस्थामेंजोपुरुषमेरास्मरणकरताहुवादेहत्यागकरताहैसोमेरेस्वरूपकोप्राप्त
होताहै इसमेंकुछसंदेह नहीं ५ हेअर्जुन अंतकालजिसजिसदेवताकी भावनासेपुरु
ष स्मरण करताहुवा देहत्याग करताहै सर्वदाउसीभावनाकेयुक्तहोकरउन्हीदेवतों

अन्तकालेचमामेवंस्मरन्मुक्त्वाकलेवरम् यःप्रयातिसमद्भावंयातिना
स्त्यत्रसंशयः ५ यंयंवापिस्मरन्भावंत्यजत्यन्तेकलेवरम् तन्तमेवेतिकौ
न्तेयसदातद्भावभावितः ६ तस्मात्सर्वेषुकालेषुमामनुस्मरयुध्यच्च म
य्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयः ७ अभ्यासयोगयुक्तेनचेतसाना
न्यगामिना परमंपुरुषंदिव्यंयातिपार्थानुचिन्तयन् ८ ॥ ७ ॥

में प्राप्तहोताहै ६ इसलियेसर्वदामेरास्मरणकरतेहुयेयुद्धकरो औरमुझमेंमनऔरबुद्धि
कोअर्पणकरोतोमुझीमें प्राप्तहोगे इसमेंकुछसंशयनहीं ७ हेपार्थअभ्यासयोगयुक्तपु
रुषएकाग्रचित्तसेस्मरणकरतेहुए उसीप्रकाशात्मकपरमपुरुषकोप्राप्तहोतेहैं ८ ॥

जोपुरुष परब्रह्मको सर्वज्ञ अनादि और जगतका नियमन करनेवाला और परमाणुसे
भी सूक्ष्म और संपूर्ण जगतका पालन करने वाला और अचिंत्यरूप और सूरजकी
नाईं प्रकाशक और प्रकृति से परजानकर ९ अंतकाल में स्थिर मन और योगाभ्या

कविंपुराणमनुशासितारमणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः सर्वस्य
धातारमचिन्त्यरूपमादित्यवर्णंतमसःपरस्तात् ९ प्रयाण
कालेमनसाचलेनभक्त्यायुक्तोयोगबलेनचैव भ्रुवोर्मध्ये
प्राणमावेश्यसम्यक्सतंपरंपुरुषमुपैतिदिव्यम् १०॥ ॥

स से भक्तियुक्त भौंके मध्यप्राण को अच्छीभाँति से निवेश करके उस प्रकाशात्मक
परम पुरुष को स्मरण करता है सो उसी दिव्य पुरुष में प्राप्त होताहै १० ॥ ७ ॥ ५०

जिसको वेदांतीलोग अविनाशी परब्रह्म कहते हैं और रागादिसे रहित जतीलोगजिस
में प्रविष्ट होते हैं और तपस्वीलोग जिसके जानेकी इच्छा से ब्रह्मचर्य व्रत आचरण क
रते हैं उस मोक्षरूप स्थानको हम संक्षेपमें तुमसे अब कहतेहैं ११ संपूर्ण द्वारोंकोरो

यदक्षरंवेदविदोवदन्तिविशन्तियद्यतयोवीतरागाः य
दिच्छन्तोब्रह्मचर्यंचरन्तितत्तेपदंसंग्रहेणप्रवक्ष्ये ११
सर्वद्वाराणिसंयम्यमनोहृदिनिरुध्यच मूर्ध्न्याधायात्म
नःप्राणमास्थितोयोगधारणाम् १२ ओमित्येकाक्षरंब्रह्म
व्याहरन्मामनुस्मरन् यःप्रयातित्यजन्देहंसयातिपरमांगतिम्

क अपने मनको हृदय मेंस्थिरकर भ्रू मध्य में प्राणको रख योगधारण से युक्त हो
के रहै १२ इसके अनंतर येकअक्षर रूपी परब्रह्मप्रणव को उच्चारण करता भया जो
मुझको स्मरण करताहै सो शरीर त्यागने पर उत्तम गती को प्राप्त होता है १३॥ ॥

हेपार्थजोपुरुषनिरंतरअनन्यचित्तहोकरप्रतिदिनमेरास्मरणकरताहैऐसेएकाग्रचित्त
वालेयोगीकेमैंनिकटहूँ १४ क्योंकिपरमपुरुषार्थकोप्राप्तहुएविवेकीपुरुषमुझकोप्राप्त
होकरफिरदुःखकेकारणअनित्यजन्मकोनहींपाते १५ हेअर्जुनयहाँसेब्रह्मलोकतकजा

अनन्यचेताःसततंयोमांस्मरतिनित्यशः तस्याहंसुलभःपार्थनित्ययुक्त
स्ययोगिनः १४ मामुपेत्यपुनर्जन्मदुःखालयमशाश्वतम् नाप्नुवन्तिम
हात्मानःसंसिद्धिंपरमांगताः १५ आब्रह्मभुवनाल्लोकाःपुनरावर्त्तिनो
र्जुन मामुपेत्यतुकौन्तेयपुनर्जन्मनविद्यते १६ सहस्रयुगपर्यन्तमह
र्यद्ब्रह्मणोविदुः रात्रिंयुगसहस्रान्तांतेहोरात्रविदोजनाः १७॥ ॥

करफिरमृत्युलोकमेंआतेहैं क्योंकिब्रह्मलोक भीविनाशीहैपरंतु मुझमेंप्राप्तहोनेवालेपु
रुष फिरनहींफिरते १६ जोलोगयोग बलसे कार्यब्रह्मके दिनऔररात्रीको सहस्रस
हस्र चारोयुगकेतुल्यजानतेहैं वे लोगअहोरात्रीकेजाननेवाले कहलाते हैं १७॥ ॥ ५१

अव्यक्तरूप कारण से संपूर्ण भूत दिन के आरंभमें उत्पन्न होते हैं ऐसेही रात्री के
आगम में उसी कारण में लय होते हैं १८ हे अर्जुन संपूर्ण भूत वारंवार जनमते
हुए रात्री के आगम में लय होते हैं फिर फिर कर्मादि के आधीन होकर वही दि

अव्यक्ताद्व्यक्तयःसर्वाःप्रभवन्त्यहरागमे रात्र्यागमेप्रलीय
न्तेतत्रैवाव्यक्तसंज्ञके १८ भूतग्रामःसएवायंभूत्वाभूत्वाप्र
लीयते रात्र्यागमेवशःपार्थप्रभवन्त्यहरागमे १९ परस्तस्मा
त्तुभावोऽन्योव्यक्तोऽव्यक्तात्सनातनः यःससर्वेषुभूतेषुन
श्यत्सुनविनश्यति २० ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

न के आरंभ में उत्पन्न होते हैं १९ अव्यक्त भाव जो चराचर कारण से पर और
अनादि है सो संपूर्ण भूतों के नष्ट होने से भी आप नहीं नष्ट होता २० ॥ ॥

वहअव्यक्त अविनाशी कहलाता है उसीको विवेकी लोग उत्कृष्ट गति कहते हैं
कि जिसको प्राप्त होकर फिर नहीं फिरते वही स्थान मेराहै २१ हे पार्थ जिस्का
रण भूतमें संपूर्ण भूत स्थित हैं और जिससे संपूर्ण यह चराचर आत्मक जगत

अव्यक्तोऽक्षरइत्युक्तस्तमाहुःपरमांगतिम् यंप्राप्यननि
वर्त्तन्तेतद्धामपरमंमम २१ पुरुषःसपरःपार्थभक्त्याल=
भ्यस्त्वनन्यया यस्यान्तस्थानिभूतानियेनसर्वमिदंततम्
२२ यत्रकालेत्वनावृत्तिमावृत्तिञ्चैवयोगिनः प्रयाता=
यान्तितंकालंवक्ष्यामिभरतर्षभ २३ ॥ ७ ॥

व्याप्त है वह पर पुरुष केवल एकाग्र भक्ति से प्राप्त होने के योग्य है दूसरे
उपाय से नहीं २२ हे अर्जुन जिस काल में योगी लोग जाके फिरते औरन
हीं फिरते हैं उस्की अवस्था कहता हूं २३ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ५२

अर्चिरभिमानी औरदिवसाभिमानी औरशुक्लपक्षअभिमानी क्रमहीनेउत्तरायणकेस्वरूप
हैं इसउत्तरायणमार्गकेजाने वाले ब्रह्मज्ञानीलोग सूर्यज्योतिद्वाराब्रह्मकोप्राप्तहोतेहैं २४
धूमाभिमानी औरात्रिअभिमानी औरकृष्णपक्षअभिमानीतीनोदेवतेदक्षिणायनकेस्व

अग्निर्ज्योतिरहःशुक्लःषण्मासाउत्तरायणम् तत्रप्रयातागः=
च्छन्तिब्रह्मब्रह्मविदोजनाः २४ धूमोरात्रिस्तथाकृष्णःषण्मा
सादक्षिणायनम् तत्रचान्द्रमसंज्योतिर्योगीप्राप्यनिवर्तते ॥
२५ शुक्लकृष्णेगतीह्येतेजगतःशाश्वतेमते एकयायात्यनावृ
त्तिमन्ययावर्त्ततेपुनः २६ ॥ ७ ॥ ७ ॥

रूपहैं इसमार्गकेजानेवालेकर्मयोगीचंद्रजोतिद्वारास्वर्गकोप्राप्तहोवहांइष्टापूर्तादिकर्म
फलकाअनुभवकरकेफिरफिरतेहैं २५ शुक्लपक्षऔरकृष्णपक्षपूर्वोक्तदोनोगतीजगत
केहेतुनित्यऔरदृष्टहै इनदोनोंमेंसेशुक्लपक्षगतीवालेनहींफिरतेऔरकृष्णपक्षगतीवाले=

हेपार्थअर्जुनयहदोनोमार्गजान्नेवालायोगी कभी मोहकोनहीँप्राप्तहोता इसलियेसर्व
दातुमयोगाभ्यासकरो २७ चारोवेदजान्नेसे यज्ञतप औरदानकरनेसेजोफलप्राप्यहैइ

१

नैतेसृतीपार्थजानन्योगीमुह्यतिकश्चन तस्मात्सर्वेषुकालेषुयोग
युक्तोभवार्जुन २७ वेदेषुयज्ञेषुतपःसुचैवदानेषुयत्पुण्यफलंप्र॰
दिष्टम् अत्येतितत्सर्वमिदंविदित्वायोगीपरंस्थानमुपैतिचाद्यम्
२८ इतिश्रीमन्महाभारतेशतसहस्रसंहितायांवैयासिक्यांभीष्मप
र्वणिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृ॰
ष्णार्जुनसंवादेमहापुरुषयोगोनामऽष्टमोऽध्यायः ८॥ ७ ॥

नसेबढकर पूर्वोक्ततत्व केजान्नेसे उत्तमजगत काकारणभूतमोक्षरूप स्थानकोप्रा
प्तहोताहै २८ पुराणपुरुषउत्तमयोगनिरूपणआठवाअध्यायसमाप्तहुवा ८॥ ॥ ५३

भगवानकहतेहैँ यह उपासनासहितगोपनीयज्ञान तुमसे हम कहेंगे क्यौँ कितुमनि
र्दोषहो जिस्केजान्नेसे इस अशुभसंसार से मुक्त होगे १ यहउत्तमविद्यागोपनीयप
वित्र और अत्यन्त श्रेष्ठ दृष्टफल औरधर्म सहित है इसलिये यह सुखसे तुह्मारेक

श्रीभगवानुवाच इदन्तुतेगुह्यतमंप्रवक्ष्याम्यनसूयवे ज्ञा॰
नंविज्ञानसहितंयज्ज्ञात्वामोक्ष्यसेऽशुभात् १ राजविद्याराः
जगुह्यंपवित्रमिदमुत्तमम् प्रत्यक्षावगमंधर्म्यंसुसुखंकर्तु
मव्ययम् २ अश्रद्दधानाःपुरुषाधर्मस्यास्यपरंतप अप्रा
प्यमांनिवर्तन्तेमृत्युसंसारवर्त्मनि ३॥ ७ ॥ ७ ॥

रनेकेयोग्यहै क्यौँ कि इस्का फल अक्षय है २ हेअर्जुन इसमोक्षके देने वालेधर्म
श्रद्धा रहित हो पुरुष मुझको नहीँप्राप्त होताफिरइसमृत्युरूपसंसारमेँआताहै ३॥

यह संपूर्णजगत मुझसे व्याप्त है और मैं अव्यक्तमूर्त्ति हूं और चराचर आदि संपूर्ण भूत मुझी
में स्थित है मैं उनमें नहीं ४ संपूर्ण भूत मुझमें स्थित नहीं यह मेरा ऐश्वर्य योग देखो और
भूतों का धारण करनेवाला मही हूं परंतु उनमें स्थित नहीं मेरा स्वरूप ही उनका पाल

मयाततमिदंसर्वंजगदव्यक्तमूर्त्तिना मत्स्थानिसर्वभूतानि
नचाहंतेष्ववस्थितः ४ नचमत्स्थानिभूतानिपश्यमेयोगः
मैश्वरम् भूतभृन्नचभूतस्थोममात्माभूतभावनः ५ यथा
काशस्थितोनित्यंवायुःसर्वत्रगोमहान् तथासर्वाणिभूता
निमत्स्थानीत्युपधारय ६ ॥ ॥ ॥

न कर्नेवाला है ५ जैसे सर्वदा महान् वायु चारो ओर व्याप्त होकर आकाश में स्थित है प
रंतु असंग वैसे ही संपूर्ण जरायुजादि चारो प्रकार के भूत मुझमें स्थित जानो ६ ॥ ॥

हे अर्जुन संपूर्ण भूत प्रलयकाल में मेरी त्रिगुणात्मक माया में लीन होते हैं फिर उन्हे कल्प
के आदि में उत्पन्न करता हूं ७ मै अपनी त्रिगुणात्मक माया को स्वीकार करके वारं
वार प्रलय में लीन भये हुवे फिर संपूर्ण भूतों को उनके कर्मानुसार उन्हे उत्पन्न

सर्वभूतानिकौन्तेयप्रकृतिंयान्तिमामकीम् कल्पक्षयेपुनः
स्तानिकल्पादौविसृजाम्यहम् ७ प्रकृतिंस्वामवष्टभ्यविसृ
जामिपुनःपुनः भूतग्राममिमंकृत्स्नमवशंप्रकृतेर्वशात् ८
नचमांतानिकर्माणिनिबध्नन्तिधनञ्जय उदासीनवदासीन
मसक्तंतेषुकर्मसु ९ ॥ ॥ ॥ ॥

करता हूं ८ हे अर्जुन पूर्वोक्त कर्म मुझको बन्ध के कारण नहीं हो सक्ते क्यौं कि
उन कर्मो से मैं इच्छा रहित और उदासीन की नाईं स्थित हूं ९ ॥ ॥

हे अर्जुन मुझ साक्षीभूत के निमित्त से त्रिगुणात्मक प्रकृति चराचर जगत को उत्पन्न करती है औ
र इसी हेतु से संपूर्ण जगत मेरे निमित्त मात्र से वारंवार उत्पन्न और नष्ट होता जाता है १० अ
विवेकी लोग मुझको मनुष्य देह के संबंध से मनुष्यही जानकर अनादर करते हैं परंतु स

मयाध्यक्षेणप्रकृतिःसूयतेसचराचरम् हेतुनानेनकौन्तेय
जगद्विपरिवर्त्तते १० अवजानन्तिमांमूढामानुषींतनुमाश्रि
तम् परंभावमजानन्तोममभूतमहेश्वरम् ११ मोघाशामो
घकर्माणोमोघज्ञानाविचेतसः राक्षसीमासुरींचैवप्रकृतिं
मोहिनींश्रिताः १२॥

ब भूतों का कारण ईश्वर स्वरूप परम भाव मेरा नहीं जानते ११ उन्हे आसुरी प्रकृति में
स्थित जानो जिनकी आशा कर्म और ज्ञान निष्फल है और उनका चित्त विक्षिप्त औ
र हिंसा और अभिमानादि कर्म स्वभाव से युक्त है उनकी बुद्धिभी मोहाक्रांत है १२ ॥ ५५

हे अर्जुन जो विवेकी लोग सात्विक धर्म के आश्रयण हो अनन्यचित्त हो मुझ को नाशरहित
जगत का कारण जानकर भजते हैं उन्हे दैवी प्रकृति में स्थित जानो १३ ऐसे लोग सर्वदा
मेरे भजन और दृढ नेम से मेरे जानने के हेतु उद्योग करते रहते हैं और भक्ति से युक्त

महात्मानस्तुमांपार्थदैवींप्रकृतिमाश्रिताः भजन्त्यनन्यमनसो
ज्ञात्वाभूतादिमव्ययम् १३ सततंकीर्त्तयन्तोमांयतन्तश्चदृढ
व्रताः नमस्यन्तश्चमांभक्त्यानित्ययुक्ताउपासते १४ ज्ञानय
ज्ञेनचाप्यन्येयजन्तोमामुपासते एकत्वेनपृथक्त्वेनबहुधा
विश्वतोमुखम् १५

हो नमस्कार करते हुए स्थिर चित्त से मेरी उपासना करते हैं १४ कोईलोग ज्ञानयोगसेपू
जा करते हुए मेरी उपासना करते हैं अद्वैत उपास्य और उपासक भाव से बहुधा विश्वस्वरूप मुझ

वेदविहित अग्निष्टोमादि ये धर्म शास्त्र उक्त पाँचो यज्ञ पितर हेतु श्राद्धादि औषधी हो
मका मंत्र सामग्री और अग्निहोम आदि सब मही हूँ १६ इस जगत का पिता माता
धाता और पितामह मही हूँ ज्ञेय पवित्र ओंकार और ऋग्यजु सामवेद भी मही हूँ १७

अहंक्रतुरहंयज्ञःस्वधाहमहमौषधम् मन्त्रोऽहमहमेवा
ज्यमहमग्निरहंहुतम् १६ पितामहस्यजगतोमाताधाता
पितामहः वेद्यंपवित्रमोंकारऋक्सामयजुरेवच १७ गति
र्भर्ताप्रभुःसाक्षीनिवासःशरणंसुहृत् प्रभवःप्रलयःस्थानंः
निधानंबीजमव्ययम् १८॥ ७ ॥ ७ ॥

कर्म फल और जगत का पोषण करता और नियन्ता साक्षी भोग स्थान रक्षक औ
र हित कर्ता और सृष्टि कर्ता औ संहार कर्ता और स्थिति धर्म का आधार और प्र
लय का स्थान और अविनाशी कारण मही हूँ १८ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ५६

संताप करनेवाला सूर्य का तेज और जल आकर्षण करनेवाला और विसर्जन करनेवा
ला और जीवन मृत्यु और सत असत हे अर्जुन मही हूँ १९ तीनो वेद के उपासना
करने वाले यज्ञ शेष सोमलता अन्न के अनंतर कल्मष रहित हो अग्निष्टोमादि

तपाम्यहमहंवर्षंनिगृह्णाम्युत्सृजामिच अमृतञ्चैवमृत्यु
असदसच्चाहमर्जुन १९ त्रैविद्यामांसोमपाःपूतपापायज्ञै
रिष्ट्वास्वर्गतिंप्रार्थयन्ते तेपुण्यमासाद्यसुरेन्द्रलोकमश्नन्ति
दिव्यान्दिविदेवभोगान् २० ॥ ७ ॥ ७ ॥

याग समाप्त करके स्वर्ग लोक की प्रार्थना करते हुए वे लोग अपने पुण्य के अ
नुसार इंद्र लोक में दिव्य देव भवन का अनुभव करते हैं २० ॥ ७ ॥

वे लोग विशाल स्वर्गलोकका अनुभव करके पुण्यरहित होनेसे फिर मृत्युलोकमें आते हैं इसी
प्रकारसे त्रै वेदके अनुसार चलनेवाले कामादि भोगोंकी इच्छा से गमनागमनको प्राप्त हो
तेहैं २१ जोलोग केवल मेरे आश्रय हो अन्यको त्यागकर उपासना करतेहैं उन नित्ययुक्त

तेतंभुक्त्वा स्वर्गलोकंविशालंक्षीणेपुण्येमर्त्यलोकंविशन्ति॥
एवंत्रयीधर्ममनुप्रपन्नागतागतंकामकामालभन्ते २१॥
अनन्याश्चिन्तयन्तोमांयेजनाःपर्युपासते तेषांनित्याभियु॰
क्तानांयोगक्षेमंवहाम्यहम् २२ येऽप्यन्यदेवताभक्तायय
जन्तेश्रद्धयान्विताः तेपिमामेवकौन्तेययजन्त्यविधिपूर्वक
म् २३ अहंहिसर्वयज्ञानांभोक्ताचप्रभुरेवच नतुमामभिजान
न्तितत्त्वेनातश्च्यवन्तिते ॥ २४ ॥

चित्तवालोंका कुशल मही करताहूं २२ जो लोग अन्यदेवताकी भक्ति करके श्रद्धायुक्त पूजाक
रतेहैं वे भी अविधिपूर्वक मेरी ही पूजा करतेहै २३ संपूर्न यज्ञो का भोक्ता और स्वामी मही हूं इसनि

श्चयसे जो लोग मुझे नहीं जानते वे ही संसारमें गिरतेहैं २४

इंद्रादि देवतों के ब्रत वाले और पितरों के उपासक और विनाय का दि॰
भूतों के उपासना करने वाले अपने उपास्यमें प्राप्त होतेहैं और मेरे उपासक मुझमें लय
होतेहैं २५ जो भक्ति करके पत्र पुष्प फल और जल मुझे अर्पण करता है उस निश्चित चित्तवा

यान्तिदेवव्रतादेवान्पितॄन्यान्तिपितृव्रताः भूतानियान्तिभू
तेज्यायान्तिमद्याजिनोपिमाम् २५ पत्रंपुष्पंफलंतोयंयोमे॰
भक्त्याप्रयच्छति तदहंभक्त्युपहृतमश्नामिप्रयतात्मनः॥
२६ यत्करोषियदश्नासियज्जुहोषिददासियत् यत्तपस्य
सिकौन्तेयतत्कुरुष्वमदर्पणम् २७ ॥ ७ ॥

लेका फल और पुष्पादि सब मै लेताहूं २६ हे अर्जुन जो तुम करते खाते होम कर्ते
या दान और तप करते हो सो सब मुझे अर्पण करो २७ ॥ ७ ॥

इस प्रकारके शुभ अशुभ कर्मअर्पण करने से कर्म बन्धन से मुक्त होगे कौं कि सं-
न्यास योग युक्त चित्तवाले मुक्त होकर मुझ में प्राप्त होते हैं २८ मै संपूर्न भूतों
में सम हूं और मेरा कोई न शत्रु है न प्रिय जो भक्ति से मेरा भजन करते हैं वे

शुभाशुभफलैरेवंमोक्ष्यसेकर्मबन्धनैः संन्यासयोगयुक्ता-
त्माविमुक्तोमामुपैष्यसि २८ समोहंसर्वभूतेषुनमेद्वेष्योऽ
स्तिनप्रियः येभजन्तितुमांभक्त्यामयितेतेषुचाऽप्यहम् ॥
२९ अपिचेत्सुदुराचारोभजतेमामनन्यभाक् साधुरेवस
मन्तव्यःसम्यग्व्यवसितोहिसः ३० ॥ ३० ॥ ७ ॥

मुझ में हैं और मै उनमें हौं २९ जो पुरुष दुराचारी भी हो परन्तु अनन्य भक्त
होकर मुझ को भजता है वह साधु मान्ने के ही योग्य और शुभकारी है ३० ॥ ५८

हे अर्जुन जिस्की बुद्धि धर्म में शीघ्र होती है वह पुरुष वारंवार शांति को प्राप्त होता है यह
बात तुम निश्चय करके जानो कि मेरा भक्त नाश को कभी नहीं प्राप्त होता ३१ हे अर्जुन नीच
लोग और स्त्री वैश्य और शूद्रादि भी मेरे शरणागत होनेसे उत्कृष्ट गति को प्राप्त होते

क्षिप्रंभवतिधर्मात्माशश्वच्छान्तिंनिगच्छति कौन्तेयप्रति
जानीहिनमेभक्तःप्रणश्यति ३१ मांहिपार्थव्यपाश्रित्यये
पिस्युःपापयोनयः स्त्रियोवैश्यास्तथाशूद्रास्तेपियान्तिपरा
ङ्गतिम् ३२ किंपुनर्ब्राह्मणाःपुण्याभक्ताराजर्षयस्तथा अ
नित्यमसुखंलोकमिमंप्राप्यभजस्वमाम् ३३ ॥ ७ ॥

हैं ३२ सुकृती ब्राह्मण और भजनशील राजऋषी लोगों के लिये सद्गती प्राप्त होने में क्या
संदेह है इसलिये तुम इस विनाशी लोक में शरीर पाकर मेरा भजन करो ३३ ॥

केवलमेरीवोरचित्तलगाकरमेरीभक्तिमे दृढहो मेरीपूजा और मुझे नमस्कार करते हुए
मुझिको उत्तमगति समझ मुझमेँ चित्त एकाग्र करने सेमुझ को प्राप्तहोंगे ३४ राजविद्यारा

मन्मनाभवमद्भक्तोमद्याजीमांनमस्कुरु मामेवैष्यसियुक्त्वैवमात्मा
नंमत्परायणः ३४ इतिश्रीमन्महाभारतेशतसहस्रसंहितायांवै
याशिक्यांभीष्मपर्वणिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादेराजविद्याराजगुह्ययोगोनामनव॰
मोऽध्यायः ९॥ ॥ ॥श्रीभगवानुवाच भूयएवमहाबाहो॰
श्रृणुमेपरमंवचः यत्तेहंप्रियमाणायवक्ष्यामिहितकाम्यया १॥ ॥

जगुह्ययोगनिरूपणनववांअध्यायसमाप्तहुवा ९॥ ॥भगवान्कहतेहैं हेमहाबाहू अर्जु
न औरभेकउत्तमबातसुननेकेयोग्यहैसोसुनोकिजिस कारण मैंप्रेमसेतुह्मारे हितकेहे

इंद्रादिदेवगणऔर वशिष्टादिमहाऋषीलोग मेरी उत्पत्तिनहींजाननेमैंसंपूर्णदेवतोंऔर
ऋषियोंकाआदिकारणहूं २ जोपुरुषमुझको उत्पत्तिरहितसनातनऔरसंपूर्णलोककाईश्वर
जानताहैसो पुरुष मनुष्योँ मैँ मोह रहित होकर संपूर्ण पापों सेमुक्तहोताहै ३ बुद्धिअर्था

नमेविदुःसुरगणाःप्रभवन्नमहर्षयः अहमादिर्हिदे
वानांमहर्षीणाञ्चसर्वशः २ योमामजमनादिञ्चवे॰
त्तिलोकमहेश्वरम् असंमूढःसमर्त्येषुसर्वपापैःप्रमु
च्यते ३ बुद्धिर्ज्ञानमसंम्मोहःक्षमासत्यंदमःशमः॥
सुखंदुःखंभवोभावोभयञ्चाभयमेवच ४॥ १० ॥

त सारासारविवेक उत्तम ज्ञान विषय और निर्मोह सहना सत्य औरबाह्यऔरआंतरीयइं
द्रियोँ का निग्रह सुख दुख उत्पत्ति प्रलय भय और निर्भय ४॥ १० ॥ १०

अहिंसासमता तुष्टितपदान यश और अयश यह सब प्राणियों के नानाप्रकार के भाव
मुझी से उत्पन्न होतेहैं ५ भृगु आदि सात महाऋषि और स्वयंभू आदिमनू और सन
कादि चारो ज्ञानी यौं ही मेरे संकल्प से भये जिनकी यह सब ब्राह्मणादि प्रजा लोक में

अहिंसासमतातुष्टिस्तपोदानंयशोऽयशः भवन्तिभावाभू
तानांमत्तएवपृथग्विधाः ५ महर्षयःसप्तपूर्वेचत्वारोमनव
स्तथा मद्भावामानसाजातायेषांलोकइमाःप्रजाः ६ एतां
विभूतियोगंचममयोवेत्तितत्त्वतः सोविकंपेनयोगेनयुज्य
तेनाऽत्रसंशयः ७

वर्त्तमान है ६ जो पुरुष मेरी विभूति और ऐश्वर्य लक्षण योग को यथार्थ रूप से जान=
ता है सो निश्चल चित्त से एकाग्र समाधि में युक्त होताहै इसमें कुछ संदेह नहीं ७॥

क्यौं कियहसंपूर्णजगतका भृगुआदिरूपसे उत्पत्ति कारूपनहीहूं और मुझीसे बुद्धि औ
र ज्ञान इत्यादिसंपूर्णभावप्रवृत्त होतेहैं ऐसाजानकरविवेकीलोग प्रीतियुक्त होके मे
राभजन करते हैं ८ मुझमें चित्तलगाऔर चक्षुआदिबाह्यइंद्रियों को निरोधकरएक

अहंसर्वस्यप्रभवोमत्तःसर्वंप्रवर्त्तते इतिमत्वाभजंतेमांबु
धाभावसमन्विताः ८ मच्चित्तामद्गतप्राणाबोधयन्तःपरस्प
रम् कथयंतश्चमांनित्यंतुष्यन्तिचरमन्तिच ९ तेषांसतत
युक्तानांभजतांप्रीतिपूर्वकम् ददामिबुद्धियोगंतंयेनमामु
पयान्तिते १०॥

दूसरेकाप्रमाणपूर्वकबोधकरतेहुए सर्वदा मुझको अनादिकहतेहुएसंतोषऔरकै
वल्यकोप्राप्तहोतेहैं ९ वै जो सर्वदा प्रीतिसेभजनकर्त्ते और चित्तयुक्तरहतेहैं उ
नको मैं ऐसाविवेकज्ञानदेताहूं कि जिसकरके वे मुझको प्राप्त होते हैं १०॥ ॥

उनकेअनुग्रहकेहेतमैंउनकी बुद्धिवृत्ती मेस्थितहो प्रकाशमानज्ञानरूपदीपरूपसे
अज्ञानजनितसंसाररूपीअंधकारकोनाशकरताहूं ११ अर्जुनप्रश्नकरतेहैं हेकृष्णतु
म्हीपरब्रह्मचराचरकेआश्रय परमपवित्रसनातननित्यपुरुषशब्दवाचकप्रकाशस्व

तेषामेवानुकंपार्थमहमज्ञानजंतमः नाशयाम्यात्मभाव॰
स्थोज्ञानदीपेनभास्वता ११ अर्जुनउवाच परंब्रह्मपरंधाम
पवित्रंपरमंभवान् पुरुषंशाश्वतंदिव्यमादिदेवमजंविभु
म् १२ आहुस्त्वामृषयःसर्वेदेवर्षिनारदस्तथा असितोदे
वलोव्यासःस्वयंचैवब्रवीषिमे १३ ॥ ७ ॥ ७ ॥

रूपसंपूर्नदेवतोंकेआदिउत्पत्तिरहितऔरव्यापकहो १२ भृगुआदिमहाऋषीऔरना
रदजोदेवऋषीऔरअसितऔरदेवलऔरव्यासइत्यादिसबतुझारासरूपकहतेहैं औरतु

हेकेशवजोतुममुझसे कहते हो सोसबमै यथार्थजानताहूं क्यौंकि तुह्मारा स्वरूपदेवता
औरदानवलोगभीनहींजानते १४ हेपुरुषोत्तमतुमआपही अपने स्वभावसे आपकोजा
नतेहो औरतुम भूतों केउत्पन्नकरनेवाले औरउनकेनियमनकरनेवालेहो औरतुम

सर्वमेतदृतंमन्येयन्मांवदसिकेशव नहितेभगवन्व्यक्तिं
विदुर्देवानदानवाः १४ स्वयमेवात्मनात्मानंवेत्थत्वंपुरुषो
त्तम भूतभावनभूतेशदेवदेवजगत्पते १५ वक्तुमर्हस्य॰
शेषेणदिव्याह्यात्मविभूतयः याभिर्विभूतिभिर्लोकानिमां
स्त्वंव्याप्यतिष्ठसि १६

देवतों केदेवताऔरजगतकेप्रभूहो १५ हेकृष्णजिनविभूतियों से तुमइनसंपूर्णलोकों
मेंव्याप्तहोकररहतेहोतिनकेकहनेकोयोग्यतुम्हीहोक्यौंकिवहविभूतियांअतिअद्भुत हैं

हैयोगपुरुषभगवान्मै तुह्मेसर्वदाचिंतनकरतेभयेकौनसेविभूतिसोजानोश्रौरतुमकिन
किनपदार्थोमेंस्मरणकरनेकेयोग्यहौ १६ हेजनार्दनफिरतुमविस्तारकरकेअपनायौग
ऐश्वर्यश्रौरविभूतिकहो क्यौं कि इसअमृतवाक्यकेसुननेसेमैं नहीं तृप्तहोता १८ भ

कथंविद्यामहंयोगीं स्त्वांसदापरिचिन्तयन् केषुकेषु
चभावेषुचिन्त्योसिभगवन्मया १७ विस्तरेणात्मनोयोगंविभू
तिंचजनार्दन भूयःकथयतृप्तिर्हिशृण्वतोनास्तिमेमृतम् १८
श्रीभगवानुवाच हंततेकथयिष्यामिदिव्याह्यात्मविभूतयः
प्राधान्यतःकुरुश्रेष्ठनास्त्यन्तोविस्तरस्यमे १९ ॥ ॐ ॥

गवान्कहतेहैं हेकुरुश्रेष्ठअर्जुन फिरमै तुमसेअपनीदिव्यआत्मविभूतियोंमेंसेजो प्रधान है
तिन्हेंनिरूपणकरताहूं क्यौं कि मेरी विभूतियौंके विस्तार का अंत नहीं १९ ॥ ॥ ६२

हेगुडाकेश अर्जुन मैं सबभूतोंके अनित्यगुणवृत्तिमें सर्वज्ञत्वगुणों से नियंताहोकेस्थितहौं
श्रौरसबभूतोंका आदिमध्यअंतभीमहीहूं २० बारहसूर्यौंमें वामनश्रोरप्रकाशितविषयोंमें
कांतियुक्तसूर्यश्रौरवायुमें मरीचिश्रौर नक्षत्रोंमें चंद्रभी महीहूं २२ चारवेदोंमें सामवे

अहमात्मागुडाकेशसर्वभूताशयस्थितः अहमादिश्चमध्य
ञ्चभूतानामन्तएवच २० आदित्यानामहंविष्णुर्ज्योतिषां
रविरंशुमान् मरीचिर्मरुतामस्मिनक्षत्राणामहंशशी २१
वेदानांसामवेदोस्मिदेवानामस्मिवासवः इन्द्रियाणांमनः
श्चास्मिभूतानामस्मिचेतना २२ रुद्राणांशंकरश्चास्मिवित्ते २३
शोयक्षरक्षसाम् वसूनांपावकश्चास्मिमेरुःशिखरिणामह २४

द श्रौरदेवतोंमें इंद्रश्रौर ज्ञानइंद्रियोंमें मन श्रौरभूतोंमें ज्ञानशक्तिभीमहीहूं २२ रु
द्रोंमें शंकर यक्षश्रौर राक्षसोंमें कुबेर आठवसुवोंमें अग्नि श्रौरशिखरवालेपर्वतोंमेंमे

गी· टी·
६३

हेपार्थ पुरोहितो में मुख्य बृहस्पति और सेनापतियों में कार्तिकेय और तडागों में साग
रमहीहूं २४ महाऋषियोमें भृगु और वाणियों में प्रणव और यज्ञों में जपयज्ञ और
स्थावरोंमें हिमाचलमहीहूं २५ संपूर्णवृक्षों में पीपर और देवऋषियों में नारद और गं

पुरोधसांचमुख्यंमांविद्धिपार्थबृहस्पतिम् सेनानीनामहंस्कन्दः
सरसामस्मिसागरः २४ महर्षीणांभृगुरहंगिरामस्म्येकमक्षर
म् यज्ञानांजपयज्ञोस्मिस्थावराणांहिमालयः २५ अश्वत्थः
सर्ववृक्षाणांदेवर्षीणाञ्चनारदः गन्धर्वाणांचित्ररथःसिद्धा
नांकपिलोमुनिः २६ उच्चैःश्रवसमश्वानांविद्धिमामममृतोद्भ
वम् ऐरावतंगजेन्द्राणांनराणाञ्चनराधिपम् २७॥ ० ॥

धर्वों में चित्ररथ और सिद्धों में कपिलमुनि महीहूं २६ घोडों में उच्चैःश्रवसनामक
जोक्षीरसागरमें उसन्नभयाहुवाअश्वहै और गजोंमें ऐरावत और मनुष्योमें राजामहीहूं ५८ ६३

शस्त्रोमें वज्र और गउवोमें कामधेनु और प्रजाउत्पत्तिकरनेवालोमें कामदेव और स
र्पोमें वासुकीमहीहूं २८ निर्विषसर्पोमें अनंत अर्थात् आदिशेष और जलवासियों में
वरुण और पितृगणों में अर्यमा और दंडकरनेवालोंमें यमराजमहीहूं २९ दैत्योमें प्रह्लाद

आयुधानामहंवज्रंधेनूनामस्मिकामधुक् प्रजनश्चास्मिकं
दर्पःसर्पाणामस्मिवासुकिः २८ अनन्तश्चास्मिनागानांवरुणो
यादसामहम् पितॄणामर्यमाचास्मियमःसंयमतामहम् २९
प्रह्लादश्चास्मिदैत्यानांकालःकलयतामहम् मृगाणाञ्चमृ
गेन्द्रोहंवैनतेयश्चपक्षिणाम् ३० पवनःपवतामस्मिरामः
शस्त्रभृतामहम् झषाणांमकरश्चास्मिस्रोतसामस्मिजाह्न ३१

औरवशकरनेवालोमें काल और मृगोंमे राजासिंह और पक्षियोमें गरुडमहीहूं ३० पवि
त्रकरनेवालोंमें वायु और शस्त्रधारियोंमें राम और मत्स्यादिकोमें मगर और नदि

में गंगामहीहूं ३१ ॥

उसन्न वस्तुवोमें आदि अंत और मध्य और विद्याओंमें वेदांतविद्या और वादियों में वादमहीहूं ३२
वर्णों में अकार और समासों में समूहार्थक द्वंद्वसमास और क्षणादिकालोमें अक्षय
काल और पालन करनेवालों में सर्वकर्मफलविधाता धातामहीहूं ३३ हरणहारों

सर्गाणामादिरंतश्चमध्यंचैवाहमर्जुन अध्यात्मविद्याविद्या
नांवादःप्रवदतामहम् ३२ अक्षराणामकारोस्मि द्वंद्वःसामा
सिकस्यच अहमेवाक्षयःकालोधाताहंविश्वतोमुखः ३३
मृत्युःसर्वहरश्चाहमुद्भवश्चभविष्यताम् कीर्त्तिःश्रीर्वाक्च
नारीणांस्मृतिर्मेधाधृतिःक्षमा ३४ ॥ ७ ॥ ७ ॥

में मृत्यु और भविष्यकल्पोमें अभ्युदय अर्थात् दृष्टअर्थ औ लाभ महीहूं और स्त्री श
ब्दवाच्यमें कीर्त्ति वाणी संपत्ति स्मृति बुद्धि धारणशक्ति औ क्षमा मही हूं ३४ ॥ ॥ ६४

सामऋचावोंमें इंद्रस्तुतिकी बृहत्सामऋचा और छंदोबद्धमें गायत्री छंद और महीनोंमें अ
गहन और ऋतुओंमें वसंतऋतुमहीहूं ३५ छलियोमें जुवा और तेजस्वियोंमें तेज और जय
शीलोंमें जय और उद्योगियोंमें व्यवसाय और सत्ववालोंमें सत्वरूपमहीहूं ३६ वृष्णियोंमें

बृहत्सामतथासाम्नांगायत्रीछन्दसामहम् मासानांमार्गशी
र्षोहमृतूनांकुसुमाकरः ३५ द्यूतंछलयतामस्मितेजस्तेजस्वि
नामहम् जयोस्मिव्यवसायोस्मिसत्वंसत्ववतामहम् ३६ वृ
ष्णीनांवासुदेवोस्मिपाण्डवानांधनञ्जयः मुनीनामप्यहंव्या
सःकवीनामुशनाकविः ३७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

वासुदेव मैं जो तुम्हें उपदेश कर रहा हूं और पांडवोंमें तूभी मेरी विभूति है और मुनी अ
र्थात् वेदार्थमननशीलोमें वेदव्यास और कवियोंमें शुक्राचार्य महीहूं ३७ ॥ ७ ॥

शिक्षा करनेवालों में दंड और जय इच्छा करने करनेवालोंमें नीतिऔरगोपनीयोंमेंमौन
और ज्ञानियोंमें ज्ञानमहीहूं ३८ हेअर्जुनसंपूर्नभूतोंकाजोकारणहैसोमहीहूं क्योंकि वि
नाकारणकुछनहींहोसक्ता इसलियेचराचरकाकारणमहीहूं ३९ हेपरंतप अर्जुनमेरी

दंडोदमयतामस्मिनीतिरस्मिजिगीषताम् मौनंचैवास्मिगुह्या
नांज्ञानंज्ञानवतामहम् ३८ यच्चापिसर्वभूतानांबीजन्तदहम
र्जुन नतदस्तिविनायत्स्यान्मयाभूतञ्चराचरम् ३९ नान्तोऽ
स्तिममदिव्यानांविभूतीनांपरन्तप एषतूद्देशतःप्रोक्तोविभू
तेर्विस्तरोमया ४० यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वंश्रीमदूर्जितमेववा त
त्तदेवाऽवगच्छत्वंममतेजोंशसंभवम् ४१॥ ॥

दिव्यविभूतियोंका अंतनहीं संक्षेपमें तुह्मारे हेतुइनसबविभूतियोंकाविस्तारमैनेकहा ४०
जोजोविभूतितेजसंपन्नियुक्तवस्तुविस्तारसेहैसोसोमेरेअंशसे उत्पन्नजानो ४१॥ ॥

हेअर्जुन इसअनेकप्रकारकेभेदज्ञानसेक्याहोगा क्योंकियहसंपूर्णवस्तुविस्तारसेहैसोमे
रेअंशसेउत्पन्नजानो ४२ विभूतियोगनिरूपणनामदसवांअध्यायसमाप्तहुवा १० अ

अथवाबहुनैतेनकिंज्ञातेनतवाऽर्जुन विष्टभ्याहमिदंकृत्स्नमे
कांशेनस्थितोजगत् ४२ इतिश्रीमन्महाभारतेशतसहस्रसं
हितायांवैयासिक्यांभीष्मपर्वणिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषः
त्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेविभूतियोगो
नामदशमोऽध्यायः १०॥ ॥अर्जुनउवाच मदनुग्रहायपरमं
गुह्यमध्यात्मसंज्ञितम् यत्त्वयोक्तंवचस्तेनमोहोऽयंविगतोमम

र्जुनप्रश्नकरतेहैं मेरे शोकनिवृत्ति के हेतु गोपनीय परमार्थ तत्व अध्यात्मविषय
कजो वाक्य आप ने कहा उस से मेरा मोह नाश हुवा १॥ ॥ ॥

हे श्रीकृष्ण मैंने भूतोंकी उत्पत्ति और नाश वारंवार तुमसे सुना और तुम्हारा स्पष्टिकर्त्तत्वादि
महात्म्य जो अक्षय है सो भी सुना २ हे परमेश्वर जिस प्रकार से तुमने अपना स्वरूप वर्णन
किया है सो तुम्हारा ईश्वर संबंधि विश्वरूप मैं देखने की इच्छा करता हूं ३ हे प्रभू योगियों के

भवाप्ययौहिभूतानांश्रुतौविस्तरशोमया त्वत्तःकमलपत्राक्ष
माहात्म्यमपिचाव्ययम् २ एवमेतद्यथात्थत्वमात्मानंपरमेश्व
र द्रष्टुमिच्छामितेरूपमैश्वरंपुरुषोत्तम ३ मन्यसेयदितच्छ
क्यमयाद्रष्टुमितिप्रभो योगेश्वरततोमेत्वंदर्शयात्मानमव्यय
म् ४ श्रीभगवानुवाच पश्यमेपार्थरूपाणिशतशोथसहस्र
शः नानाविधानिदिव्यानिनानावर्णाकृतीनिच ५॥ ७ ॥

ईश्वर यदि मैं तुम्हारे विश्वरूप दर्शन के योग्य हों तो तुम सनातन ईश्वर रूप को दिखावो
४ भगवान् उत्तर देते हैं हे पार्थ अर्जुन मेरे लाखों प्रकार के रूप जो नानाविधि के और दिव्य

हे पार्थ अर्जुन बारह सूर्य और आठ वसु और ग्यारह रुद्र और दो अश्विनी देवतों को और उ
नचास वायु और बहुत से आश्चर्य कि जिन्हे पहिले कधी न देखे तिन्हे देखो ६ हे गुडाकेश अ
र्जुन मेरे शरीर में एकत्र स्थित चराचर सहित संपूर्ण जगत देखो इसके अनंतर और भी जो व

पश्यादित्यान्वसून्रुद्रानश्विनौमरुतस्तथा बहून्यदृष्टपूर्वा
णिपश्याश्चर्याणिभारत ६ इहैकस्थंजगत्कृत्स्नंपश्याद्यसच
राचरम् ममदेहेगुडाकेशयच्चान्यद्द्रष्टुमिच्छसि ७ नतुमांश
क्यसेद्रष्टुमनेनैवस्वचक्षुषा दिव्यंददामितेचक्षुःपश्यमेयो
॥ गमैश्वरम् ८ ॥

स्तु देखने की इच्छा करो सो सब देखल्यो ७ तुम मुझको इन आंखोंसे न देख सकोगे इस
लिये मैं तुम्हे दिव्य दृष्टि देता हूं उस दृष्टि से तुम मेरे विश्व रूप योगको देखो ८॥ ॥

संजयधृतराष्ट्रसेकहतेहैं कि हेराजायोगियोंकेईश्वर श्रीकृष्णचंद्रअर्जुन से इसकहनेके अनंतरअपनाउत्कृष्टविश्वरूपक॰दर्शनउन्हेदिखातेभये ९ अनेकमुखऔरनेत्रऔर अनेकप्रकारकेविचित्रदर्शन और अनेकप्रकाशमानभूषणसे युक्तऔरदिव्यअनेक

संजयउवाच एवमुक्त्वाततोराजन्महायोगेश्वरोहरिः दर्शया मासपार्थायपरमंरूपमैश्वरम् ९ अनेकवक्त्रनयनमनेकाद्भु तदर्शनम् अनेकदिव्याभरणंदिव्यानेकोद्यतायुधम् १० दि व्यमाल्यांबरधरंदिव्यगन्धानुलेपनम् सर्वाश्चर्यमयंदेवम नन्तंविश्वतोमुखम् ११ ॥

शस्त्रधारणकिये १० दिव्यमालाऔरवस्त्रोंसेअलंकृतऔरदिव्यगंधों से लिप्तऔरसंपूर्ण आश्चर्योंसेयुक्त स्वतःप्रकाशमानसर्वत्र मुखवालाअनंतरूपदिखाते भये ११ ॥ ७ ॥

यदिआकाशमेंसहस्रोंसूर्यों कीप्रभाएकहीसमय उदयहोतोउसपरमेश्वरकीप्रभाकेसदृश किंचितहो १२ उससमयअर्जुन देवोंकेदेवश्रीकृष्णकेशरीरमेंसंपूर्णजगतएकत्रस्थित यद्यपिरहातथापिअनेकप्रकारकेविभागसेदेखताभया १३ इसकेअनंतरअर्जुन आ

दिविसूर्यसहस्रस्यभवेद्युगपदुत्थिता यदिभासदृशीसास्याद्भासस्तस्यमहा त्मनः १२ तत्रैकस्थंजगत्कृत्स्नंप्रविभक्तमनेकधा अपश्यद्देवदेवस्यशरी रेपाण्डवस्तदा १३ ततःसविस्मयाविष्टोहृष्टरोमाधनञ्जयः प्रणम्यशि रसादेवंकृताञ्जलिरभाषत १४ अर्जुनउ॰ पश्यामिदेवांस्तवदेवदेहेसर्वां स्तथाभूतविशेषसंघान् ब्रह्माणमीशंकमलासनस्थमृषींश्चसर्वानुरगांश्च दिव्यान् १५

आश्चर्ययुक्तहोकररोमांचसहितश्रीकृष्णचंद्रकोदंडवतकरहाथबांधकेनिवेदनकरता भया १४ हेकृष्णदेवतुम्हारेशरीरमेंसंपूर्णदेवतोंकोऔरभीजरायुजांडजादिप्राणीसमू हकोऔरकमलासनपरबैठेहुएब्रह्मदेवमहादेवऔरसंपूर्ण ऋषियोंऔरदिव्यवासुकी

आदिनागोंकोदेखताहूँ १५

हेविश्वेश्वरश्रीकृस्नतुह्मारेअनेकबाहूउदरऔरमुखऔरअनंतरूपदेखताहूँपरंतुतुह्मा
रेविश्वरूपकाआदिअंतऔरमध्यतीनोनहींदेखता १६ हेश्रीकृस्नतुह्मेकिरीटगदाच
क्रधारणकियेतेजकीखानिऔरसबप्रकाशमानदेखताहूँऔरतुमप्राणीसेजाननेके

अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रंपश्यामित्वांसर्वतोऽनंतरूपम् नान्तंनमध्यंन
पुनस्तवादिंपश्यामिविश्वेश्वरविश्वरूपम् १६ किरीटिनंगदिनंचः
क्रिणञ्चतेजोराशिंसर्वतोदीप्तिमन्तम् पश्यामित्वांदुर्निरीक्ष्यंसमः
न्ताद्दीप्तानलार्कद्युतिमप्रमेयम् १७ त्वमक्षरंपरमंवेदितव्यंत्वमस्यवि
श्वस्यपरंनिधानम् त्वमव्ययःशाश्वतधर्मगोप्तासनातनस्त्वंपुरुषोम तो मे १८

योग्यनहींअग्निऔरसूर्यकीप्रकाशितप्रभाकीनाईदीप्तहोइसलियेतुमकठिनसेदि
खलाईदेतेहो १७ हेश्रीकृस्नतुमअक्षयपरमउत्कृष्टऔरज्ञानियोंकेजाननेकेयोग्यहोऔ
रतुह्मीइसजगतकेपरमाश्रयऔरतीनोकालमेंअव्ययऔरसनुआदिधर्मकेपालनकरनेवा

हेश्रीकृस्नतुमआदिमध्यऔरअंतरहितहोऔरतुह्मारेपराक्रमकाअंतनहींऔरतुमअनंतबाहू
होऔरचंद्रसूर्यतुह्मारेनेत्रहैंऔरदीप्तअग्निकीनाईतुह्मारामुखहैऔरअपनेतेजसेइसजगत
कोसंतापकरतेहो १९ हेश्रीकृस्नपरमात्माकेवलतुह्मीआकाशपृथ्वीऔरउनकेमध्यऔर

अनादिमध्यान्तमनन्तवीर्यमनन्तबाहुंशशिसूर्यनेत्रम् पश्यामित्वां
दीप्तहुताशवक्त्रंस्वतेजसाविश्वमिदंतपंतम् १९ द्यावापृथिव्योरिद
मन्तरंहिव्याप्तंत्वयैकेनदिशश्चसर्वाः दृष्ट्वाद्भुतंरूपमुग्रंतवेदंलोक
त्रयंप्रव्यथितंमहात्मन् २० अमीहित्वांसुरसङ्घाविशन्तिकेचिद्भी
ताःप्रांजलयोगृणन्ति स्वस्तीत्युक्त्वामहर्षिसिद्धसंघाःस्तुवन्तित्वांस्तु भिःपुष्कलाभिः २१

आठोदिशामेव्याप्तहोऔरतुह्माराऐसाउग्ररूपदेखकरतीनोलोककंपायमानहैं २० हेश्री
कृस्नसंपूर्णदेवतातुह्मारेशरणागतहोतेहैंऔरकोईभयसेहाथबांधअपनीरक्षाकेहेतुतु
ह्माराजयजयकारकरतेहैंऔरसनकादिकमहर्षीसिद्धलोगस्वस्तिपढकेअनेकप्रकारकीस्तुत

ल्हो इसलियेतुमअक्षरआदिपुरुषमैंजानताहूँ १८

निसेतुह्मारास्तोत्रकरतेहैं २१ ॥

एकादशरुद्र द्वादश आदित्य आठोवसु दोनो अश्विनीकुमार उनचासवायु पितृगण गंधर्व
असुर यक्ष और सिद्धादिआश्चर्ययुक्त होतुमको देखतेहैं २२ हेमहाबाहू श्रीकृष्ण तुह्मा
रा विशालरूप बहुतसे मुख नेत्र बाहू पेट जंघा पाद और अनेक बडेबडे दाँतों सेकराल है

रुद्रादित्यावसवोयेचसाध्याविश्वेश्विनौमरुतश्चोष्मपाश्च गंधर्वयक्षा
सुरसिद्धसंघावीक्षन्तेत्वांविस्मिताश्चैवसर्वे २२ रूपंमहत्तेबहुवक्त्रनेत्र
महाबाहोबहुबाहूरुपादम् बहूदरंबहुदंष्ट्राकरालंदृष्ट्वालोकाःप्रव्यथि
तास्तथाहम् २३ नभःस्पृशंदीप्तमनेकवर्णंव्यात्ताननंदीप्तविशालनेत्र
म् दृष्ट्वाहित्वाम्प्रव्यथितान्तरात्माधृतिंनविन्दामिशमंचविष्णो: २४

जिसेलोग देखकर भयकोप्राप्तभये और वैसाहीमैभी भयसेकंपायमानहूँ २३ हेविष्णु तु
ह्मारा स्वरूप आकाशसेलुए हुए प्रकाशमान और अनेकवर्णसेयुक्तहै और खुलामुख बडे
बडे नेत्रोंसेप्रकाशितहैंसो उग्र देखकर मेरामन संतापकोप्राप्तभया और मुझमें धैर्य और शम

हेजगतनिवासी श्रीकृष्ण तुह्मारे बडे बडे दाँतों से भयानकमुख प्रलयकालकी अग्निके
समान देखकर दिशाभ्रम हुवा और सुखविस्मरण हुवा इसलिये हेदेवेश मै तुह्मारे शरणागत
हूँ मुझपर अनुग्रहकरो २५ हेश्रीकृष्ण ये धृतराष्ट्रकेपुत्र राजमंडलीसहित भीष्म द्रोण औ

दंष्ट्राकरालानिचतेमुखानिदृष्ट्वैवकालानलसन्निभानि दि
शोनजानेनलभेचशर्मप्रसीददेवेशजगन्निवास २५ अमी
चत्वांधृतराष्ट्रस्यपुत्राःसर्वेसहैवावनिपालसंघैः भीष्मद्रो
णःसूतपुत्रस्तथासौसहास्मदीयैरपियोधमुख्यैः २६ व
क्त्राणित्वेत्वरमाणाविशन्तिदंष्ट्राकरालानिभयानकानि॥
केचिद्विलग्नादशनान्तरेषुसंदृश्यन्तेचूर्णितैरुत्तमांगैः २७

रकर्ण हमारेयोधों केसाथ २६ तुह्मारे भयानक अति उग्र मुखमें शीघ्रताकरतेहुये चले
जातेहैं उनमेंसे कोई तुह्मारे दाँतों मे लटकेहुये और कोई फटेमस्तकसे देखपडतेहैं २७

जैसेनदियोंके जलकावेगसीधेसमुद्रमें शीघ्रतासेजाताहैवैसेहीयेभीष्मद्रोणआदि
राजालोगतुह्मारेप्रकाशितमुखमेंचलेजातेहैं २८ जैसेजलतीहुईअग्निमेंपतंगेवडेवे
गसे नाशकेहेतुजागिरतेहैं वैसेहीयेलोगनाशहोनेकेलियेतुह्मारेमुखमेंवेगसेजाते

यथानदीनांबहवोंबुवेगाःसमुद्रमेवाभिमुखाद्रवन्ति तथातवामीनर
लोकवीराविशन्तिवक्राण्यभिविज्वलन्ति २८ यथाप्रदीप्तंज्वलनंपतं
गाविशन्तिनाशायसमृद्धवेगाः तथैवनाशायविशन्तिलोकास्तवापि
वक्राणिसमृद्धवेगाः २९ लेलिह्यसेग्रसमानःसमन्ताल्लोकान्समग्रा
न्वदनैर्ज्वलद्भिः तेजोभिरापूर्यजगत्समग्रंभासस्तवोग्राःप्रतपन्तिवि अ॰ ११

हैं २९ हेविस्नुतुमअपनेप्रज्वलितमुखमेंचारोवोरसेसंपूर्नलोगोंकोनिगलतेहुयेखाते
जातेहो औरतुह्माराप्रकाशअपनेपराक्रमसेजगतकोघेरकर संताप करताहै ३० ॥ ७०

हेदेवश्रीकृस्न तुमऐसाउग्ररूपधारणकियेहुये कौनहो सोकहो मैतुमकोनमस्कार
करताहूँ प्रसन्नहोकरवरदो औरतुह्मारीलीला और विलासकीप्रवृत्ती में नहींजान
ता क्यौंकितुमआदिऔर सनातन हो इसलियेतुह्मेजाननेकीइच्छाकरताहूँ ३१

आख्याहिमेकोभवानुग्ररूपोनमोस्तुतेदेववरप्रसीद विज्ञातुमिच्छामि
भवन्तमाद्यंनहिप्रजानामितवप्रवृत्तिम् ३१ श्रीभगवानुवाच का
लोस्मिलोकक्षयकृत्प्रवृद्धोलोकान्समाहर्तुमिहप्रवृत्तः ऋतेपित्वां
नभविष्यन्तिसर्वेयेवस्थिताःप्रत्यनीकेषुयोधाः ३२ ॥ ७ ॥

भगवान्उत्तरदेतेहैं मै लोगोंकाक्षयकरनेवाला कालहूँ और इहांके लोगोंकेना
शकेहेतुबढगयाहूँ तुझे छोड़ [illegible] कोई न बचैंगे ३२ ॥ ७ ॥

हे दोनों हाथ से बाण चलाने वाले अर्जुन तुम युद्ध के हेतु खडे होकर यशको प्राप्त हो
दुर्योधन आदि शत्रुवों को जीत अष्ट ऐश्वर्य युक्त राज को अनुभव करो क्यौं कि धार्त
राष्ट्र लोगों को मैने पहिले ही से मारा है तुम केवल निमित्त मात्र होहु ३३ द्रोण भी

तस्मात्त्वमुत्तिष्ठयशोलभस्वजित्वाशत्रून्भुंक्ष्वराज्यंसमृद्धम्
मयैवैतेनिहताःपूर्वमेवनिमित्तमात्रंभवसव्यसाचीन्
३३ द्रोणञ्चभीष्मञ्चजयद्रथञ्चकर्णन्तथान्यानपि॰
योधवीरान् मयाहतास्त्वंजहिमाव्यथिष्ठायुध्यस्वजे
तासिरणेसपत्नान् ३४ ॥ ७ ॥ ७ ॥

ष्म जयद्रथ और भी करण ऐसे ही और वीरों को महीने मारा है अब तुम जीतो
भय को मत प्राप्त हो और युद्ध करो रण में शत्रुवों को जीतोगे ३४ ॥ ७ ॥

संजेय धृतराष्ट्र से कहते हैं कि किरीटी अर्जुन कृष्ण के वाक्य सुनकर हाथ जोड कर
कंपायमान हो नमस्कार कर भयसे नम्र हो गद्गद वाणीसे कहा ३५ अर्जुन
प्रश्न करते हैं हे श्रीकृष्ण तुह्मारे महात्म के संकीर्त्तन से जगत संतोष और अ

सञ्जयउवाच एतच्छ्रुत्वावचनंकेशवस्यकृताञ्जलिर्वेपमानः
किरीटी नमस्कृत्वाभूयएवाहकृष्णंसगद्गदंभीतभीतःप्रण॰
म्य ३५ अर्जुनउवाच स्थानेहृषीकेशतवप्रकीर्त्त्याजगत्प्र
हृष्यत्यनुरज्यतेच रक्षांसिभीतानिदिशोद्रवन्तिसर्वेनम
स्यन्तिचसिद्धसंघाः ३६ ॥ ७ ॥ ७ ॥

नुराग को प्राप्त होता है और राक्षस गण भयसे चारोवोर भाग जाते हैं और सि
द्धों का समूह तुम को नमस्कार करता है सो यह युक्त ही है ३६ ॥ ७ ॥

हे कृष्ण महात्मा सिद्धगण क्यौं न तुमको नमस्कार करैंगे क्यौंकि तुम ब्रह्मा के गुरु औ रजन का भी हो और तुम अनंत और देवतों के ईश और जगत के नेवासस्थान और अविनाशी हो और व्यक्त अव्यक्त से परभी तुह्मी हो ३७ हे अनंतरूप श्री कृष्ण तुह्मी देवतों

कस्माच्च तेन नमेरन्महात्मन्गरीयसे ब्रह्मणोप्यादिकर्त्रे अनन्त देवेश जगन्निवास त्वमक्षरं सदसत्तत्परं यत् ३७ त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणः त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम् वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम त्वया ततं विश्वमनन्तरूपम् ३८ ॥ ० ॥

के आदि और पुराण पुरुष और जगत के आदिकारण और जाननेवाले और जानने योग्य वस्तु और मोक्षस्थान भी तुह्मी हो क्यौंकि तुह्मी संपूर्ण जगत में व्याप्त हो ३८ ॥ ७२

हे श्री कृष्ण तुह्मी वायु यम अग्नि वरुण चंद्र प्रजापति ब्रह्मा और ब्रह्मा के भी जनक हो मैं सहस्र वार आपको नमस्कार कर और फिर फिर वारंवार नमस्कार करता हूं ३९ हे अनंतपराक्रमी तुमको आगे पीछे और सर्वत्र नमस्कार करता हूं क्यौं कि सर्वत्र सर्वरूप से तुह्मी हो

वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशांकः प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च नमोनमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः पुनश्च भूयोपि नमोनमस्ते ३९ नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते नमोस्तु ते सर्व्वत एव सर्व्व अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं सर्वं समाप्नोषि ततोसि सर्वः ४० सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं हे कृष्ण हे यादव हे सखेति अजानता महिमानं तवेदं मया प्रमादात्प्रणयेन वापि ४१ ॥

और तुह्मारी गति का अंत नहीं सब में व्याप्त और सब से परभी तुह्मी हो ४० तुमको मित्र जान कर हे श्री कृष्ण हे यादव हे सखा कर के अमर्याद वचन जो मैंने आप की महिमा न जानकर कहा है सो अविवेकता वा प्रीति से कहा उसे क्षमा करना चाहिये ४१ ॥

हे श्रीकृष्ण और जो कुछ ठट्ठे या विहार या शयन या आसन या भोजन के समय एकांत में
या जनों के सामने असत्कार मुझ से भया है उसके क्षमा के लिये मैं आप से हे अच्युत प्रार्थना कर्ता
हूं ४२ इस चराचर लोक के आदिकारण और पूज्य गुरू और श्रेष्ठ भी तुम्हीं हो क्यौं कि तुम्हारे प्रभा॰

यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि विहारशय्यासनभोजनेषु एकोऽथवाप्य
च्युत तत्समक्षं तत्क्षामये त्वामहमप्रमेयम् ४२ पितासि लोकस्य चरा
चरस्य त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान् न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोन्यो
लोकत्रयेप्यप्रतिमप्रभावः ४३ तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायं प्रसाद
ये त्वामहमीशमीड्यम् पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः प्रियः प्रियायार्हसि

व के समान कोई नहीं इसलिये स्वर्ग मर्त्य पाताल तीनो लोक में तुम्हारे समान या तुम से अधिक॰
कोई नहीं ४३ इसलिये आप को नमस्कार करके प्रार्थना करता हूं क्यौं कि आप स्तुति के योग्य
और ईश्वर हो जैसे पिता पुत्र का और सखा अपने मित्र का और अपने प्रिय का सहन करता है वै

हे जगन्निवास पहिले जो विश्वरूप तुम्हारा कभी नहीं देखा सो देखकर हर्ष को प्राप्त भया
अब मेरा मन व्याकुल है इसलिये पहिला रूप दिखावो और हे देवश मुझ पर अनुग्रह करो
४५ किरीट गदा धारण किये और चक्र हाथ में लिये हुये आप को देखा चाहता हूं वैसे ही चतु

अदृष्टपूर्वं हृषितोस्मि दृष्ट्वा भयेन च प्रव्यथितं मनो मे तदेव मे दर्शय दे
वरूपं प्रसीद देवेश जगन्निवास ४५ किरीटिनं गदिनं चक्रहस्तमिच्छा
मि त्वां द्रष्टुमहं तथैव तेनैव रूपेण चतुर्भुजेन सहस्रबाहो भव विश्वमू
र्ते ४६ श्रीभगवानुवाच मया प्रसन्नेन तवार्जुनेदं रूपं परं दर्शितुमात्म
योगात् तेजोमयं विश्वमनन्तमाद्यं यन्मे त्वदन्येन न दृष्टपूर्वम् ४७

र्भुज रूप से युक्त हो क्यौं कि आप सहस्रबाहु और विश्वमूर्त्ति हो ४६ भगवान् कहते हैं हे अ
र्जुन हमारी प्रसन्नता और आत्मयोग से इस परम उत्कृष्ट रूप का तुम को दर्शन भया और यह
रूप मेरा तेजमय विश्वस्वरूप कि जिसका आदि अंत नहीं तुम्हारे व्यतिरिक्त दूसरे ने कभी नहीं देखा

हे कुरुश्रेष्ठअर्जुनइसमनुष्यलोकमेंवेदयज्ञअध्ययनदानक्रियाऔरउग्रतपस्याआदि
सेयहमेरास्वरूपतुम्हारेव्यतिरिक्तदूसरेकेदेखनेकेयोग्यनहीं ४८ हेअर्जुनइसप्रकारका
मेराघोरस्वरूपदेखकरव्यथाऔरमोहकोमतप्राप्तहोऔरभयकोत्यागकरस्वस्थचित्तहोकि

नवेदयज्ञाध्ययनैर्नदानैर्नचक्रियाभिर्नतपोभिरुग्रैः एवंरूपःशक्यअ-
हंनृलोकेद्रष्टुंत्वदन्येनकुरुप्रवीर ४८ मातेव्यथामाचविमूढभावोदृष्ट्वा
रूपंघोरमीदृङ्ममेदम् व्यपेतभीःप्रीतमनाःपुनस्त्वंतदेवमेरूपमिदं
प्रपश्य ४९ संजयउवाच इत्यर्जुनंवासुदेवस्तथोक्त्वास्वकंरूपंदर्शया
मासभूयः आश्वासयामासचभीतमेनंभूत्वापुनःसौम्यवपुर्महात्मा ५०

रतुममेरापूर्वरूपअबदेखो ४९ संजयधृतराष्ट्रसेकहतेहैंकिइसप्रकारसेश्रीकृष्णवासुदे
वकहकरअर्जुनकोअपनापूर्वरूपदिखातेभयेऔरभयमानअर्जुनकोश्रीकृष्णमहात्माशां

अर्जुन कहते हैं हेजनार्दनतुम्हारायहसुंदरभव्यरूप देखकरअबभयसेनिवृत्तहोस्वस्थचि
त्तसे अपनेस्वभावकोप्राप्तभयाहूं ५१ भगवान्कहतेहैंकिहेअर्जुनमेरा यहरूपकष्टसे-
भीदेखनेके योग्य नहीं सोतुमने देखा और इसरूपको इंद्रादि देवता लोग भी सर्वदादे

अर्जुनउवाच दृष्ट्वेदंमानुषंरूपंतवसौम्यंजनार्दन इदानीम-
स्मिसंवृत्तःसचेताःप्रकृतिंगतः ५१ श्रीभगवानुवाच सुदुर्दर्श
मिदंरूपंदृष्टवानसियन्मम देवाअप्यस्यरूपस्यनित्यंदर्शन
कांक्षिणः ५२ नाहंवेदैर्नतपसानदानेननचेज्यया शक्यएवं
विधोद्रष्टुंदृष्टवानसिमांयथा ५३ ॥ ० ॥ ० ॥

खनेकीइच्छाकरतेहैं ५२ मैचारो वेद तपस्या दान और यज्ञादि से इस प्रकार से दे
खने के योग्य नही हूं कि जैसा तुमने मुझे देखा है ५३ ॥ ० ॥ ० ॥

गी॰टी॰ ७५ हे परंतप अर्जुन यह मेरा स्वरूप केवल एकाग्र भक्ति ही से यथार्थ जानने देखने और अ
भेद ज्ञान से युक्त होने के योग्य है और अन्य उपाय से नहीं ५४ हे पांडव अर्जुन जो
मेरे हेतु कर्म करता है और मुझे परम उत्कृष्ट जानता है और रागादि से रहित होक

भक्त्यात्वनन्ययाशक्यअहमेवंविधोऽर्जुन ज्ञातुंद्रष्टुंचतत्त्वेनप्रवेष्टुंचपरं
तप ५४ मत्कर्मकृन्मत्परमोमद्भक्तःसंगवर्जितः निर्वैरःसर्वभूतेषुयःसमा
मेतिपांडव ५५ इतिश्रीमन्महाभारतेशतसहस्रसंहितायांवैय्यासिक्यांभी
ष्मपर्वणिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णा
र्जुनसंवादेविश्वरूपदर्शनोनामएकादशोऽध्यायः ११ ॥ ७ ॥

र मेरी भक्ति करता है और संपूर्ने भूतों से निर्वैर रहता है वही मुझ को प्राप्त होता है
५५ विश्व रूप दर्शन नामक ग्यारह वां अध्याय समाप्त हुवा ११ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७५

अर्जुन प्रश्न करते हैं हे श्री कृष्ण जो लोग सर्वदा भक्तिमार्ग के अनुसार तुम्हारी उपासना करते
हैं और जो अविनाशी निर्गुण परब्रह्म की ज्ञानमार्ग से उपासना करते हैं इन दोनों में से श्रेष्ठ कौ
न है १ भगवान उत्तर देते हैं जो लोग मुझ में मन स्थिर करके उत्तम श्रद्धा से युक्त हो सर्वदा एका

अर्जुनउवाच एवंसततयुक्तायेभक्तास्त्वांपर्युपासते येचा
प्यक्षरमव्यक्तंतेषांकेयोगवित्तमाः १ श्रीभगवानुवाच मय्या
वेश्यमनोयेमांनित्ययुक्ताउपासते श्रद्धयापरयोपेतास्तेमे
युक्ततमामताः २ येत्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्तंपर्युपासते स
र्वत्रगमचिन्त्यंचकूटस्थमचलंध्रुवम् ३ ॥ ७ ॥

ग्र चित्त रह मेरी उपासना करते हैं वे मेरे मत के अनुसार अति उत्तम हैं २ जो लोग अविना
शी और लक्षण प्रमाण से जानने के योग्य और इंद्रियों से अविषय और अचिंत्य और मा
या रूप प्रपंच में अधिष्ठान रूप से स्थित और स्थिर ऐसे ब्रह्म की उपासना करते हैं ३ ॥

गी॰टी॰ ७६

इन्द्रियग्रामकोरोककरसर्वत्रसमबुद्धिरख कर सबभूतोंकाहितआचरणकरते भये वे
मुझमें प्राप्त होते हैं ४ परन्तु ज्ञानमार्गवालों को अव्यक्त रूप पर ब्रह्म में चित्तलगा
नेसे क्लेश होता है क्यों कि देहधारियों को निराकार को जाननायही दुःख है ५

सन्नियम्येन्द्रियग्रामंसर्वत्रसमबुद्धयः तेप्राप्नुवन्तिमा
मेवसर्वभूतहितेरताः ४ क्लेशोऽधिकतरस्तेषामव्यक्ता
सक्तचेतसाम् अव्यक्ताहिगतिर्दुःखंदेहवद्भिरवाप्यते
५ येतुसर्वाणिकर्माणिमयिसंन्यस्यमत्पराः अनन्येनैवयो
गेनमांध्यायन्तउपासते ६ ॥ ७ ॥ ७ ॥

जो लोग मेरे हेतु सम्पूर्ण कर्मों को त्याग मुझी को परम पुरुषार्थ जान अद्वैतयोग
से मुझे ध्यान करते हुए उपासना कर ते हैं ६ ॥ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७६

हे पार्थ अर्जुन उनको मृत्युरूपी संसार सागर से बहुत शीघ्र मैं पार करता हूं यदिवेलो
ग मुझमेंचित्त को एकाग्रतासेस्थिर करैं ७ हेअर्जुन संकल्पविकल्पकआत्मकमनऔरव्यव
सायात्मक बुद्धि को मुझमें स्थिर करोतो मुझमें प्राप्त होंगे इसमें कुछ संशय नहीं ८ हे

तेषामहंसमुद्धर्त्तामृत्युसंसारसागरात् भवामिनचिरात्पार्थमय्यावेशितचे
तसाम् ७ मय्येवमनआधत्स्वमयिबुद्धिंनिवेशय निवसिष्यसिमय्येवअ
तऊर्ध्वंनसंशयः ८ अथचित्तंसमाधातुंनशक्नोषिमयिस्थिरम् अभ्या
सयोगेनततोमामिच्छाप्तुंधनंजय ९ अभ्यासेप्यसमर्थोसिमत्कर्मपर
मोभव मदर्थमपिकर्माणिकुर्वन्सिद्धिमवाप्स्यसि १० ॥ ७ ॥

धनंजय यदि मुझमें स्थिरचित्तनिवेशन कर सके तो अभ्यास योग से मुझमें प्राप्त होने
के लियेप्रयत्न करो ९ यदिअभ्यास नकरसको तो व्रतआदिका मेरी प्रीतिके हेतुआच
रणकरो क्योंकि मेरी प्रीति के लिये कर्म के आचरण सेमोक्षको प्राप्त होगे १० ॥ ॥

यदिमेरे अनुग्रह के हेतु कर्मभीनकरसकोतो संपूर्णकर्मईश्वरऽर्पणकरकेफलत्यागकरोऽ
औरनियमितचित्तहोमेरेहीशरणआवोतो सिद्धि को प्राप्तहोगे ११ अभ्यासयोगसेज्ञानमंगल
दायकहैऔर ज्ञानसे ध्यान श्रेष्ठऔर ध्यानसे कर्मफल त्यागकरना अतिउत्तम इस्केअनं

अथैतदप्यशक्तोसिकर्त्तुमद्योगमाश्रितः सर्वकर्मफलत्यागंततः
कुरुयतात्मवान् ११ श्रेयोहिज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानंविशिष्य
ते ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम् १२ अद्वेष्टा
सर्वभूतानांमैत्रःकरुणएवच निर्ममोनिरहंकारःसमदुःखसुखः

अ॰ १२

तरसंसारसेशांतिकोप्राप्त होताहै १२ संपूर्णभूतोंसे द्वेषरहितहोमित्रताकरैवेऔरदीनोंपरद
याऔरममताऔर अहंकारसे रहित हो सुखदुखकोसमानजाने औरक्षमाशील हो १३ ॥

सर्वदासंतोषयुक्तऔयोगयुक्तरहैऔर चित्तएकाग्रदृढनिश्चयवालाहो बुद्धिऔरमनमुझ
मैंअर्पणकरैऐसामेराभक्तमुझकोप्रियहै १४ जिस्सेजनलोगभयकोनहींप्राप्तहोते औरनज
नोंसे वहभयकोप्राप्तहोताहर्षअसहन भयऔर चित्तकीव्याकुलतासेजोपरेहैवहीमेरा भ

सन्तुष्टःसततंयोगीयतात्मा दृढनिश्चयः मय्यर्पितमनोबुद्धिर्योमद्भक्तःस
मेप्रियः १४ यस्मान्नोद्विजतेलोकोलोकान्नोद्विजतेचयः हर्षामर्षभ
योद्वेगैर्मुक्तोयःसचमेप्रियः १५ अनपेक्षःशुचिर्दक्षोउदासीनोगतव्य
थः सर्वारंभपरित्यागीयोमद्भक्तःसमेप्रियः १६ योनहृष्यतिनद्वेष्टिनः
शोचतिनकांक्षति शुभाशुभपरित्यागीभक्तिमान्यःसमेप्रियः १७ ॥

क्तहै १५ अपेक्षारहितपवित्रसमर्थउदासीनऔरपीडारहितहोसंपूर्णप्रयत्नकोत्यागकरैसो
मेराअत्यंतप्रियहै १६ जोजनहर्षकोनहींप्राप्तहोताऔरनकिसीसेद्वेषरखतानकुछसोचक
र्तानकिसीकीआशारखताऔशुभअशुभफलकोत्यागकर्त्ताभयामेरीभक्तिकर्ताहैसोमेराप्रियहै

शत्रुमित्रऔरमानअपमानकोसमानजानेऔरशीतउस्नऔर सुख दुखमैं समतारख असंगर
है १८ निंदाऔरस्तुतिकोसमानजानप्रयोजनकेअनुसार वार्ताकरैऔरजो प्राप्तहो उसेसंतुष्ट
हो एकत्रनिवासी नरहैऔरबुद्धिस्थिररक्खै ऐसाभक्तिमानपुरुषमुझे बहुतप्रियहै १९ हेअर्जु

समःशत्रौचमित्रेचतथामानापमानयोः शीतोष्णसुखदुःखे
षुसमःसंगविवर्जितः १८ तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनीसंतुष्टोयेन
केनचित् अनिकेतःस्थिरमतिर्भक्तिमान्मेप्रियोनरः १९ येतु
धर्म्यामृतमिदंयथोक्तंपर्युपासते श्रद्दधानामत्परमाभक्तास्ते
॥ तीवमेप्रियाः २० ॥

नयहधर्मरूपमोक्षसाधनउपायजोअमृततुल्यहैजैसामैंनेकहा उसीप्रकारसेश्रद्धापूर्वकमु
झ कोपरमपुरुषार्थजानकेजो भक्तिसेउपासना करते हैं वे मुझे अत्यंत प्रिय हैं २० ॥

भक्तियोगनिरूपणनामकबारहवाँअध्यायसमाप्तहुवा १२॥ ॥अर्जुनप्रश्नकरतेहैं कि हे
केशवप्रकृतिपुरुषक्षेत्रक्षेत्रज्ञज्ञानऔर ज्ञेयइन्हेमैंजानताहूं सो कृपा करके कहो १ हे

इतिश्रीमन्महाभारतेशतसहस्रसंहितायांवैय्याशिक्यांभीष्म
पर्वणिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादेभक्तियोगोनामद्वादशोऽध्यायः १२॥ ॥
अर्जुनउवाच प्रकृतिंपुरुषंचैवक्षेत्रंक्षेत्रज्ञमेवच एतद्वेदितु
मिच्छामिज्ञानंज्ञेयंच केशव १ श्रीभगवानुवाच इदंशरीरं
कौन्तेयक्षेत्रमित्यभिधीयते एतद्योवेत्तितंप्राहुःक्षेत्रज्ञइतित

अर्जुन इस भोग स्थान शरीर को क्षेत्र कहते हैं इस्को जो यथार्थ करके जानता है
उस्को विवेक ज्ञान वाले पुरुष क्षेत्रज्ञ कहते हैं २ ॥ ७ ॥ ७ ॥

हेभारत संपूर्नक्षेत्रोंमें अनुगत क्षेत्रज्ञ मुझीकोजानो क्षेत्रऔरक्षेत्रज्ञका ज्ञानमेराहीज्ञान हैजो मोक्षका हेतुहै २ वहजोस्वरूपसेजडऔर इच्छादिजिसका धर्म हैऔरविकाररूपइंद्रियोंसे युक्तऔर प्रकृति और पुरुषके संयोगसे होताहैसो क्षेत्र है औरजो अचिंत्यऐश्वर्यआदिप्रभावोंसे परिपूर्ण है सो क्षेत्रज्ञ है यहसंक्षेपमें मुझसे सुनो ४ वशिष्ठादिमहाऋषियोंने योग शा

क्षेत्रज्ञंचापिमांविद्धिसर्वक्षेत्रेषुभारत क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानंयत्तज्ज्ञानंमतंमम
२ तत्क्षेत्रंयच्चयादृक्चयद्विकारियतश्चयत् सचयोयत्प्रभावश्चतत्समासेन
मेशृणु ४ ऋषिभिर्बहुधागीतंछन्दोभिर्विविधैःपृथक् ब्रह्मसूत्रपदैश्चै

स्त्रोंमें औरध्यानधारणा विषयरूप वैराजादिरूपमें कहाहै और अनेकप्रकारके नित्य नैमित्तिककाममें विषयक वेदवाक्यों में यजनीयनानादेवतादिरूपसे प्रतिपादनकियाहैऔर ब्रह्मसूत्रअद्वैतप्रतिपादकवेदांतवाक्योंसेभीनिरूपणकियाहैजोवाक्ययुक्तीऔरपूर्वपक्षसिद्ध

पृथ्वीआदिपंचमहाभूत अहंकारबुद्धीऔरप्रकृति मिलकर आठ और उसे ज्ञानइंद्रीऔरकर्मइंद्री और मनमिलकरग्यारह औरपांचज्ञानइंद्रियों के विषय आदि सबमिलकर चौबीसतत्वहैं ६ इच्छाद्वेष सुख दुःख शरीरज्ञानात्मिका मनोवृत्ति धैर्य इन शक्तिकेसमू

महाभूतान्यहंकारोबुद्धिरव्यक्तमेवच इंन्द्रियाणिदशैकंचपंचचेन्द्रिय
गोचराः ६ इच्छाद्वेषःसुखंदुःखंसंघातश्चेतनाधृतिः एतत्क्षेत्रंसमा
सेनसविकारमुदाहृतम् ७ अमानित्वमदम्भित्वमहिंसाक्षान्तिरा
र्जवम् आचार्योपासनंशौचंस्थैर्यमात्मविनिग्रहः ८ ॥ ८ ॥

होंकोविकारसहितसंक्षेपसेक्षेत्रकहा है ७ अपनागुण बखाननकरै और कपटत्यागकरै औरदूसरेकोपीडानदेऔरक्षमा कर औरसीधेमार्ग सेचलै और गुरूकी सेवा कियाकरैऔरबाह्यशौचऔर रागादिसे रहितहो आंतरिकशौच से पवित्ररहैऔरस्थिर होमन कोरोकरहै ८

इन्द्रियोंकेविषयरागादिसेविरक्तहोअहंकारत्यागदेजन्ममरणबुढापाव्याधिऔररागादि
मेंदुःखऔरदोषदेखतारहै १० पुत्रदारगृहादिमेंप्रीतित्यागकरना और उनके दुःखसेअ
पनेमेंदुःखन आरोप करना और इष्ट और अनिष्टवस्तु की प्राप्ति से सर्वदा समान र

इन्द्रियार्थेषुवैराग्यमनहंकारएवच जन्ममृत्युजराव्या
धिदुःखदोषानुदर्शनम् ९ असक्तिरनभिष्वंगःपुत्रदारगृ
हादिषु नित्यंचसमचित्तत्वमिष्टानिष्टोपपत्तिषु १० मयि
चानन्ययोगेनभक्तिरव्यभिचारिणि विविक्तदेशसेवित्व
मरतिर्जनसंसदि ११ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

है १० मेरी एकाग्र चित्त से एकान्त में भक्ति करै और जिस देश में चित्त प्रसन्न हो
उसका आश्रयण करै और मूर्खों की सभा में प्रीति न करै ११ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

अध्यात्मअर्थात् ईश्वरविषयकज्ञानकोनित्य सेवनाकरै औरतत्व ज्ञान अर्थात् जीवईश्व
रका अभेदज्ञान और उस्के प्रयोजन मोक्ष के हेतु सर्वदा यत्न करतारहै अमानित्व
त्वादिसे लेकर बोसब प्रकार के ज्ञान साधन जो कहे हैं वही ज्ञान कहलाता है इ

अध्यात्मज्ञाननित्यत्वंतत्वज्ञानार्थदर्शनम् एत
ज्ज्ञानमितिप्रोक्तमज्ञानंयदतोऽन्यथा १२ ज्ञेयंय
त्तत्प्रवक्ष्यामियत्ज्ञात्वामृतमश्नुते अनादिमत्प
रंब्रह्मनसत्तन्नासदुच्यते १३ ॥ ॐ ॥

ससे व्यतिरेकजोहै सो अज्ञान १२ ज्ञेय वस्तु को कहते हैं किजिस्के जानने सेपुरु
ष मोक्ष को प्राप्त होता है और वह उत्पत्ति और नाश से रहित और निरतिशय
परब्रह्म है और वह प्रमाणों से निषेध और विधि का विषय नहीं १३ ॥

वह पर ब्रह्म हाथ पाँव नेत्र और मुखसे सर्वत्र व्याप्त है और श्रोत्र इन्द्रियोँसे सर्वत्र यु
क्त होकर जगतको घेरेहुये स्थितहै १४ संपूर्णचक्षुरादिइन्द्रियोँसे रूपादिगुणोँका प्र
काशकहै और आप सब इन्द्रियोँसे रहित असंग और संपूर्न जगतका आधार है

सर्वतःपाणिपादन्तत्सर्वतोक्षिशिरोमुखम् सर्वतःश्रुतिमल्लोकेस
र्वमावृत्यतिष्ठति १४ सर्वेन्द्रियगुणाभासंसर्वेन्द्रियविवर्जितम् अ
सक्तंसर्वभृच्चैवनिर्गुणंगुणभोक्तृच १५ बहिरन्तश्चभूतानामच
रंचरमेवच सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयंदूरस्थंचान्तिकेचतत् १६॥ ॥

और सत्वादिगुणोँसे रहित और उनका भोक्ता औ पालकहै १५ बाह्य और अंतर
मेँ सबभूतोँके वह पर ब्रह्म व्याप्त है और स्थावर और जंगम रूप वहीहै सूक्ष्म
होनेसे वहजाना नहीँ जाता और व्यवहार रूप प्रकृतिसे परहै परंतु विवेकियोँके

संपूर्णभूतोँमे कारण रूपसे आप अभिन्न और कार्यरूपसे भिन्नकीनांई स्थितहै और चरा
चरभूतोँ कापालक और प्रलयकालमेँ नाशक और सृष्टिकालमेँ उत्पत्तिकर्ता भी आपही
है १७ वहपरब्रह्मप्रकाशकोँका भीप्रकाशक है और अज्ञानरूपी अंधकारसे परे ज्ञान

अविभक्तंचभूतेषुविभक्तमिवचस्थितम् भूतभर्तृचतज्ज्ञे
यंग्रसिष्णुप्रभविष्णुच १७ ज्योतिषामपितज्ज्योतिस्तमसःप
रमुच्यते ज्ञानंज्ञेयंज्ञानगम्यंहृदिसर्वस्यधिष्ठितम् १८ इति
क्षेत्रंतथाज्ञानंज्ञेयंचोक्तंसमासतः मद्भक्तएतद्विज्ञायमद्भावायो

और ज्ञेय और ज्ञान से प्राप्त करने के योग्य और संपूर्न प्राणियोँ के हृदय मेँ नियन्ता
होकर स्थित भी वही है १८ इस प्रकार से संक्षेप मेँ क्षेत्र ज्ञान औ ज्ञेय तत्व का ल
क्षण निरूपण किया मेरा भक्त इसके जाननेसे ब्रह्मभावको प्राप्त होनेके योग्य होता है १९ ॥

गी॰टी॰ प्रकृतिऔर पुरुष दोनोंको अनादिजानो औरप्रकृतिविकारदेह इंद्रियादिऔरसुखदुख
८२ आदिगुणकोप्रकृतिजन्यजानो २० देहादिकार्यऔरसुखदुखआदिसाधनइंद्रियोंको
तदाकारपरिणाम होनेमें प्रकृतिकारणकहलातीहै वैसेही पुरुष सुखदुख अनुभवकर

प्रकृतिंपुरुषंचैवविद्ध्यनादीउभावपि विकारांश्चगुणांश्चैवविद्धिप्र
कृतिसंभवान् २० कार्यकारणकर्तृत्वेहेतुःप्रकृतिरुच्यते पुरुषःसु
खदुःखानांभोक्तृत्वेहेतुरुच्यते २१ पुरुषःप्रकृतिस्थोहिभुंक्तेप्रकृ
तिजान्गुणान् कारणंगुणसंगोस्यसदसद्योनिजन्मसु २२ ॥ ० ॥

नेमें हेतु होताहै २१ पुरुष प्रकृतिके कार्य देहादि से युक्त होकर प्रकृति जन्यसुख
दुख आदि गुणों का अनुभव करता है इस लिये पुरुष के उत्तम और अधमयोनी
में जन्म लेनेका कारण शुभ अशुभ कारी इंद्रियों का संग है २२ ॥ ० ॥ ८२

पुरुषप्रकृतिसेनिकटहोकर साक्षीकीनाईं देखता औरग्रहण करताहै औरईश्वर
रूप सेभर्त्ताऔरभोक्ताभीहै वहीपुरुषइसदेहमेंपरमात्माभी कहलाताहै २३ जो
पुरुष इसप्रकारसे पुरुषको और सुखदुखआदिगुणसहित प्रकृतिकोजानताहै

उपद्रष्टानुमन्ताचभर्त्ताभोक्तामहेश्वरः परमात्मेतिचाप्युक्तोदेहेस्मि
न्पुरुषःपरः २३ यएवंवेत्तिपुरुषंप्रकृतिंचगुणैःसह सर्वथावर्त्तमा
नोऽपिनसभूयोभिजायते २४ ध्यानेनात्मनिपश्यन्तिकेचिदात्मान
मात्मना अन्येसांख्येनयोगेनकर्मयोगेनचापरे २५ ॥ ० ॥

वहयदिविधिनिषेधकीमर्यादात्यागकरभीचलैतोभीजन्मादिसेरहितहोकरमुक्त
होताहै २४ कोईतोध्यानयुक्तहोअपनेशरीरमेंपरमेश्वरकोमनसेदेखतेहैं औरसां
ख्ययोगवालेप्रकृतिऔरपुरुषकेभेदसेजानतेहैं और कर्मयोगवालेअष्टांगयोगआदि से ईश्वरकोदेखतेहैं २५

श्रोरमंदबुद्धिवाले पुरुषजो पूर्वोक्तप्रकारों से नहीं जानसके वेगुरूसे ईश्वरकास्वरूप सुनकरउसपरनिश्चय करनेसे संसाररूप मृत्यु से तरजाते हैं २६ हेअर्जुन जोकुछ चरा चरआत्मकसत्वउत्पन्नहोताहै सो सबप्रकृतीश्रोर पुरुष के संयोग आरोपकरनेसे हो

अन्येत्वेवमजानन्तःश्रुत्वान्येभ्यउपासते तेपिचातितरन्त्येव
मृत्युंश्रुतिपरायणाः २६ यावत्संजायतेकिञ्चित्सत्त्वंस्थाव
रजंगमम् क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात्तद्विद्धिभरतर्षभ २७ समंस
र्वेषुभूतेषुतिष्ठन्तंपरमेश्वरम् विनश्यत्स्वविनश्यन्तंयःपश्य
तिसपश्यति २८ ॥

ताहैजानो २७ जोपुरुषचराचरआत्मकभूतों में परमेश्वर को समानव्याप्तजानताहै श्रोर भूतोंकेनाशहोनेसे ईश्वरकोनाशरहितजानताहैसोप्राप्तियोग्यवस्तुकोभलीभाँतिसेजा

जोपुरुषपरमेश्वरकोसर्वत्रसमानरूपसेस्थितदेखताहै श्रोरअपनेदेहादिकेसाथ उसे नष्टनहीं देखता सो इस्के अनंतर मोक्षगति को प्राप्त होता है २९ जोपुरुषसबप्र कार से शुभअशुभ कर्मों की कर्त्रीप्रकृतिकोश्रोर अकर्ता आत्माकोमानताहैवहीपरम

समंपश्यन्हिसर्वत्रसमवस्थितमीश्वरम् नहिनस्त्यात्मनात्मा
नंततोयातिपरांगतिम् २९ प्रकृत्यैवतुकर्माणिक्रियमाणा
निसर्वशः यःपश्यतितथात्मानमकर्तारंसपश्यति ३० यदा
भूतपृथग्भावमेकस्थमनुपश्यति ततएवचविस्तारंब्र
॥ह्मसम्पद्यतेतदा ३१ ॥

गति को जानता है ३० जब संपूर्न भूतों में पृथग्भेद देखते हुए प्रलय के समय एक प्रकृति में सब को स्थिति देखता है तिस्के अनंतर सृष्टिसमयमें संपूर्णभूतों को उसी से विस्तार देखता है तब वह ब्रह्म स्वरूप हो जाता है ३१ ॥ ॥

हेअर्जुन परमेश्वर अनादि और निर्गुण होनेसे नाश रहित है यद्यपि संपूर्ण शरीरोंमें स्थित है तथापि आप कुछ नहीं करता और न कर्मफल से लिप्त होता है ३२ जैसे आकाश सर्वत्र व्याप्त है परंतु असंग होने से किसीसे लिप्त नहीं वैसेही यह आत्माभी संपूर्न श

अनादित्वान्निर्गुणत्वात्परमात्मायमव्ययः शरीरस्थोऽपिकौन्तेयनकरोतिनलिप्यते ३२ यथासर्वगतंसौक्ष्म्यादाकाशंनोपलिप्यते सर्वत्रावस्थितोदेहेतथात्मानोपलिप्यते ३३ यथाप्रकाशयत्येकः कृत्स्नंलोकमिमंरविः क्षेत्रंक्षेत्रीतथाकृत्स्नंप्रकाशयतिभारत ३४ ॥ ० ॥

रीरोंमें व्याप्त है परंतु किसीसे लिप्त नहीं ३३ हे अर्जुन जैसे सूर्य येक है और संपूर्न लोकको प्रकाश करता है वैसेही संपूर्न क्षेत्र को क्षेत्री अर्थात् आत्मा प्रकाश करता है ३४ ॥ ८४

इस प्रकार से क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ के भेद को ज्ञान दृष्टि से जो देखता है और भूतों की प्रकृति और मोक्ष की उपाय ध्यानादिक जो जानता है सो माया से मुक्त होकर परम पद को प्राप्त होता है ३५ क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ स्वरूप निरूपण तेरह वाँ अध्याय समाप्त हु

क्षेत्रंक्षेत्रज्ञयोरेवमन्तरंज्ञानचक्षुषा भूतप्रकृतिमोक्षंचयेविदुर्यान्तितेपरम् ३५ इतिश्रीमन्महाभारतेशतसहस्रसंहितायांवैय्यासिक्यांभीष्मपर्वणिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुः ब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेक्षेत्रक्षेत्रज्ञनिर्देशोनामत्रयोदशोऽध्यायः १३॥ ॥श्रीभगवानुः परंभूयःप्रवक्ष्यामिज्ञानानांज्ञानमुत्तमम् यज्ज्ञात्वामुनयःसर्वेपरांसिद्धिमितो गता १

वा १३॥ ॥ भगवान कहते हैं हे अर्जुन फेर मै तुझे कहता हूं कि तप कर्मादि से ज्ञान उत्तम है और संपूर्ण ऋषीलोग जिसके जानने से इस संसार से मुक्त होके परम मोक्ष सिद्धिको प्रा

इसज्ञान को प्राप्त होकर मेरे स्वरूप में लय होजाते हैं इसलिये फेरन सृष्टि में उत्पन्न होते हैं
और न प्रलय में नाश को प्राप्त होते हैं २ यह कार्य ब्रह्म मेरी प्रकृति है सोई योनि है इसमे
मै उत्पादक शक्ति को धारण करता हूं उस से हे अर्जुन सम्पूर्ण भूतों की उत्पत्ति

इदंज्ञानमुपाश्रित्यममसाधर्म्यमागताः सर्गेपिनोपजायन्तेप्रलयेनः
व्यथन्तिच २ ममयोनिर्महद्ब्रह्मतस्मिन्गर्भंदधाम्यहम् संभवःस
र्वभूतानांततोभवतिभारत ३ सर्वयोनिषुकौन्तेयमूर्त्तयःसंभवन्तिः
याः तासांब्रह्ममहद्योनिरहंबीजप्रदःपिता ४ ॥ ७ ॥ ७ ॥

होती है ३ हे अर्जुन सम्पूर्ण योनियों में जो मूर्त्तियाँ उत्पन्न होती हैं ब्रह्म उन
की महद् योनी है और मै बीज देने वाला पिता हूं ४ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ८५

हे महाबाहु सत्व रज और तम तीनो गुण प्रकृती से उत्पन्न होते हैं और देह में इस अविनाशी दे
ही को बंधन करते हैं ५ हे अनघ अर्जुन इन तीनों गुणों में से सत्वगुण निर्मल होने से प्रकाशक
और निरुपद्रव है इसलिये अपने कार्य सुख और ज्ञान दोनों के संग से बंधन करता है अर्थो

सत्वंरजस्तमइतिगुणाःप्रकृतिसंभवाः निबध्नन्तिमहाबाहोदेहेदेहिनम
व्ययम् ५ तत्रसत्वंनिर्मलत्वात्प्रकाशकमनामयम् सुखसंगेनबध्नातिज्ञा
नसंगेनचानघ ६ रजोरागात्मकंविद्धितृष्णासंगसमुद्भवम् तन्निब
ध्नातिकौन्तेयकर्मसंगेनदेहिनम् ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

त् क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ का संयोग प्रकाश कर्ता है ६ हे अर्जुन रजोगुण को रागात्मक जानो वह तृष्णा
और संग से उत्पन्न है और इ[illegible]कर्मों में [illegible]से क्षेत्रज्ञ का बंधन कर्त्ता है ७ ॥ ॥

गी॰टी॰ हे अर्जुन तम अज्ञान से उत्पन्न है और संपूर्ण प्राणियों को भ्रांतिज्ञान उत्पन्न करता है प्रमाद आल
८६ स्य और निद्रा से क्षेत्रज्ञ को बांधता है ८ सत्वगुण देही को सुख प्राप्त करता है और रज कर्म
मैं प्रवृत्ति करता है और तमोगुण ज्ञान को घेर कर प्रमादादि से युक्त करता है ९ हे भारत रज तम

तमस्त्वज्ञानजंविद्धिमोहनंसर्वदेहिनाम् प्रमादालस्यनिद्राभिस्तन्नि
बध्नातिभारत ८ सत्वंसुखेसंजयतिरजःकर्मणिभारत ज्ञानमावृत्य
तु तमःप्रमादेसंजयत्युत ९ रजस्तमश्चाभिभूयसत्वंभवतिभारत॥
रजःसत्वंतमश्चैवतमःसत्वंरजस्तथा १० ॥ ७ ॥ ७ ॥

दोनो तिरस्कार करके सत्व गुण देही को सुखादि से युक्त करता है और रजोगुण स
त्व और तम इन दोनों को दबाकर देही को रागादि में युक्त करता है वैसे ही तम
सत्व और रज दोनों को दूर कर के प्राणियों को प्रमादादि मैं प्रवृत्ति करता है १० ॥ ० ॥ ८६

श्रोत्रादि सब द्वारों से जब शब्दादि का ज्ञान प्रकाश होता है तब उस से सत्व की वृद्धि और
सुख आदि का अनुभव जानो ११ लोभ प्रवृत्ति नाना कर्मों के आरंभ अनेक संकल्प
विकल्प का होना और इच्छादि रजो गुण की वृद्धि से उत्पन्न होते हैं १२ हे अर्जुन

सर्वद्वारेषुदेहेस्मिन्प्रकाशउपजायते ज्ञानंयदातदाविद्याद्वि
वृद्धंसत्वमित्युत ११ लोभःप्रवृत्तिरारंभःकर्मणामशमःस्पृहा रज १४
स्येतानिजायंतेविवृद्धेभरतर्षभ १२ अप्रकाशोऽप्रवृत्तिश्चप्रः
मादोमोहएवच तमस्येतानिजायन्तेविवृद्धेकुरुनंदन १३ यदा
सत्वेप्रवृद्धेतुप्रलयंयातिदेहभृत् तदोत्तमविदांल्लोकानमला

विवेक नाश और अनुद्योग कर्त्तव्य अर्थ का त्याग और मोहादि ये तमो गुण की वृ
द्धी से उत्पन्न होते हैं १३ जब सत्व गुण अधिक होता है तब देही प्रलय अर्थात् मृ
त्यु होने पर उत्तम ज्ञानियों के निर्मल लोक में प्राप्त होता है १४ ॥ ७ ॥

रजोगुणकी अधिकता में मृतमनुष्य योनी में प्राप्त होताहै वैसेही तमोगुण की वृद्धि मेमृत
मूढअर्थात् पशुयोनी को प्राप्त होता है १५ पुण्य कर्मका सत्वप्रधान निर्मल ज्ञानीफल
और रजोगुण का फल दुःखऔर तमोगुणकाफल अज्ञान है १६ सत्वगुणसेज्ञानउत्पन्न हो

रजसिप्रलयंगत्वाकर्मसंगिषुजायते तथाप्रलीनस्तमसिमूढयोनिषु
जायते १५ कर्मणःसुकृतस्याहुःसात्विकंनिर्मलंफलम् रजसस्तुफलं
दुःखमज्ञानंतमसःफलम् १६ सत्वात्संजायतेज्ञानंरजसोलोभएव [illegible]
च प्रमादमोहौतमसोभवतोऽज्ञानमेवच १७ ऊर्ध्वंगच्छन्तिसत्व[illegible]
स्थामध्येतिष्ठन्तिराजसाः जघन्यगुणवृत्तिस्थाअधोगच्छन्तितामसाः [illegible]

ताहै और रजोगुण से लोभऔर तमसे प्रमादमोह और अज्ञान तीनो उत्पन्न होतेहैं १७
सात्विकगुणवालेहिरण्यगर्भ लोक कोप्राप्तहोतेहैं औररजोगुणवालेदुखभोगतेहुयेमृत्यु
लोकमेंरहतेहैं और तमोगुणवाले निकृष्टयोनीमेंप्राप्त होके नरक में जाते हैं १८ ॥ ८७

जब विवेकी पुरुष सत्वादि गुणों से कर्त्ता को अतिरिक्त नहीं देखता तो गुणही को कर्त्ता
जानकरउनसेपरसाक्षी कोजानताहैतबवहमेरेस्वरूपकोप्राप्तहोताहै १९ देही इनदेहउत्पन्न
सत्वादितीनोगुणोंकोअतिक्रमणकरके जन्ममरणऔर वृद्धअवस्थादिदुःखोंसेमुक्तहोब्रह्मा

नान्यंगुणेभ्यःकर्त्तारंयदाद्रष्टानुपश्यति गुणेभ्यश्चपरंवेत्तिमद्भावंसोऽ
धिगच्छति १९ गुणानेतानतीत्यत्रीन्देहीदेहसमुद्भवान् जन्ममृत्युजः
रादुःखैर्विमुक्तोऽमृतमश्नुते २० अर्जुनउवाच कैर्लिंगैस्त्रीन्गुणानेे
तानतीतोभवतिप्रभो किमाचारःकथंचैतांस्त्रीन्गुणानतिवर्त्तते २१॥

नंदकोप्राप्तहोताहै २० अर्जुनप्रश्नकरतेहैं कि हेप्रभू श्रीकृष्ण किनकिनचिन्होंसेदेहीइन
तीनगुणोंसेअतिक्रमणहुवा [illegible] सेयुक्तहोकरइनगुणोंकेपरहो

भगवान् उत्तर देते हैं कि हे पांडव सत्व गुण का कार्य प्रकाश और रज का कार्य प्रवृत्ति =
और तम का कार्य मोह तीनो स्वभाव से प्रवृत्त हैं उन में जो दुःख बुद्धि से द्वेष न करके

॥ श्रीभगवानुवाच प्रकाशंचप्रवृत्तिंच मो
हमेवचपांडव नद्वेष्टिसंप्रवृत्तानिननिवृत्तानिकांक्षति
उदासीनवदासीनोगुणैर्योनविचाल्यते गुणावर्त्तन्त इ
त्येवंयोवतिष्ठतिनेंगते २३ ॥ ७ ॥ ७ ॥

और निवृत्ति में इच्छा सो गुणातीत है २२ जो पुरुष उदासीन की नाई गुणों से अ
कंपाय मान होकर स्थिर रहता है और उनको स्वभाव से वर्त्तमान जानकर स्थिर
होता है सो गुणातीत कहलाता है २३ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ८८

जो पुरुष सुख और दुःख को समान जानता है और स्वस्थ मन रहता है और सोने पत्थर औ
र लोहे को समान देखता है और प्रिय और अप्रिय दोनो उसके निकट समान है और निन्दा
और अस्तुति को तुल्य गिनता है सो गुणातीत है २४ मान अपमान जिसके समान

॥ समदुःखसुखस्वस्थःसमलोष्टाश्मकांचनः तुल्यप्रि
याप्रियोधीरःतुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः २४ मानापमान
योस्तुल्यस्तुल्योमित्रारिपक्षयोः सर्वारंभपरित्यागीगु
णातीतःसउच्यते २५ ॥ ७ ॥ ७ ॥

तुल्य है और मित्र और शत्रु दोनों पक्ष को समान जानता है और संपूर्ने उद्योग को त्या
ग करता है सो भी गुणातीत कहलाता है २५ ॥ ७ ॥ ७ ॥

गी॰टी॰ ८९

जो पुरुष मुझको एकाग्र भक्तियोग से सेवन करता है सो इन गुणों से पार होके मोक्ष को प्रा
प्त होने के योग्य होता है २६ मैं मोक्षरूप अविनाशी सनातन अनादि धर्म रूप और निर

मांचयोऽव्यभिचारेणभक्तियोगेनसेवते सगुणान्समतीत्यैतान्ब्रह्मभू
यायकल्पते २६ ब्रह्मणोहिप्रतिष्ठाहममृतस्याव्ययस्यच शाश्वतस्यच
धर्मस्यसुखस्यैकान्तिकस्यच २७ इतिश्रीमन्महाभारतेशतसहस्रसंहि
तायांवैयासिक्यांभीष्मपर्वणिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेप्रकृतिगुणत्रयविभागयोगोनाम॰ १४॥॥

तिशय सुख स्वरूप परब्रह्म की प्रतिमा हूं जैसे प्रकाश का पुंज सूर्य है २७ प्रकृ॰
ति गुणादि भेद निरूपण चौदह वाँ अध्याय समाप्त हुवा १४ ॥ ॥ ॥ ८९

भगवान कहते हैं यह संसाररूपी पीपर का वृक्ष जिस्की जड़ ऊर्द्ध कहैं उत्पत्ति और नाशर
हित ऐसा पुरुषोत्तम है और अधः हिरण्यगर्भादि जिस्की शाखा हैं प्रवाहरूप करके अनादि हैं औ
र उस्के पत्ते वेद प्रतिपाद कर्मफल आदि हैं इस प्रकार से जो इस संसार रूपी पीपर को जानता है

श्रीभगवानुवाच ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थंप्राहुरव्ययम् छंदांसि
यस्यपर्णानियस्तंवेदसवेदवित् १ अधश्चोर्ध्वंप्रसृतास्तस्यशा॰
खागुणप्रवृद्धाविषयप्रवालाः अधश्चमूलान्यनुसन्ततानिक
र्मानुबन्धीनिमनुष्यलोके २ ॥ ॥ ॥

सो वेदार्थ जानने वाला है १ दुष्कृतिलोग पशुआदियोनिमें प्राप्त होके शाखारूप से नीचे
व्याप्त है और सुकृतीलोग देवादियोनिमें प्राप्त होके शाखादिरूप से ऊपर फैले हैं और वो शा
खा सत्वादिगुणों से वृद्धी को प्राप्त भई हैं उस्के ... विषय हैं इस मनुष्यलोक में कर्म

अनुसार इस्की जड़ नीचे ऊपर व्याप्त है २

इसजगत में संसाररूप पीपरकाऊपरमूलनीचे शाखादिरूप नहीं देखपडता बैसेहीअंत
आदि और स्थितिभी नहीं जानपड़ती इस प्रबल मूल पीपर को असंगरूप शस्त्र सेछेद
के ३ तिस्केअनंतर उसअनादिपुरुष के मै शरणागत हूं इसविधि उसप्राप्यपरम वस्तुके

नरूपमस्येहतथोपलभ्यतेनांतोनचादिर्नचसंप्रतिष्ठा अश्व
त्थमेनंसुविरूढमूलमसंगशस्त्रेणदृढेनछित्वा ३ ततःपदंत
त्परिमार्गितव्यंयस्मिन्गताननिवर्त्तन्तिभूयः तमेवचाद्यंपुरु
षंप्रपद्येयतःप्रवृत्तिःप्रसृतापुराणी ४॥ ॰ ॥ ॰ ॥

प्राप्तिकेलियेउद्योगकरैं और वहऐसा वस्तुऊपर है जिसमैं लय होकर फिर जन्म को
नहीप्राप्त होता क्योंकि इस अनादि संसार कीप्रवृत्ति अनेक प्रकार से फैली है ४ ॥

अभिमानऔर मोहसेरहित रागादि दोषकेजीतने वाले सर्वदा आत्मज्ञान में तत्पर का
मादिसेनिवृत्त सुखदुःख शीतोष्णदोनौं को समानजान्नेवाले विवेकीपुरुषअविनाशी मो
क्षपदकोप्राप्तहोतेहैं ५ सूर्यचंद्रऔरअग्निजिस्को नहीं प्रकाशकरसक्तेजिस्कोयोगीलोग प्रा

निर्मानमोहाजितसंगदोषाअध्यात्मनित्याविनिवृत्तकामाः द्वं
ख द्वैर्विमुक्ताःसुखदुःखसंज्ञैर्गच्छन्त्यमूढाःपदमव्ययंतत् ५ नतद्भा
सयतेसूर्योनशशांकोनपावकः यद्गत्वाननिवर्त्तन्तेतद्धामपर
मंमम ६ ममैवांशोजीवलोकेजीवभूतःसनातनः मनःषष्ठा
नीन्द्रियाणिप्रकृतिस्थानिकर्षति ७ ॥ ॰ ॥ ॰ ॥

प्तहोकेफिरनहींफिरतेसोउत्कृष्टधाममेरा है ६ यहअनादिजीवस्वरूपमैंस्थितमेराहीअंश
हितथापिसंसारमैंभोगकेहेतुमनआदिछःइंद्रियाँप्रकृतिमैंस्थितरहकरजीवकोअपनेअप

देही येक देहको त्यागकर जब दूसरे में प्राप्त होता है तो इंद्रियों को अपने साथ लेजा
ता है जैसे वायू फूलसे गंध दूसरी जगे लेजाता है ८ कान आँख त्वक जिह्वा नाक और
मन छवो इंद्रियों का आश्रयण करके यह जीव रूपादि विषयों का अनुभव करता है

शरीरंयदवाप्नोतियच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः गृहीत्वैतानिसंयाति
वायुर्गन्धानिवाशयात् ८ श्रोत्रंचक्षुःस्पर्शनंचरसनंघ्राणमेव
च अधिष्ठायमनश्चायंविषयानुपसेवते ९ उत्क्रामन्तंस्थि
तंवापिभुंजानंवागुणान्वितम् विमूढानानुपश्यन्तिपश्यन्ति
ज्ञानचक्षुषा १० ॥ ७ ॥

९ मूर्खलोग जीवको एकशरीर के त्याग और दूसरे के आश्रयण करनेके विषयों का अनुभ
व करने और इंद्रियों के साथ रहने को नहीं देखसक्ते परंतु विवेकी लोग उसे ज्ञानचक्षुसे देखतेहैं

योगीलोग योगाभ्यास से प्रयत्न करते भये देहमें स्थित आत्मा को देखते हैं और अविवे
की लोग प्रयत्न करते हुये भी आत्मा को नहीं देख सक्ते क्यौं कि वै विवेक ज्ञान से र
हित हैं ११ जो तेज सूर्येचंद्र और अग्नि में स्थित होकर संपूर्न जगत का प्रकाश करताहै व

यतन्तोयोगिनश्चैनंपश्यन्त्यात्मन्यवस्थितम् यततोप्यकृतात्मानो
नैनंपश्यन्त्यचेतसः ११ यदादित्यगतंतेजोजगद्भासयतेखिलम् य
च्चन्द्रमसियच्चाग्नौतत्तेजोविद्धिमामकम् १२ गामाविश्यचभूतानि
धारयाम्यहमोजसा पुष्णामिचौषधीःसर्वाःसोमोभूत्वारसात्मकः १३

ह तेज मेरा जानो १२ मै पृथ्वी मेस्थित होके अपने पराक्रम से चराचर आत्मकभूतों को
धारण करता हूँ और रस स्वरूप चंद्र होके संपूर्न ओषधीलतावौं को पोषण करता हूँ १३

मेजठराग्नि होकर प्राणियों के देहमें स्थित हो प्राण अपान दोनो वायुवों से मिलकर भक्ष्य भोज्य
 लेह्य चोष्य चारो प्रकार के अन्नों को पाचन करता हूं १४ संपूर्ण प्राणियों के हृदय में अंतर्यामी रू
प से स्थित होकर व्यतीत वस्तु का स्मरण और पदार्थ ज्ञान और उनका विस्मरण म

अहंवैश्वानरोभूत्वाप्राणिनांदेहमाश्रितः प्राणापानसमायु
क्तःपचाम्यन्नंचतुर्विधम् १४ सर्वस्यचाहंहृदिसन्निविष्टोम
त्तःस्मृतिर्ज्ञानमपोहनंच वेदैश्चसर्वैरहमेववेद्योवेदान्त
कृद्वेदविदेवचाहम् १५ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

ही करता हूं और चारो वेदों से उनके देवता रूप में उपास्य हूं और वेदान्त सम्प्रदाय
का चलाने वाला और वेद जानने वाला भी मही हूं १५ ॥ ७ ॥ ७ ॥

इस जगत में यह दो पुरुष क्षर और अक्षर कहलाते हैं उन दोनो में से संपूर्ण भूत क्षर हैं औ
र माया आश्रित परमेश्वर अक्षर हैं १६ इन दोनो में से भिन्न पुरुषोत्तम परमात्मा कह
लाता है जो तीनो लोक में व्याप्त होकर अविनाशी ईश्वर रूप से पालन करता

द्वाविमौपुरुषौलोकेक्षरश्चाक्षरएवच क्षरःसर्वाणिभूता
निकूटस्थोक्षरउच्यते १६ उत्तमःपुरुषस्त्वन्यःपरमात्मेत्यु
दाहृतः योलोकत्रयमाविश्यविभर्त्यव्ययईश्वरः १७ य
स्मात्क्षरमतीतोहमक्षरादपिचोत्तमः अतोस्मिलोकेवे
देचप्रथितःपुरुषोत्तमः १८ ॥ ७ ॥ ७ ॥

है १७ जिस कारण से नाश रहित और अक्षर से श्रेष्ठ है उसी कारण से लो
क और वेद में भी पुरुषोत्तम कहलाता है १८ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

गी॰टी॰ ९३

जो मोहरहित होकर मुझको इसप्रकारसे पुरुषोत्तम जानताहै सो सर्वज्ञ है वही अनन्य
हो मुझको भजन करता है १९ हे अर्जुन अतिगोपनीयशास्त्र जो मैने निरूपण किया उ

योमामेवमसंमूढोजानातिपुरुषोत्तमम् ससर्वविद्भजतिमां
सर्वभावेनभारत १९ इतिगुह्यतमंशास्त्रमिदमुक्तंमयान
घ इतिबुद्ध्वाबुद्धिमान्स्यात्कृतकृत्यश्चभारत २० इतिश्री
मन्महाभारतेशतसहस्रसंहितायांवैय्यासिक्यांभीष्मप
र्वणिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादेपुरुषोत्तमप्राप्तियोगोनाम॰ १५ ॥ ७ ॥

०७०८

से इस प्रकार से जान कर विवेकी पुरुष कृत कृत्य होते हैं २० पुराण पुरुषोत्तमनि
रूपण पंद्रह वाँ अध्याय समाप्त हुवा १५ ॥ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ९३

भगवानकहतेहैं संपूर्णप्राणियोंसेनिरभयऔरसतोगुणप्रधानहोकरज्ञानअभ्यासमेंरत
हियथाशक्तिदानइंद्रियनिग्रहयज्ञवेदाध्ययनतपऔर निष्कपटब्योहारकरै १ हिंसारहित
सत्यवादी औरक्रोधरहितहोरागादिकोत्यागकरैऔरपरनिंदानकरै औरभूतोंपरद

श्रीभगवानुवाच अभयंसत्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः
दानंदमश्चयज्ञश्चस्वाध्यायस्तपआर्जवम् १ अहिंसासत्य
मक्रोधस्त्यागःशान्तिरपैशुनम् दयाभूतेष्वलोलुप्त्वमार्दवंह्री
रचापलम् २ तेजःक्षमाधृतिःशौचमद्रोहोनातिमानिता भ
वन्तिसंपदंदैवीमभिजातस्यभारत ३ ॥ ७ ॥ ७ ॥

यारखै औरकिसीकेनाश करनेमें प्रवृत्तनहो औरकोमलस्वभावरहै और निंदितकर्मक
रनेसे लज्जित हो और स्थिर स्वभाव रखै २ हेभारतअर्जुन तेज क्षमा धैर्यपवित्रता नि
र्द्रोह और निरभिमानादिगुण दैवीसंपत्ति में उत्पन्न पुरुष तिसमे होते हैं ३ ॥ ७ ॥

हेपार्थअर्जुनदंभदर्पअभिमानक्रोधकठोरभाषन और अज्ञानादिआसुरीसंपत्तिसे जोउत्पन्नपुरुषतिसमेंहोतेहैं ४ हेपांडवदैवीसंपदमुक्तिकेहेतुहै और आसुरी संपत बंधनका कारणपरंतु तुमदैवी संपदसे उत्पन्नभयेहौइसलियेशोकनकरो ५

दंभोदर्पोभिमानश्चक्रोधःपारुष्यएवच अज्ञानंचाभिजात स्यपार्थसंपदमासुरीम् ४ दैवीसंपद्विमोक्षायनिबन्धायासुः रीमता माशुचःसंपदंदैवीमभिजातोसिपांडव ५ द्वौभूतस र्गौलोकेस्मिन्दैवआसुरएवच दैवोविस्तरशःप्रोक्तआसु रंपार्थमेशृणु ६ ॥

हेअर्जुन इसलोकमेंभूतोंकीउत्पत्तिदैवऔरआसुरीभेदसेदोप्रकारकीकहीहैऔरदैव उत्पत्तिकानिरूपणबहुप्रकारसेकरचुकाअबआसुरीकानिरूपणकरताहूँसोसुनों ६ ॥ ९४

आसुरअंशवालेमनुष्यधर्ममेंप्रवृत्तिऔरअधर्मसेनिवृत्ति नहींजानतेइसलियेउनमेंशौ चआचारऔरसत्यभीनहीं ७ आसुरीअंशवालेजगतकोअसत्यनिराश्रयऔरनिरीश्व रकहतेहैं और इसकीउत्पत्ति केवलइस्त्रीपुरुषकेसंयोगहीसेजानतेहैं इससेअतिरिक्त

प्रवृत्तिंचनिवृत्तिंचजनानविदुरासुराः नशौचंनापिचाचा रोनसत्यंतेषुविद्यते ७ असत्यमप्रतिष्ठंतेजगदाहुरनी श्वरम् अपरस्परसंभूतंकिमन्यत्कामहैतुकम् ८ एतां दृष्टिमवष्टभ्यनष्टात्मानोल्पबुद्धयः प्रभवन्त्युग्रकर्मा णःक्षयायजगतोहिताः ९ ॥ ७ ॥ ७ ॥

उत्पादकहेतुकिसीकोनहीसमुमते ८ वेलोगइसनास्तिकदृष्टिकाआश्रयणकरकेअपने निषिद्धकर्माचरणसेजगतकेनाशकेहेतुआसक्तहोतेहैं क्योंकिवेअल्पबुद्धिवालेऔर अ

विवेकी हैं ८

वेअत्रसकामकाआश्रयणकरकेदंभअभिमानऔरमदसेयुक्त होकेअपनीअविवेकता
सेनिंदितकर्मकाआचरणकरकेअपवित्रवृत्तिमेंप्रवृत्तहोतेहैं १० निरवधिचिंताकिजि
स्कीसमाप्तीप्रलयहीहैउस्केआश्रयणहोकरकेवलकामभोगहीकोपरमपुरुषार्थजान

॥कामम्माश्रित्यदुःपूरंदंभमानमदान्विताः मोहाद्गृहीत्वा
सद्ग्राहान्प्रवर्त्तन्तेशुचिव्रताः १० चिन्तामपरिमेयांचप्र
लयान्तामुपाश्रिताः कामोपभोगपरमाएतावदितिनि
श्चिताः ११ आशापाशशतैर्बद्धाःकामक्रोधपरायणाः
ईहन्तेकामभोगार्थमन्यायेनार्थसंचयान् १२॥ ० ॥

उसपरनिश्चयकरतेहैं ११ अनेकप्रकारकीआशाकीरस्सीमेबद्धऔरसर्वदाकामक्रो
धमेंअनुरक्तहैंऔरकामभोगकेअर्थअन्यायसे द्रव्यसंचय की इच्छाकरतेहैं १२॥ ९५

वेलोगयहनिश्चयकरतेहैं किआजमैनेयहधनपायाऔरमेरामनोरथयहप्रासहोगा औरयह
वस्तुमेरीहैऔरवहभीमेरीहीहै और आगेबहुतसाधनमुझकोप्राप्तहोगा १३ वहमेराशत्रु
आजमैनेमाराऔरशेषकोमारुंगाऔरईश्वरमहीहूं औरभोगीसिद्धबलवानऔरसुखीभी=

इदमद्यमयालब्धमिमंप्राप्स्येमनोरथम् इदमस्तीदमपि
मेभविष्यतिपुनर्धनम् १३ असौमयाहतःशत्रुर्हनिष्येचा
परानपि ईश्वरोहमहंभोगीसिद्धोहंबलवान्सुखी १४
आढ्योभिजनवानस्मिकोन्योस्तिसदृशोमया यक्ष्येदा=
स्यामिमोदिष्यइत्यज्ञानविमोहिताः १५॥ ० ॥

महीहौं १४ वेलोगधनऔरकुलसेअभिमानीहोकेइसजगतमेंजानतेहैंकिहमारेसमान
कोईनहींऔरयज्ञदानकरकेप्र[illegible]होंगेइसविधिअज्ञानसेमोहको

अनेकप्रकारकीचित्तकीभ्रांतीसेमोहरूपीजालमें घिरकेकेवलकामभोगहीकोपुरुषार्थ
जानतेहुवेरौरव आदिमहाअपवित्रनरकमेंपडतेहैं १६ अपनेमनसेअपनेकोश्रेष्ठ
जानकर अनम्रहोधनकीअधिकतासेमदओअभिमानसेयुक्तहोकेवलप्रतिष्ठाकेहे

अनेकचित्तविभ्रान्तामोहजालसमावृताः प्रसक्ताःकाम
भोगेषुपतन्तिनरकेऽशुचौ १६ आत्मसंभाविताःस्तब्धाधः
नमानमदान्विताः यजन्तेनामयज्ञैस्तेदंभेनाऽविधिपूर्व
कम् १७ अहंकारंबलंदर्पंकामंक्रोधंचसंश्रिताः मा
मात्मपरदेहेषुप्रद्विषन्तोऽभ्यसूयकाः १८ ॥ ७ ॥

तुवेदोक्तविधित्यागकरकपटसेयज्ञकरतेहैं १७ अहंकारबलदर्पकामओर क्रोधसे
युक्तहोकरमुरुकोसर्वव्यापीनजानकेद्वेषकरतेहैंओरविवेकियोंकीनिंदाकरतेहुएदं

अथमक्रूरस्वभाव द्वेषयुक्त ओर अशुभकर्मकारी नरों को मै सर्वदा क्रिमिकीटादि योनिमेंज
न्म प्राप्ति के लिये इस संसार में नियोग करता हूं १९ हे अर्जुन वे मूढ लोग कृमि कीटादि
योनीको प्राप्त होके मोह से व्याप्त हो जन्म जन्म मुरुकोप्राप्त न होकर तदनंतर अधम ग

तानहंद्विषतःक्रूरान्संसारेषुनराधमान् क्षिपाम्यजस्रमशुभा
नाऽऽसुरीष्वेवयोनिषु १९ आसुरींयोनिमापन्नामूढाजन्मनि
जन्मनि माऽमप्राप्यैवकौंतेयततोयान्त्यऽधमांगतिम् २० ॥
त्रिविधंनरकस्येदंद्वारंनाशितमात्मनः कामःक्रोधस्तथा
लोभस्तस्मादेतत्त्रयंत्यजेत् २१॥ ७ ॥ ७ ॥

तिको प्राप्त होतेहैं २० एतीनों अर्थात् कामक्रोध ओर लोभ विवेक ज्ञान नाश करने वाले न
रक के द्वार हैं इस लिये इन तीनों का त्याग करना उचित है २१ ॥ ७ ॥ ७ ॥

हे अर्जुन जो पुरुष इन तीनों नरक प्रापक द्वारों से मुक्त होके अपना शुभाचरण करता है सो तद
नंतर मोक्षगति को प्राप्त होता है २२ जो पुरुष शास्त्रविहितविधि को त्याग करके कामासक्त रह
ता है सो सिद्धि को न प्राप्त होकर सुख और मोक्ष को नहीं प्राप्त होता २३ हे अर्जुन इस हेतु क

एतैर्विमुक्तःकौन्तेयतमोद्वारैस्त्रिभिर्नरः आचरत्यात्मनश्श्रे
यस्ततोयातिपरांगतिम् २२ यःशास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्त्तते
कामकारतः नससिद्धिमवाप्नोतिनसुखंनपरांगतिम् २३
तस्माच्छास्त्रंप्रमाणन्तेकार्याकार्यव्यवस्थितौ ज्ञात्वाशास्त्र
विधानोक्तंकर्मकर्त्तुमिहार्हसि २४ ॥ ७ ॥ ७ ॥

र्म आचरण और त्याग की अवस्था में शास्त्र ही प्रमाण है इस लिये शास्त्रविहित कर्त्तव्य और अ
कर्त्तव्य कर्म को जान कर कर्म अधिकार को आचरण करने के योग्य है २४ ॥ ७ ॥

दैवासुर संपत्तियोगनिरूपण सोलहवाँ अध्याय समाप्त हुवा १६॥ ॥ अर्जुन प्रश्न करते हैं हे
कृष्ण जो लोग शास्त्र विधि को त्याग कर श्रद्धा युक्त हो यज्ञ करते हैं उनकी क्या निष्ठा है स

इतिश्रीमन्महाभारतेशतसहस्रसंहितायांवैय्याशिक्यांभीष्मपर्व
णिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णा
र्जुनसंवादेदैवासुरसम्पत्तियोगोनामषोडशोऽध्यायः १६॥ ॥अ
र्जुन उवाच येशास्त्रविधिमुत्सृज्ययजन्तेश्रद्धयान्विताः तेषांनि
ष्ठातुकाकृष्णसत्वमाहोरजस्तमः १ श्रीभगवानुवाच त्रिविधा
भवतिश्रद्धादेहिनांसास्वभावजा सात्विकीराजसीचैवतामसीचे
तितांश्रृणु २ ॥

त्व रज या तम अर्थात् इन तीनो गुणों में उनकी पूजा कि सगुण वाली गिनी जाती है १ भगवान् उत्त
र देते हैं प्राणियों को तीन प्रकार की श्रद्धा स्वभाव से होती है अर्थात् सात्विकी राजसी और तामसी उ

सेनिरूपणकर्त्तेहैंसोसुनो २

सब मनुष्यों को श्रद्धा सत्व के अनुसार होती है इसलिये वे मनुष्य श्रद्धावान् कहलाते हैं और जै
सी जिसकी श्रद्धा राजसी या तामसी होती है वैसेही सब पुरुष कहलाते हैं ३ सात्विक श्र
द्धा वाले देवतों की आराधना करते हैं और राजसी लोग यक्ष और राक्षसों की उपासना करते हैं

सत्वानुरूपासर्वस्यश्रद्धाभवतिभारत श्रद्धामयोयंपुरुषःयोयच्छ्र
द्धःसएवसः ३ यजन्तेसात्विकादेवान्यक्षरक्षांसिराजसाः प्रेतान्
भूतगणांश्चान्येयजन्तेतामसाजनाः ४ अशास्त्रविहितंघोरं
तप्यन्तेयेतपोजनाः दंभाहंकारसंयुक्ताःकामरागबलान्विताः
॥५॥

और तमोगुण वाले अपने गुण के अनुसार भूत प्रेत गणों की पूजा करते हैं ४ जो लोग शास्त्र
विरुद्ध घोर कर्माचरण करते हैं और दंभ अहंकार काम राग और दुराग्रह से युक्त हैं ५॥ ॥ ९८

ऐसे लोग उपवास आदि नियम से शरीरस्थित पृथिवी आदि पंच भूत समुदाय और मुझको शरीर
में व्याप्त न जानकर सुखाते हैं उन्हे तमोगुणप्रधान जानो क्यौं कि वे विवेक ज्ञान से रहित हैं
६ सात्विक आदि तीन प्रकार के मनुष्यों को आहार भी तीन प्रकार के प्रिय हैं और वैसा ही यज्ञ

कर्षयन्तःशरीरस्थंभूतग्राममचेतसः मांचैवान्तःशरीरस्थं
तान्विद्ध्यासुरनिश्चयान् ६ आहारस्त्वपिसर्वस्यत्रिविधोभ
वतिप्रियः यज्ञस्तपस्तथादानंतेषांभेदमिमंशृणु ७ आ
युःसत्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्द्धनाः रस्याःस्निग्धास्थि
राहृद्याआहाराःसात्विकप्रियाः ८ ७ ॥ ७ ॥

तप और दान भी उनके तीन प्रकार के हैं उसको निरूपण करता हूं सो सुनो ७ आयुष्य उत्साह श
क्ति आरोग्यता और प्रीतिके बढानेवाले रस और स्नेह से युक्त चिरकाल रसरूप से शरीर में
स्थित दर्शन ही से चित्त को [illegible] वाले आहार सात्विकगुणवाले को प्रिय है ८॥ ॥

कि यह दुःख शोक और रोग का उत्पादक है ९ ठंढा निरस दुर्गंधित वासी बचा हुवा और जूठा अपवित्र भोजन तामसियों को प्रिय है १० फलाकांक्षा रहित पुरुष को शास्त्र के अनुसार यज्ञ करना उचित जान कर मन के निश्चय से जो यज्ञ अनुष्ठान कर

॥ ॥ कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरूक्षविदाहिनः आहाराराजसस्येष्टादुःख
शोकामयप्रदाः ९ यातयामंगतरसंपूतिपर्युषितंचयत् उच्छिष्टमपिचा
मेध्यंभोजनंतामसप्रियम् १० अफलाकांक्षिभिर्यज्ञोविधिदृष्टोयइज्य
ते यष्टव्यमेवेतिमनः समाधायससात्विकः ११ अभिसंधायतुफलंदंभार्थ
मपिचैवयत् इज्यतेभरतश्रेष्ठतंयज्ञंविद्धिराजसम् १२ ॥ ❁ ॥

ते हैं सो सात्विक यज्ञ कहलाता है ११ हे अर्जुन जो लोग फल की इच्छा से कपट आचरण से यज्ञ करते हैं सो राजस यज्ञ कहलाता है १२ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥ ९९

शास्त्रोक्त विधिसे रहित अयोग्य सामग्री कुमंत्र और विना दक्षिणा और विना श्रद्धा के जो यज्ञ आचरण किया जाता है सो तामस कहलाता है १३ देवता ब्राह्मण गुरू और पूज्य लोगों की पूजा और अपनी पवित्रता और सुमार्ग से चलना ब्रह्मचर्य और अहिंसा से रह॰

विधिहीनमसृष्टान्नंमंत्रहीनमदक्षिणम् श्रद्धाविरहितंय
ज्ञंतामसंपरिचक्षते १३ देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनंशौचमा
र्जवम् ब्रह्मचर्यमहिंसाचशारीरंतपउच्यते १४ अनुद्वे
गकरंवाक्यंसत्यंप्रियहितंचयत् स्वाध्यायाऽभ्यसनंचैव
वाङ्मयंतपउच्यते १५ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥

ना यह शरीर तप कहलाता है १४ किसी को वार्त्ता से दुख न देना सत्य बोलना प्रिय और हित की बात कहना और वेदाभ्यास करना यह वाणी का तप कहलाता है १५ ॥ ❁ ॥

इच्छा मनसे सुमार्ग अनुसारी होकर मौन अर्थात् व्यर्थ भाषण छोड़ विषयोंसे इंद्रियोंको रोकस्वभावसे शुद्ध रहिकर जो तप आचरण कर्त्ते हैं सो मानस तप कहलाता है १६ उत्तम श्रद्धा से फलाकांक्षारहित एकाग्र चित्तवाले नरों नें जो तप आचरण किया सो सात्वि

मनःप्रसादःसौम्यत्वंमौनमात्मविनिग्रहः भावसंशुद्धिरित्ये
तत्तपोमानसमुच्यते १६ श्रद्धयापरयातप्तंतपस्तत्त्रिविधंन
रैः अफलाकांक्षिभिर्युक्तैःसात्विकंपरिचक्षते १७ सत्कार
मानपूजार्थंतपोदंभेनचैवयत् क्रियतेतदिहप्रोक्तंराज
॥ संचलमध्रुवम् १८ ॥

क कहलाता है १७ जो तप कपट से सत्कारमान और प्रतिष्ठाकेहेतु आचरण किया जाता है सो इस कर्म लोक में राजस तप क्षणिक और अनित्य कहलाता है १८ ॥ ९ ॥ १००

अविवेकतासे युक्त अयुक्त विचार न करके मन के खेद से या दूसरे के नाश के हेतु जो तप आचरण किया जाता है सो तामस कहलाता है १९ दातव्य बुद्धि से पुण्य देश पुण्य काल में जो दान दे और उसपुरुष से अपना उपकार न करावे सो सात्विक कहलाता

मूढग्राहेणात्मनोयत्पीडयाक्रियतेतपः परस्योत्साद
नार्थंवातत्तामसमुदाहृतम् १९ दातव्यमितियद्दानं
दीयतेनुपकारिणे देशेकालेचपात्रेचतद्दानंसात्विः
कंस्मृतम् २० यत्तुप्रत्युपकारार्थंफलमुद्दिश्यवापुनः
दीयतेचपरिक्लिष्टंतद्राजसमुदाहृतम् २१॥ ० ॥

है २० जो दान अपने उपकार की बुद्धि या स्वर्गादि फल के उद्देश और खेदित चित्त से दिया जाता है सो राजस कहलाता है २१ ॥ ९ ॥ ९ ॥

जोदान अपवित्र देश और कुसमय में अयोग्य को असत्कार से निंदापूर्वक देते हैं सोत्र
नामस कहलाता है २२ पूर्व काल में ॐ तत्सत् के उच्चारण से ब्रह्म के तीनप्र
कार के स्मरण हैं उस से ब्राह्मण वेद और यज्ञ ये तीनो निर्माण किये गये हैं

अदेशकालेयद्दानमपात्रेभ्यश्चदीयते असत्कृतम
वज्ञातंतत्तामसमुदाहृतम् २२ ॐतत्सदितिनिर्दे
शोब्रह्मणस्त्रिविधःस्मृतः ब्राह्मणास्तेनवेदाश्चय
ज्ञाश्चविहिताःपुरा २३ तस्मादोमित्युदाहृत्ययज्ञदा
नतपःक्रियाः प्रवर्त्तन्तेविधानोक्ताःसततंब्रह्मवादि

इस लिये वेद जानने वाले पुरुष को यज्ञ दान और तप में सर्वदा शास्त्रोक्त
प्रकार से ओंकार पूर्वक प्रवृत्त होना उचित है २४ ॥ १ ॥ १ ॥

मुमुक्षुपुरुष यह निश्चय नकरके कि इसका यह फल हमको मिलै अनेकप्रकार के दान
यज्ञ और तप करते हैं इसी से चित्त शुद्धि के द्वारा मोक्ष उपयोगी होते हैं २५ स
त भाव और साधु भाव और योग्य कर्म में भी हे अर्जुन सत शब्द का प्रयोग होताहै

तदित्यनभिसन्धायफलंयज्ञतपःक्रियाः दानक्रियाश्च
विविधाःक्रियन्तेमोक्षकांक्षिभिः २५ सद्भावेसाधुभावे
चसदित्येतत्प्रयुज्यते प्रशस्तेकर्मणितथासत्शब्दःपा
र्थयुज्यते २६ यज्ञेतपसिदानेचस्थितिःसदितिचो
च्यते कर्मचैवतदर्थीयंसदित्येवाभिधीयते २७ ॥

२६ यज्ञ दान और तप तीनो में जो स्थिरता से हो सत शब्द का प्रयोग होता है औ
र इनके संबन्धि कर्म में भी सत शब्द का प्रयोग होता है २७ ॥ १ ॥

हे पार्थ अश्रद्धा से जो होम दान तप और कुछ कर्म कियाजाता है सो असत कहलाता है इ
सलिये वह इस लोक और परलोक में उपकारी नहीं होता २८ गुणत्रयविभागनिरूपण
नामक सत्रहवां अध्यायसमाप्त हुवा १७॥ ॥ अर्जुन प्रश्न करते हैं कि हे महाबाहु श्रीकृ

अश्रद्धयाहुतंदत्तंतपस्तप्तंकृतंचयत् असदित्युच्यतेपार्थन
चतत्प्रेत्यनोइह २८ इतिश्रीमन्महाभारतेशतसहस्रसंहिता
यांवैयासिक्यांभीष्मपर्वणिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्म
विद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेत्रिगुणविभागयोगो
नामसप्तदशोऽध्यायः १७॥ ॥अर्जुनउवाच संन्यासस्यमहाः
बाहोतत्वमिच्छामिवेदितुम् त्यागस्यचहृषीकेशपृथक्केशिनिषू

ष्ण संन्यास और त्याग दोनों के पृथक् पृथक् स्वरूप जानने की इच्छा करता हूं क्योंकि तुम संपूर्ण
इंद्रियों के ईश्वर और केशी नामक पराक्रमी दैत्य के नाशक हो १॥ ॥ ॥ १०२

भगवान उत्तर देते हैं कि संपूर्ण काम्य कर्मों के त्यागही को पंडितलोग संन्यास जानते हैं और वि
चारवान्पुरुष संपूर्ण कर्मों के फलत्याग को ही त्याग कहते हैं कर्मत्याग करना आवश्यक नहीं २
विवेकीलोग संपूर्ण कर्मों में दोष देख कर त्याग करना उसका उचित कहते हैं क्योंकि सम्पू

श्रीभगवानुवाच काम्यानांकर्मणांन्यासंसंन्यासंकवयोविदुः स
र्वकर्मफलत्यागंप्राहुस्त्यागंविचक्षणाः २ त्याज्यंदोषवदित्येके
कर्मप्राहुर्मनीषिणः यज्ञदानतपःकर्मनत्याज्यमितिचापरे ३
निश्चयंशृणुमेतत्रत्यागेभरतसत्तम त्यागोहिपुरुषव्याघ्रः
त्रिविधःसम्प्रकीर्त्तितः ४ ॥ ॥ ॥ ॥

र्ण कर्म अर्थमूलक हैं और मीमांसक लोग यज्ञ दान और तपादि कर्मों को कहते हैं
कि त्याग करना उचित नहीं ३ हे अर्जुन त्याग के विषय में हमारा निश्चय यह है सु
नो कि जिस कारण से तत्व दर्शी लोग त्याग के भेद को तीन प्रकार कहते हैं ४॥ ॥

यज्ञदान और तप तीनो करनेकेयोग्य हैं कदापि इनकात्याग उचित नहीं क्यौं कि यज्ञ आदि कर्म बुद्धिमान् लोगों के चित्त शुद्धिका हेतु है ५ हेपार्थ जिस प्रकार से मैंने कर्म करनेको कहा है उस प्रकार से करै फेर कर्म फल और अभिमान त्याग करके य

यज्ञदानतपःकर्मनत्याज्यंकार्यमेवतत् यज्ञोदानंतप
श्चैवपावनानिमनीषिणाम् ५ एतान्यपितुकर्माणिसं
गंत्यक्त्वाफलानिच कर्त्तव्यानीतिमेपार्थनिश्चितंम
तमुत्तमम् ६ नियतस्यतुसंन्यासःकर्मणोनोपपद्यते
मोहात्तस्यपरित्यागस्तामसःपरिकीर्त्तितः ७ ॥ १० ॥

ह मेरानिश्चय और उत्तम मत है ६ नित्य विहित कर्मोंका त्याग नहीं संभव होतायदि अपनी अविवेकता से उनका त्याग करै तौ तामस त्याग कहलाता है १० ॥ ७ ॥

जोपुरुष कर्म को दुःख जानकर याशरीरकोपीडाकेभयसे त्यागकरैगासोराजसत्यागीहै इसलियेवहकर्मत्यागकाफल उसेनहीं मिलेगा ८ हे अर्जुनजोकर्मनित्यकरनेकेयोग्य है उसे जानकरफलऔर अभिमान त्यागकर आचरण करै सो सात्विक त्याग है और हमारीजा

दुःखमित्येवयत्कर्मकायक्लेशभयात्त्यजेत् सकृत्वाराज
सत्यागंनैवत्यागफलंलभेत् ८ कार्यमित्येवयत्कर्मनि
यतंक्रियतेर्जुन संगंत्यक्त्वाफलंचैवसत्यागःसात्विको
मतः ९ नद्वेष्ट्यकुशलंकर्मकुशलेनानुषज्जते त्यागी
सत्त्वसमाविष्टोमेधावीच्छिन्नसंशयः १० ॥ ८ ॥

न में उत्तमहै ९ जोपुरुषदुखदायक कर्मों से द्वेष नकरै औरसुखदायीकर्मोंमेंसुखआचरणनकरैतौ वहसात्विकत्यागी बलऔर बुद्धिको प्राप्त होता है और संशयसेभीनिवृत्तहोताहै १० ॥

यह देहधारीमनुष्य संपूर्णकर्मोंकोत्यागनहीं करसक्ता है इससे जो कर्मफलकी इच्छा छोडकर
कर्मकरैगासोत्यागीकहलावेगा ११ कर्मफलतीनप्रकारका है नष्ट इष्टऔर इष्ट अनिष्टमि
श्रितसोसकामपुरुषोंको एतीनोंकाफलशरीरत्यागनेपर मिलता है और संन्यासीअर्थात क

नहिदेहभृताशक्यंत्यक्तुंकर्माण्यशेषतः यस्तुकर्मफल-
त्यागीसत्यागीत्यभिधीयते११अनिष्टमिष्टंमिश्रंचत्रिविधं
कर्मणःफलम् भवत्यत्यागिनाप्रेत्यनतुसंन्यासिनां क्वचि
त् १२ पंचैतानिमहाबाहोकारणानिनिबोधमे सांख्ये
कृतान्तेप्रोक्तानिसिद्धयेसर्वकर्मणाम् १३ ॥ ७ ॥

र्मफलत्यागीइनतीनोंप्रकार के फलकोनहींप्राप्त होते १२ हेमहाबाहुअर्जुनसंपूर्णकर्मोंके
सिद्धिकेहेतुसांख्यऔरवेदान्तमैंपांचोकारणनिरूपण कियेहैं सो तुह्मारेहेतुकहताहूंसुनो १३

पहिलाअधिष्ठानअर्थात्शरीरऔरदूसराकर्त्ताअर्थात्अहंकारतीसरापृथक्पृथक्इंद्रियाँ
चौथीनानाप्रकारकीचेष्टाऔरपाँचवादैवकोकारणजानो १४ शरीरवाणीऔरमनकेभेद
सेकर्मतीनप्रकारकेहैं उन्हेंन्यायअथवा अन्यायसेमनुष्यजोप्रारंभकरताहैउसके

अधिष्ठानंतथाकर्त्ताकरणञ्चपृथग्विधम् विविधाश्च
पृथक्चेष्टादैवंचैवात्रपञ्चमम् १४ शरीरवाङ्मनोभि
र्यत्कर्मप्रारभतेनरः न्याय्यंवाविपरीतंवापञ्चैतेतस्यहे-
तवः १५ तत्रैवंसतिकर्त्तारमात्मानंकेवलन्तुयः पश्य
त्यकृतबुद्धित्वान्नसपश्यतिदुर्मतिः १६ ॥ ७ ॥

वहीपांचोकारणहैं १५ संपूर्णकर्मोंमेंपूर्वोक्तपांचोकारणहोतेहैंतिन्हेंनजानकरजोपुरु
षकेवलआत्माकोकर्त्ताजानताहैसोशास्त्रऔरगुरुउपदेशज्ञानसेरहितहोदृश्यवस्तुको

अविवेकतासे नहींदेखसक्ता १६

जिसपुरुषमैंअहंकारनहीं सोसर्वदर्शीपुरुषसंपूर्णप्राणियोंकोलोकदृष्टिसेपृथक्औरवि
वेकदृष्टिसेभिन्ननहींदेखतासोसबकोहननभीकरैतोनहींकियाजानोऔरनकिसीकर्मफ
लसेबद्धहोताहैक्यौंकिउस्कीपापशंकादूरहोगईहै १७ कर्मकीप्रेरणाज्ञानज्ञेयऔरज्ञाता

यस्यनाहंकृतोभावोबुद्धिर्यस्यनलिप्यते हत्वापिसइमा
न्लोकान्नहन्तिननिबध्यते१७ ज्ञानंज्ञेयंपरिज्ञातात्रि
विधाकर्मचोदना करणंकर्मकर्तेतित्रिविधःकर्मसंग्र
हः १८ ज्ञानंकर्मचकर्ताचत्रिधैवगुणभेदतः प्रोच्यते
गुणसंख्यानेयथावत्शृणुतान्यपि १९ ॥ ७ ॥

केभेदसेतीनप्रकारकीहैऔरउनकेगुणकर्मऔरकर्ता इनतीनोभेदोंसेकर्मसंग्रहकरनेवा
लेकारकभीतीनप्रकारकेहैं १८ ज्ञान कर्म और कर्ता एतीनो प्रत्येक सत्वादि गुणोंके
भेद से सांख्य शास्त्र में जैसा कहा है सो निरूपण करता हूँ सुनो १९ ॥ ७ ॥ १०५

जोपुरुषसंपूर्णस्थावरादिभूतोंमें निर्विकारपरमात्म तत्वएकरूपसेभिन्नभिन्नमेंअभेददे
खताहैउस्काज्ञानसात्विकहै २० जोज्ञानसंपूर्णभूतोंमेंसुखदुखआदिनानाप्रकारके स्वभावसे
भिन्नभिन्नदेखाईपड़ताहैसोराजसहै २१ जोज्ञानएकहीदेहादिकार्यमेंपरिपूर्णतासेईश्व

सर्वभूतेषुयेनैकंभावमव्ययमीक्षते अविभक्तंचभूतेषुतत्ज्ञानंवि
द्धिसात्विकम् २० पृथक्त्वेनतुयज्ज्ञानंनानाभावान्पृथग्विधान् वेत्तिस
र्वेषुभूतेषुतज्ज्ञानंविद्धिराजसम् २१ यत्तुकृत्स्नवदेकस्मिन्कार्येसक्त
महैतुकम् अतत्वार्थवदल्पंचतत्तामससमुदाहृतम् २२ नियतंसंगर
हितमरागद्वेषतःकृतम् अफलप्रेप्सुनाकर्मयत्तत्सात्विकमुच्यते २३

रकापरिच्छिन्नरूपसेबिनाप्रमाणऔरपरमार्थकेहैसोतामसऔरतुच्छहै २२ जोकर्मनित्यवि
धिविहितऔरकर्तृत्वाभिमानरहितऔरबिनारागद्वेषऔरफलप्राप्तीकीइच्छाबिनासेकियाजा
ताहैसोसात्विककर्मकहाताहै २३

हेअर्जुनजो बुद्धि धर्ममेंप्रवृत्तऔरअधर्मसेनिवृत्तविहितकार्यमेंअभयऔरनिंदितकर्ममें
भय करै और बंध मोक्षका कारणजाननेवाली हो सो सात्विकी है ३० हेअर्जुन पुरुष
जिस बुद्धि से धर्म अधर्म कर्तव्य और अकर्तव्यको संदेह से देखता है सो राजसी बुद्धि

प्रवृत्तिञ्चनिवृत्तिञ्चकार्याकार्येभयाभये बन्धंमोक्षं
चयोवेत्तिबुद्धिःसापार्थसात्विकी ३० ययाधर्ममधर्मंच
कार्याकार्येभयाभये अयथावत्प्रजानातिबुद्धिःसापा
र्थराजसी ३१ अधर्मंधर्ममितियामन्यतेतमसावृता
सर्वार्थान्विपरीतांश्चबुद्धिःसापार्थतामसी ३२॥ ॥

कहलाती है ३१ हेअर्जुन जिस बुद्धिसे धर्मको अधर्म और संपूर्ण पदार्थोंको अन्यथा भा
व से देखता है सो अज्ञानाच्छादित होनेसे तामसी बुद्धि कहलाती है ३२॥ ॥

हेपार्थजिसधारणाशक्तिसेपुरुषमनप्राणऔरइंद्रीकेक्रियाओंकोधारणकर्ताहैसोए
काग्रयुक्तहोनेसेवहधारणशक्तिसात्विकीकहलातीहै ३३ हेअर्जुनजिसधारणाशक्तिसेध
र्मकामादिकेसंबंधसेफलकीइच्छाकरताहैसोराजसीधारणाशक्तिकहलातीहै ३४ हे

धृत्याययाधारयतेमनःप्राणेन्द्रियक्रियाः योगेनाव्यभिचारिण्याधृतिः
सापार्थसात्विकी ३३ ययातुधर्मकामार्थान्धृत्याधारयतेर्जुन प्रसंगेन
फलाकांक्षीधृतिःसापार्थराजसी ३४ ययास्वप्नंभयंशोकंविषादंमदमे
वच नविमुंचतिदुर्मेधाधृतिःसापार्थतामसी ३५ सुखंत्विदानींत्रिः
विधंशृणुमेभरतर्षभ अभ्यासाद्रमतेयत्रदुखान्तंचनिगच्छति ३६॥

अर्जुनजिसधारणाशक्तिसेपुरुषस्वप्नभयशोकविषादऔरउन्मत्तताकोनहीत्यागकर्ता
सोधृतीतामसीकहलातीहै ३५ हेअर्जुनअबसुखकोसत्वादिगुणसेतीनप्रकारमेंनिरूपण
करताहूं सोसुनो जिस सुखमें अभ्यास सेचित्त रमताहै और दुखसेनिवृत्तभीहोताहै ३६॥

जोपहिलेविषवत्देखपड़ता और परिणामउस्काअमृततुल्यहोताहैसोसुखमनऔरबुद्धि केस्वच्छकारीहोनेसेसात्विककहलाताहै ३७ हेअर्जुनविषयऔरइंद्रीकेसंयोगसेसुखउत्पन्नहोताहै उसमेंजोपहिलेअमृततुल्यदेखाईदेकेअंतमेंविषकीनाईदुखदाई

यत्तदग्रेविषमिवपरिणामेऽमृतोपमम् तत्सुखंसात्विकंप्रो
क्तमात्मबुद्धिस्वभावजम् ३७ विषयेन्द्रियसंयोगाद्यत्तदग्रे
मृतोपमम् परिणामेविषमिवतत्सुखंराजसंस्मृतम् ३८
यदग्रेचानुबन्धेचसुखंमोहनमात्मनः निद्रालस्यप्रमा
दोत्थंतत्तामसमुदाहृतम् ३९ ॥ ० ॥ ० ॥

होताहै सोराजससुखकहलाताहै ३८ जोसुखपहिलेऔरअनुभवकेअनंतरमनमोहकहैऔरनिद्राआलस्यऔरअविवेकतासेउत्पन्नहोताहैसोतामससुखकहलाताहै ३९

प्रकृतिजन्यसत्वादितीनोगुणोंसेछुटीहुईवस्तुयाप्राणी पृथिवी स्वर्ग या देव लोक में है नहीं ४० हे अर्जुन ब्राह्मण क्षत्री वैश्य और शूद्र चारो वर्णों के सत्वादि स्वभावजन्य गुणोंसे यथा योग्य उनके पृथक् पृथक् विभाग किये गये हैं ४१ चित्त शांति बाह्य इंद्रियकानि

नतदस्तिपृथिव्यांवादिविदेवेषुवापुनः सत्वंप्रकृति
जैर्मुक्तंयदेभिःस्यात्त्रिभिर्गुणैः ४० ब्राह्मणक्षत्रियवि
शांशूद्राणांचपरंतप कर्म्माणिप्रविभक्तानिस्वभाव
प्रभवैर्गुणैः ४१ शमोदमस्तपःशौचंक्षान्तिरार्जवमे
वच ज्ञानंविज्ञानमास्तिक्यंब्रह्मकर्मस्वभावजम् ४२

ग्रह तप बाह्य आंतर शौच क्षमा निश्छलता शास्त्र जन्य ज्ञान अनुभव जन्य विज्ञान और परलोक विषयक नित्य व बुद्धी ये ब्राह्मण के स्वाभाव सिद्ध कर्म हैं ४२ ॥ ० ॥

शौर्य तेज धैर्य चातुर्य युद्धसे नभागना उदारता और प्रजापालनशक्ति ये सब क्षत्रीके स्वभावसि
द्ध कर्म हैं ४३ खेती बारीकरना गौचरावना और वाणिज्य करना यह वैश्यके स्वभावसिद्ध
कर्म हैं और शूद्रका ब्राह्मणआदि तीनो वर्णों की सेवा करना स्वभाव सिद्ध कर्म है ४४

शौर्यंतेजोधृतिर्दाक्ष्यंयुद्धेचाप्यपलायनम् दानमीश्व
रभावश्चक्षात्रंकर्मस्वभावजम् ४३ कृषिगोरक्षवाणि
ज्यंवैश्यकर्मस्वभावजम् परिचर्यात्मकंकर्मशूद्रस्या
पिस्वभावजम् ४४ स्वेस्वेकर्मण्यभिरतःसंसिद्धिंलभते
नरः स्वकर्मनिरतःसिद्धिंयथाविंदन्तितच्छृणु ४५ ॥

अपने अपने कर्म में मनुष्य आसक्त होकर उस्की सिद्धी को प्राप्त होता है अब स्वक
र्मयुक्त पुरुष जैसे तत्व ज्ञान को प्राप्त होता है सो कहता हूँ सुनौ ४५ ॥ ७ ॥

जिस परमेश्वर से संपूर्ण प्राणियौं की प्रवृत्ति होती है और जिससे संपूर्ण जगत व्याप्त है उस पर
मेश्वरको अपने विहित कर्म से आराधना करके मनुष्य सिद्धीको प्राप्त होता है ४६ यथा
योग्य अनुष्ठान कियेहुए पर धर्म से अपना धर्म न्यून आचरण भी श्रेष्ठ है क्यौं कि अपने

यतःप्रवृत्तिर्भूतानांयेनसर्वमिदंततम् स्वकर्मणातम
भ्यर्च्यसिद्धिंविन्दन्तिमानवाः ४६ श्रेयान्स्वधर्मोविगुणः
परधर्मात्स्वनुष्ठितात् स्वभावनियतंकर्मकुर्वन्नाप्नोति
किल्बिषम् ४७ सहजंकर्मकौन्तेयसदोषमपिनत्यजेत्
सर्वारंभाहिदोषेणधूमेनाग्निरिवावृताः ४८ ॥ ० ॥

अपने स्वभाव सिद्ध कर्म को आग्रह से आचरण करते हुए मनुष्य दुखको नही प्राप्त होता
४७ हे अर्जुन अपना स्वभाव विहित कर्म यदि दोष युक्त भी होतो त्याग करना उस्का
उचित नहीं क्यौंकि संपूर्ण कर्मौंका आरंभ दोषसे युक्त है जैसे धूम्रसे अग्नि आवृत है ४८

जोपुरुषअसंगबुद्धिऔरअहंकारजितआत्मा किसी विषय की इच्छा नकरके व्यवहार
करता है वह संन्यास से श्रेष्ठ संपूर्ण कर्म त्याग कर ब्रह्मात्म भाव रूप सिद्धि को प्राप्त हो
ताहै ४९ हेअर्जुनजिसप्रकार से पुरुष निष्कर्म सिद्धिको प्राप्त होके ब्रह्म कोप्राप्त

असक्तबुद्धिःसर्वत्रजितात्माविगतःस्पृहः नैष्कर्म्यसि
द्धिंपरमांसंन्यासेनाधिगच्छति ४९ सिद्धिंप्राप्तोयथा॰
ब्रह्मतथाप्नोतिनिबोधमे समासेनैवकौन्तेयनिष्ठाज्ञा
नस्ययापरा ५० बुद्ध्याविशुद्धयायुक्तोधृत्यात्मानंनिय
म्यच शब्दादीन्विषयांस्त्यक्त्वारागद्वेषौव्युदस्यच ५१

होताहैसोप्रकारसंक्षेपमे कहताहूँ सुनोक्यौँ किनिष्कर्मसिद्धिज्ञानकाहेतुहै ५० सात्विकबुद्धि
से युक्तहोकरधारणाशक्तिसेउस्कोनिश्चलकरशब्दादिकविषयऔररागद्वेषकोत्यागकरै ५१

एकांतदेशमैँनिवासकरकेयुक्ताहारहोवाणीशरीर और मननियतहोकरवैरागसेयुक्त हो
ध्यानयोगमेँ तत्परहोवे ५२ अहंकारबलदर्पकामक्रोध और परिग्रहको त्याग निर्ममता
हो शांतरहै तो ब्रह्मभावको प्राप्त होनेके योग्य होताहै ५३ ब्रह्मभावकोप्राप्तभयाहुवा पु

विविक्तसेवीलघ्वाशीयतवाक्कायमानसः ध्यानयोग
परोनित्यंवैराग्यंसमुपाश्रितः ५२ अहंकारंबलंदर्प
कामंक्रोधंपरिग्रहम् विमुच्यनिर्ममःशान्तोब्रह्मभू॰
यायकल्पते ५३ ब्रह्मभूतःप्रसन्नात्मानशोचतिनकां
क्षति समःसर्वेषुभूतेषुमद्भक्तिंलभतेप्रियाम् ५४॥ ॥

रुष मन संतुष्ट होकर नतोशोककरता और न किसी वस्तु की इच्छा और सपूर्ण॰
भूतौँ को समान देखते हुए मेरी उत्तम भक्तिको प्राप्त होता है ५४ ॥ ७ ॥

टी॰ अचलभक्ति द्वारा जोमुझकोयथार्थरूपसे सच्चिदानंदश्रौर सर्वव्यापीजानताहै इसजाननेके
१११ अनंतर ऐसे तत्व ज्ञान से परमानंद रूप होता है ५५ नित्यनैमित्तिक सब कर्मों को सदाक
रते हुए केवल मुझी को आश्रयजान्ने वाला पुरुष मेरे अनुग्रह से अनादि शाश्वत प

भक्त्यामामभिजानातियावान्यश्चास्मितत्वतः ततोमांत
त्वतोज्ञात्वाविशतेतदनन्तरम् ५५ सर्वकर्माण्यपिसदा
कुर्वाणोमद्व्यपाश्रयः मत्प्रसादादवाप्नोतिशाश्वतंपदम
व्ययम् ५६ चेतसासर्वकर्माणिमयिसंन्यस्यमत्परः बु
द्धियोगमुपाश्रित्यमच्चित्तःसततंभव ५७ ॥ ७ ॥

रम पद को प्राप्त होता है ५६ मुझीको परम पुरुषार्थ समझ के संपूर्ण को मन से मुझमें
अर्पण कर एकाग्र बुद्धि से युक्त हो सर्वदा मेरे ध्यान में तत्पर रहो ५७ ॥ ७ ॥ १११

तुममेरे ध्यानमेंयुक्तहोतो मेरे अनुग्रहसेसंसारसंबंधीदुःखोंसे तरजावोगे यदिअहंकारसे
मेरी बात नसुनोगे तोअपनेपुरुषार्थसेभ्रष्टहोजावोगे ५८ मेराकहना नमानकर केवलअप
निअहंकारकेवशहोयुद्धकरोगेतोतुम्हारायहयुद्धकाप्रयत्नव्यर्थहोगातथापिरजोगुणकेबसहो स्व

मच्चित्तःसर्वदुर्गाणिमत्प्रसादात्तरिष्यसि अथचेत्त्वमहं
कारान्नश्रोष्यसिविनंक्ष्यसि ५८ यदहंकारमाश्रित्यनः
योत्स्यइतिमन्यसे मिथ्यैषव्यवसायस्तेप्रकृतिस्त्वांनि
योक्ष्यसि ५९ स्वभावजेनकौन्तेयनिबद्धःस्वेनकर्मणा
कर्तुंनेच्छसियन्मोहात्करिष्यस्यवशोपितत् ६०॥ ॥

भाव तुम्हारा तुम्हे प्रवृत्त करैहीगा ५९ हेअर्जुनस्वभावसिद्ध अपने शौर्यादिकर्मसेनिबद्धहो
केजिसे मोह से करने की इच्छा नहीं करतेतिसे परवशहोके अवश्य करोगे ६० ॥ ० ॥

हे अर्जुन परमेश्वर अपनी माया से संपूर्ण शरीरधारी भूतों को भ्रमाता हुवा उनके हृदय में निवास करता है ६१ हे भारत अर्जुन सब प्रकार से उसी परमेश्वर के शरणागत हो उसीके अनुग्रह से उत्कृष्ट शांति और अविनाशी मोक्ष पद को प्राप्त होगे ६२ इसप्रका

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति भ्रामयन्सर्वभूतानि यंत्रारूढानि मायया ६१ तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम् ६२ इति ते ज्ञानमाख्यातं गुह्याद्गुह्यतरं मया विमृश्यैतदशेषेण यथेच्छसि तथा कुरु ६३॥ ७ ॥

र से गोपनीय से गोपनीय ज्ञान मैंने तुमसे कहा उस संपूर्ण पूर्वोक्त ज्ञान को विचार कर के जैसी तुह्मारी इच्छा हो वैसा करो ६३ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ११२

संपूर्ण गोपनीय से गोपनीय मेरा उत्कृष्ट वचन फिर सुनो क्यौं कि तुम मेरे अत्यंत इष्ट हो इस लिये तुम पर विश्वास करके हित उपदेश करता हूँ ६४ मुझमें मन लगाके मेरी भक्ति मेरा यज्ञ और नमस्कार आदि मुझी को करो क्यौं कि मुझीमें प्राप्त होगे यह मैं प्रतिज्ञाक

सर्वगुह्यतमं भूयः शृणु मे परमं वचः इष्टोसि मे दृढमिति ततो वक्ष्यामि ते हितम् ६४ मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोसि मे॥ ६५ सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच ६६ ॥ ० ॥ ० ॥

रता हूँ ६५ नाना प्रकार के कार्यों को त्याग कर केवल मेरे शरणागत हो मैं संपूर्ण पापों से छोडाउंगा इस लिये कर्म त्याग जनित दोष से शोक न करो ६६ ॥ ७ ॥

यहगीताशास्त्रतुमउसमनुष्यकोनदेना जो अपने धर्म का अनुष्ठान और मेरी भक्ति और गुरूकी सेवा नहीं करता और मुरूको मनुष्य जान कर निंदा करता है ६७ जोपुरुष यह रहस्य गीताशास्त्र मेरे भक्तों को उपदेश करता है सो मेरी उत्कृष्ट भक्ती करते

इदन्तेनातपस्कायनाभक्तायकदाचन नचाशुश्रूषवे
वाच्यंनचमांयोभ्यसूयति ६७ यइदंपरमंगुह्यंमद्भक्ते
ष्वभिधास्यति भक्तिंमयिपरांकृत्वामामेवैष्यत्यसंश
यः ६८ नचतस्मान्मनुष्येषुकश्चिन्मेप्रियकृत्तमः॥
भवितानचमेतस्मादन्यःप्रियतरोभुवि ६९॥ ० ॥

हुए संशय से मुक्त हो मुरू में प्राप्त होता है ६८ इस मृत्यु लोक में उस से अत्यंत प्रिय कोई भी मुरूको न है न भया न होगा ६९ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥ ११३

जोपुरुषयहहमारातुह्माराधर्मयुक्तसंवादपढेगा सोज्ञानयज्ञ से आराधनकरकेमुरूकोसंतुष्ट करेगायहमुरूकोनिश्चयहै ७० जोपुरुषश्रद्धायुक्तऔरपरनिंदारहितहोकरइसगीतातत्व कोश्रवणकरताहैसो भी संसारमें मुक्तहोके उसशुभलोकमेंप्राप्तहोगा जिसमेंपुण्यकर्मक

अध्येष्यतेचयइमंधर्म्यंसंवादमावयोः ज्ञानयज्ञेनतेना
हमिष्टस्यामितिमेमतिः ७० श्रद्धावाननसूयश्चशृणुया
दपियोनरः सोपिमुक्तःशुभाँल्लोकान्प्राप्नुयात्पुण्यकर्म
णाम् ७१ कच्चिदेतच्छ्रुतंपार्थत्वयैकाग्रेणचेतसा क
च्चिदज्ञानसंमोहःप्रणष्टस्तेधनंजय ७२॥ ० ॥

रनेवालेजातेहैं ७१ हेअर्जुनयहजोगीतासारतुमनेएकाग्रचित्तसेश्रवणकियाइससेकुछ कुछफलमिलाया नहीं औरअज्ञानसेउत्पन्न भयाहुवामोहतुह्मारानष्टभयाया नहीं ७२ ॥

अर्जुन उत्तर देते हैं हे अच्युत श्रीकृष्ण तुम्हारे अनुग्रह से मेरा मोह नष्ट भया और मुझको स्व
रूप की स्मृती लाभ हुई और संदेह से निवृत्त होकर स्थिर हुवा अब जो कहो सो करूं
गा ७३ संजय धृतराष्ट्र से कहते हैं श्रीकृष्ण और अर्जुन दोनों का अति अद्भुत और

अर्जुन उवाच नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्यु
त स्थितोस्मि गतसंदेहः करिष्ये वचनं तव ७३ संजय उ
वाच इत्यहं वासुदेवस्य पार्थस्य च महात्मनः संवादमि
मम श्रौषमद्भुतं रोमहर्षणम् ७४ व्यासप्रसादाच्छ्रुतवा
नेतद्गुह्यमहं परम् योगं योगेश्वरात्कृष्णात्साक्षात्कथयतः

रोम हर्षण यह संवाद मैने सुना ७४ व्यासजी के प्रसाद से मैने इस परम गोपनीय
गीता योग को जो श्रीकृष्ण योगेश्वर ने अपने मुख से कहा सो सुना ७५॥ ॥